दिव्य आदेश

(भाग सात)

रामचन्द्र

श्री रामचन्द्र मिशन
शाहजहाँपुर, उ०प्र० (भारत)

दिव्य आदेश

(भाग सात)

इरशादात

हज़रत क़िब्ला पीर दस्तगीर

श्रीमान रामचन्द्र जी साहब

फ़तहगढ़ी, ज़िला फ़र्रुख़ाबाद

मन इब्तदाई 1 अप्रैल 1946 ई०

लग़ायत 31 जनवरी, 1948 ई०

प्रथम संस्करण - २००३, ११०० प्रतियाँ

श्री रामचन्द्र मिशन

मूल्यः रू० **70/-**

प्रकाशक :
श्री रामचन्द्र मिशन,
प्रकाशन विभाग
शाहजहाँपुर, उ०प्र० (भारत)

मुद्रक :खन्ना आर्ट प्रिन्टर्स,
WZ-190, शादीखामपुर,
वेस्ट पटेल नगर,
नई दिल्ली - 110 008.

प्रस्तावना

जैसा कि आप सब पूज्य बाबूजी महाराज की शक्तियों के बारे में जानते हैं। उनकी जीवन शैली इतनी स्वच्छ और पवित्र थी जिसका प्रभाव उनके साहित्य पर स्पष्ट दिखाई देता है। उन्होंने विश्व बन्धुत्व को फैलाने का प्रयास किया और कहा करते थे कि भाईचारे की निधि अमूल्य है और अच्छी प्रवृत्तियों की जागृती से ईश्वर प्राप्ति संभव है। जब भी वे कुछ कहते थे, या लिखते थे तो हमेशा दूरदर्शता की एक झलक दिखाई देती थी। मगर हम लोगों को कभी भी समझ में न आया कि हकीकत में वो हमें क्या बताना चाहते थे। अगर हमें इतना ही ज्ञान हो पाता, तो हम लोग बाबूजी के बनाये गये उसूलों को अपना कर और उन पर चलकर हम सब अपना जीवन सफल बना लेते।

मगर ऐसा सब कुछ संभव नहीं हो पाया। कुछ लोग ऐसे भी सामने आये कि अपने में ही बाबूजी महाराज को देखने लगे और अपने को ही बाबूजी महाराज समझ बैठे। इसी भ्रम में आज भी वे रह रहे हैं और उनको शायद ही सुधरने का मौका मिले। उन्हीं लोगों की वजह से लोगों में कई भ्रांतियाँ भी फैली हैं। हमारा ख़्याल है कि इस २१वीं सदी की दौर में अगर हम कुछ बाबूजी महाराज के **दिव्य आदेश** पुस्तकों से ज्ञान प्राप्त करें और उन पर अमल करें तो, ये भ्रांतियाँ कुछ ख़त्म हो सकती हैं।

दिव्य आदेश, भाग-७ में १९४७-४८ में जो होने वाला था, उनके बारे में दर्शाया गया था। यह diary में सब घटनायें होने से पहले लिखी गई जिसका result बाद में लोगों के सामने आया, जैसा महात्मा गांधी के निधन, हिन्दुस्तान-पाकिस्तान का विभाजन (partition),

हैदराबाद प्रान्त (state) का खत्म होना, और अपने मिशन के Emblem के बारे में बहुत विस्तार में बाबूजी महाराज ने बताया और अपने '**सहज मार्ग**' संस्था की स्थापना कर के एक ऐसा अद्भुत मार्ग हम सब को दर्शाया, जो हर इन्सान के लिये आगे आने वाली जिन्दगी में एक महत्व पूर्ण अपवश्यकता बन जायेगा।

ये पूज्य बाबूजी द्वारा लिखित दिव्य आदेश (diaries) उनके जीवन काल के बाद इस लिये publish किये जा रहे हैं, जिस से कि आगे आनेवाली पीढ़ियों को इनके व्यक्तित्व का पता चल सके, और उनके बनाये गये उद्देश्यों को अभ्यासी अमल कर सकें, और कम से कम आगे आने वाली पीढ़ियाँ (generation) उनको अमल करके और एक इन्सानियत के रूप में सामने आ सके।

इस दुनिया में हलचल मची हुई है और हर एक अपने आप को ही संभालने में लगा है। इन्सानियत की कदर इस दुनिया में उठती सी दिखाई दे रही है। अगर हम लोग बाबूजी महाराज के दिव्य आदेश पुस्तकों से प्रेरणा लें और हमारे आने वाली पीढ़ियाँ (generation) उनका अमल करें तो शायद सहज मार्ग ही उनकी जीवन का लक्ष बन सकेगा जिससे इन्सान में इन्सानियत पैदा हो सके, और हर इन्सान जात पात और धर्म का महत्ता न दे कर इन्सानी रूप का महत्ता दे सकें।

हमारा सुझाव यह है कि लोग दिव्य आदेश को एक किताब की तरह न पढ़कर, बाबूजी की शक्तियों को ध्यान में रख कर उनकी अच्छाईयों को अपने दिल में उतारें, और उनको अपना कर चलने लगें तो हर अभ्यासी के जीवन लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक होगी।

उमेश चन्द्र
अध्यक्ष

दिव्य आदेश - भाग - 7

1-4-1946 8.25 am

S.V. (Swami Vivekananda): My Lord has today been released from his sufferings and agony. He has now left a few disciples. His Guru too must be relieved. Do not talk now of his (हज़रत क़िब्ला)former disciples. They have no concern with him. Let them meet their own fate. They are like the human beings to you now. This is the sorrowful tale of your Satsang. All my dictation this day is about the relations with the Lord to be broken by you (RC) this time. I assure you that a good number of men you have lost in the result of their misgivings.

वक़्त 7.55 pm

श्रीकृष्ण जी महाराज: कोशिश इस बात की होना चाहिये कि सरल हालत पैदा हो। ऐसी कि एक ही चीज़ दिखाई पड़े। सिवाये इस चीज़ के और दूसरी चीज़ निगाह के सामने न आवे। सादगी क़ुदरत से मिल जावे। हर काम ऐसा मालूम हो गोया ख़ुद ब ख़ुद हो रहा है। मशीन घूम रही है। ज़ोर बिलकुल महसूस नहीं होता। लोग इस रम्ज़ को नहीं समझे। **गीता** की कितनी ही व्याख्याएं हो गईं। असलियत पर कोई न पहुंचा। निहायत हल्की बात है जो **गीता** में

बयान की गई है। सैंकड़ों commentary लिख गईं। असलियत किसी न नहीं बयान की। बल्कि ग़लत समझे। भूतों का पूजना जायज़ समझा। पीपल को सीस नवाने लगे। मगर शेर के मुँह में कोई न गया। उस को दुश्मन ही समझा। क्या यह बात अक़्ल के ख़िलाफ़ न थी। पण्डितों ने पूजा के साथ-साथ दक्षिणा भी शुरु कर दी। समझाने लगे कि ईशर (ईश्वर) हर चीज़ में मौजूद है। इसलिये पूजना चाहिये। ढकोसले बाज़ी शुरु हो गई। परनाले पुजने लगे। हवाला यह ही दिया गया कि **गीता** में लेख है। भूतों का पूजना गोया मेरा पूजना है। यह बात आसान थी, लोग मानने लगे। अहमक़ों को क्या कहूँ जिन्होंने यह तल्क़ीन की। और सब कुछ बिगाड़ दिया। ख़याल की इतनी धारें पूजा की शक्ल में फैला दी गईं कि सिमट न सकीं।

2-4-46

हज़रत क़िब्लाः बाबू **मदन मोहन लाल**। मैं तो आज़ाद हो ही गया। आज क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०) को आज़ाद कर दिया। मुमकिन है इस की निस्बत और बुज़ुर्गों के भी एहकाम सादर हों। अब तुम्हारा काम क्या है। जो लोग चार, छह, आठ, नौ की तादाद में रह गये हैं, रुहानियत की ऊँची शिखर पर पहुँचने की कोशिश करें। लोगों को तल्क़ीन करें। अपने आप को बनायें। वाअज़ करें और ब्रह्म विद्या फैलायें। Highest Ideal के notes ऊँचे-ऊँचे बुज़ुर्गों के बराबर आ रहे हैं। कोशिश की जावे कि यही हालत पैदा होय। हज़ारों जन्म गुज़र चुके हैं, अब नहीं गुज़रना चाहिये। मोक्ष कोई मुश्किल चीज़ नहीं। ख़याल के

लगाव की ज़रूरत है। अज़ीज़ **रामचन्द्र** से पूछो कितनी आसानी से उस ने अपना काम बना लिया। तरीक़े जो उस ने किये हैं, अछूते हैं और इसी की ईजादें जो क़दम क़दम पर करता रहा है, हैं। यह सब तरीक़े नोट कर लिये जावें और लोगों को बताये जावें। बहुत आसान हैं। मुड़ा भी तो ख़याल से ग़ाफ़िल न हुवा। सोहबत के वक़्त याद से ग़ाफ़िल न रहा। और यह भी ख़याल न रहा कि कौन कर रहा है। हज़ को ऐसा महसूस किया कि उस से समझ का ताल्लुक़ न था। बात क्या थी, सब चीज़ें ख़िंच कर एक में हो गई थीं। **बाबू मदन मोहन लालः** पाये के बुज़ुर्ग में यह बात अक्सर मिलेगी। मुझे इस वक़्त इस की आसान तरकीबों का ख़याल आ गया। उछल पड़ा। यह तरकीबें कहीं नहीं मिलेंगी। अब यह बात कि आया इस को याद भी रहें या ना रहें। ख़ैर । जो कुछ भी सही, लिख ली जावें, लोगों के फ़ायदे के लिये। मैं इस को हुक्म दे दूंगा कि जिस जगह से इस की तरक़्क़ी शुरु हुई है (वहीं) फिर वापस आवे और उसी तरीक़े से तरक़्क़ी करता हुवा आगे बढ़ता चले। इस दौरान में जो वारदात पेश आवें, लिखता चले। मैं समझता हूँ कि मख़लूक़े ख़ुदा के लिये यह बहुत बड़ी sacrifice होगी। और मुम्किन है कि कुछ दिनों मेरा काम बन्द रहे। यह मेरी दुआ है कि वो असर जो इस में क़ायम है, वो हवा जो इस में मौजूद है, उस में कमी न होगी। उस वक़्त तक जब तक कि कोई ख़ास हुक्म सादर न हो जावे। और वो हालत यह हो सकती है जो इन्तिहाई पायाबी की होती है। अगर उस हालत में लाना होगा तो अलबत्ता कुछ दिनों के लिये यह बात नहीं आयेगी।

वक़्त 7 1/2 बजे शाम

श्री कृष्ण जी महाराजः गीता का सारः जंग का मैदान था। अर्जुन अपने अज़ीज़ व अक़ारब को देख कर घबरा रहा था कि उन को कैसे मारूँ। अचम्भे में था। दुनिया की सल्तनत मिल भी गई तो क्या। ख़ानदान को नष्ट और तबाह कर के पाई तो क्या। ग़र्ज़ेकि इसी क़िस्म के ख़्यालात गूंजने लगे। ख़्यालात ने उस में कायरता पैदा कर दी। दिल ठंडा होने लगा। छत्री (क्षत्री) धर्म से हट रहा था। बातों से समझाया। सबक़ सिखाये। साथ ही साथ अपनी will से रूहानी मन्ज़िलें योग द्वारा खोलता गया, यानी तवज्जह भी देता गया। व्याख्या बेकार है, जब तक ख़्याली ताक़त उस के साथ न हो। जुम्ला रम्ज़ उस के दिल में उतार दिये गये और वो हालत पैदा कर दी गई जिस को समासम कहना चाहिये। जहाँ पर दुख और सुख यकसाँ हैं और मौत और ज़िन्दगी एक सी है। यह **गीता** थी जो उस को बतायी गयी। क्या महात्मा **रामचन्द्र** जी फ़तेहगढ़ की ऐसी तालीम न थी। सिर्फ़ बातों ही से अन्दरूनी परदे चाक कर सकते थे। एक बात का ज़ोर ज़रूर दिया गया कि जो धर्म जिस के लिये मुक़र्रर है, करना चाहिये। अस्ल में यह एक नुक़्ता है जिस का फैलाव किताबी सूरत में कर दिया गया। वही बात जो अभी कह चुका हूँ।

3-4-46 9.20 am

श्री कृष्ण जी महाराजः एक अजीब बात बताता हूँ। मैदाने जंग में **राधा** मेरे साथ थीं। निगाह नहीं थी कि उन को कोई पहचान सकता। अब भी यही बात है। मुकम्मल गुरु का यही करिश्मा है। दो

होते हुये एक मालूम होता है। **राधा** ने किसी वक़्त मेरा साथ नहीं छोड़ा और न मैं उन के ख़याल से ग़ाफ़िल रहा। दोनों एक हो रहे थे। मानी यह हुये कि हर जगह मैं उन के साथ था और वो मेरे। यह एक रूहानी मन्ज़िल है जिस के देखने के लिये आंखें चाहिये और समझने के लिये दिमाग़। किताबी शक्लें जिस ने दिमाग़ में भर लीं, इस रम्ज़ को नहीं समझ सकता। यह और चीज़ है और वो और। ज्ञानी पण्डित कहलाने लगे और पण्डित ज्ञानी। दोनों में से किसी ने असल तत्त (तत्व) को नहीं जाना।

गीता में मैं ने सिर्फ़ छह श्लोक कहे हैं, सातवां कहने की गुँजायश न थी। वो अमली तौर पर दिखा दिया गया। हर श्लोक में एक हालत थी।

6-4-46 8.30 am

हज़रत क़िब्लाः अज़ीज़ **रामचन्द्र** जिस वक़्त ऋषि **सीलोन** (Ceylon) को मक़ाम **अव्यक्त गति** से तवज्जह दे रहा था वो ईशरी काम में मसरूफ़ था, महसूस न कर सका। जब इत्तिला दी गई, तब मराक़िब हुवा और ध्यान में बैठ गया। यह हालत उस को इस क़दर पसंद आई कि जिस मक़ाम की यह हालत है उस को खोलने की इल्तिजा की। अभी चूंकि हुक्म क़ुदरत नहीं था, इस लिये हुवा, कि न खोलें। **ऋषि सीलोन** इस क़दर शैदाई और दिलदादः इस हालत का हुवा कि बर्त (व्रत) रख लिया कि जब तक आप इस को खोल न देंगे, दाना पानी न करूँगा। उसने उसी वक़्त बर्त (व्रत)

रख लिया। क़ुदरत के हुक्म का इन्तज़ार है। वो शख़्स अपने गुरु की तरफ़ मुख़ातिब हुवा। हुक्म मिला और इजाज़त भी दी गई। कि दुनिया में सिर्फ़ एक हस्ती उनकी (RC) है और उन्हीं से मुख़ातिब होने पर काम चलेगा।

ऋषि सीलोन के गुरु महाराजः यह मेरा शिष्य जो इस वक़्त **लंका** में है, अपने वक़्त का एक ही बुज़ुर्ग है। उम्र ज़्यादा है। मगर उस को यह ख़ब्र नहीं (मालिक वो आप को ज़रूर समझता था) कि ऐसे जौहर आप में पोशीदा हैं। **जुनूबी हिन्द** के दौरे में उस ने आप को बहुत ताड़ा। फिर भी कुछ ताड़ न सका। आप को ईशर ने ऐसा बनाया है कि एक निगाह में इस से ज़्यादा तृप्ति हो सकती है। इख़्तियार नहीं जो आप को हुक्म दूं, प्रार्थना ज़रूर है। इस लिहाज़ से कि आप इन कामों के लिये भी आये हैं।

हज़रत क़िब्लाः मुझ को शर्म आती है कि इतना बड़ा ऋषि इस तौर पर कहे। चुनाँचे मैं हुक्म देता हूँ कि इस शख़्स (ऋषि लंका)को चोटी पर खींच दो। मगर यह काम एक दम न करना। अपनी तालीम में ले लो। इस को इत्तिला दे दो कि मुझ को अपने पीर का हुक्म मिल चुका है। **बर्त** (व्रत) की अब ज़रूरत नहीं। सब्र की ज़रूर ज़रूरत है। यह अल्फ़ाज़ कि मुझ को मेरे पीर ने हुक्म दे दिया है, बराहेरास्त उस को पहुंचा दिये गये। चुनाँचे उस ने बर्त छोड़ दिया जैसा कि हुक्म था। ऋषि लंका के गुरु को मैं इस लिहाज़ से छोड़ता हूँ कि उन्हों ने एक क़ाबिल शिष्य ऐसा बना दिया कि तमाम दुनिया का काम चल रहा है। वरना मैं तुम्हीं को उसके सलब करने का हुक्म देता और नीचे उतार

देता। बात यह थी कि क़ुदरत से हुक्म हो चुका है कि **अज़ीज़ रामचन्द्र** की आज़मायश न की जावे। उन्होंने ख़िलाफ़े हुक्म क़ुदरत सख़्त जाँच क्यों की। यह मेरा making था कि तुम सही उतर गये। आज़मायश यह थी कि इन (RC) से कहा गया कि मुझ को तवज्जह दो और यह ख़याल था कि देखें यह मुझ को उस सभ्यता के साथ तवज्जह देते हैं जैसे मोक्ष आत्माओं को दी जा सकती है। हवास उड़ गये यह देख कर कि इस ने सभ्यता ही का लिहाज़ नहीं रखा बल्कि इस तरह पर तवज्जह दी, जैसे बुज़ुर्ग रूहें अपनी ख़ालिस सूरत में दिया करती हैं। जहां पर छुटाई बड़ाई का ख़याल नहीं होता। इस क़िस्म की तवज्जह कोई देना नहीं जानता। जब ऐसा था तो इस में इस की आज़मायश क्यों की गई। जानते हुये कि क़ुदरत का हुक्म हो चुका है कि आयन्दा कोई आज़मायश न होगी।

S.V.: Rishi of Ceylon is far advanced in spirituality, but far below the point (यानी **क़ुद्स** या **अव्यक्त गति**।)

7-4-46

हज़रत क़िब्ला: रूहानियत को लोगों ने मज़ाक़ समझ रखा है। समझते हैं कि यह हिस्सा तो पीर का है। अपने ताल्लुक़ सिर्फ़ यह ही काम है कि दुनियादारी के मामलात में कोशाँ रहें। वक़्त पर मराक़बा किया और चले आये। जन्म जन्मान्तर गुज़र चुके हैं, इसी आरुद्ध(रौध) में रहे। यह किसी से न हुवा कि इस को (रुहानियत को) फ़ौक़ियत देते। हर काम में इसी को मुक़द्दम समझते। सब (ख़यालात

की) धारों को समेट कर इसी तरफ़ कर देते। यह हाल है जो अवाम का है। तरकीबें पूछते। गुत्थियाँ सुलझाते और काम करते। दुनियादारी के काम इस लिये आसान मालूम होते हैं कि ज़्यादा हिस्सा वक़्त का उस में सर्फ़ होता है। अगर इस में (रुहानियत में)भी इतना हिस्सा सर्फ़ होने लगे तो यह भी आसान मालूम होने लगे। लुत्फ़ क्यों नहीं आता। मुहब्बत की कमी। हर बात के लिये और हर ख़राबी दूर करने के लिये मराक़बा हो सकता है। यह ही एक चीज़ है जो मन्ज़िल तक पहुँचा देती है।

आसान मराक़बा यह है कि उस की याद से किसी दम ग़ाफ़िल न हो। और सब से आसान नुस्ख़ा भी यह ही है। मगर साथ ही ऐसे तरीक़े भी करता चले जो इसमें मददगार हों। वरना इश्क़ सादिक़ है तो यही बातें अज़ ख़ुद पैदा होने लगेंगी। और ज़्यादातर वक़्त इसी में लगाया जाये यानी ख़याल में।

यह वो मुजर्रिब नुस्ख़ा है जो कभी ख़ता नहीं करता। दुनियादारी में ज़्यादातर मुहब्बत हज़्ज़े - नफ़्स के लिये की जाती है और यह बात आसान यूँ मालूम होती है कि तबियतें उस तरफ़ झुकी हुई हैं। यही बात अगर उस तरफ़ mould कर दी जावे तो सब कुछ हो सकता है। और यहाँ पर उस सरूर लाइन्तहा (लामितनाही) के लिये जो हर शख़्स को मयस्सर नहीं, मुहब्बत की जाये तो वही बात हो जाती है। इस्तेमाल बदला हुवा है। वहाँ पर उन धारों के ज़ेरे-असर है जिन की फुरना इन्द्रियों से होती रहती है और यहाँ पर उस ताक़त में घुसते हैं जिस के ख़राब इस्तेमाल से उस में ज़ोर पैदा हो गया है। (Attempt एक ही

चीज़ को करना है।) एक में बावलापन है और दूसरे में शराफ़ते इन्सानी। और यह फ़र्ज़ के अन्दर है। दूसरी चीज़ का इस्तेमाल फ़र्ज़ के बाहर बे-अदबी है। अगर इस को (रूहानियत को) ठीक कर ले तो यह चीज़ें भी क़ाबू में आ जाती हैं। नतीजा यह निकला कि **कामयाबी का राज़ सिर्फ़ मुहब्बत है**। सालिक का साथ इस हद तक देती है कि **धुर पद** (Ultimate Stage) पर पहुंचा कर ख़ुद आलोप और गुम हो जाती है।

मुहब्बत क्या है? ज़ात का साया और इन्सान का अस्ल जौहर। कितनी क़रीब है। रोशनी में आ जाने से साया गुम हो जाता है। मुहब्बत के समझने के लिये तीन दरजे क़ायम कर लो।

पहलाः जो आम तौर पर है। मिसाल की ज़रूरत नहीं। यानी हर दुनियादारी की चीज़ों में घुसे होते हैं और ख़्वामख़ाह बेमतलब। बेग़रज़। इतना लिप्त होना कि मामूली - मामूली बातों पर रोना आ रहा है। ग़म खाये जाता है। और इज़ाफ़ा हुवा तो हालत ठहर जाती है।

दूसरा स्टेज इस से ऊपर यानी इस से बहुत ऊपर, यानी कि फ़िक्र तो है, काम भी करते हैं। तकलीफ़ भी होती है। मगर फ़र्क़ इतना है कि रोना नहीं आता।

तीसरा स्टेजः अब और आगे बढ़िये, और ऊँचा जाईये जहां पर सिर्फ़ यह ही ख़याल रहता है कि काम किये जाओ। मेहनत करो

और फिर भी नतीजा मतलूब पैदा न हो तो समझ लो कि हुक्म ईशर का नहीं है। यहाँ पर पहुँच कर ख़यालात ईशरी शुरु हो जाते हैं और वो लगाव की इब्तिदा हो जाती है जिस से आगे काम लेना है। इसी को फेरते चले जाओ और उस से (दुनियादारी) हटते चले जाओ। इसका इन्तहाई तौर पर और ज़रूरत भर हट जाना, मुहब्बत के ख़ुलूस का आग़ाज़ है। फेरना लफ़्ज़ मायनीदार है। मिसाल है; जितना घोड़ा फेरा जाता है उतनी ही उस में आब बढ़ती है और काम का बन जाता है। यह मुख़्तसरन् मैं ने लिखा दिया। यह ही चीज़ develop होते-होते आख़िर तक पहुंचा देती है।

8-4-46

गुरु महाराज ऋषि लंका (यानी मौजूदा ऋषि लंका के पीर जो जिस्म छोड़ चुके हैं।) मैं ने बहुत ग़लती की जो तुम्हारी आज़मायश की। अफ़सोस है। (यहाँ तशरीफ़ ला कर यह अल्फ़ाज़ फ़रमाये) यह जानते हुये कि ऐसी हस्ती कभी ज़ाहिर नहीं हुई। तुम्हारे गुरु महाराज को छोड़ता हूँ। उनका कहना ही क्या। यह सब उन्हीं की बरकत है। तुम ने ज़िन्दगी में वो stages पार कर लिये जो मुझ को अब तक मयस्सर नहीं। दुनिया से गये हुये अरसा गुज़र गया।

हज़रत क़िब्ला: बस मैं इतना ही लिखाऊँगा कि कभी-कभी आलमे-बाला पर रुजूअ हो जाया करो।

जगमोहन: शरीक मुझे भी कर लेना।

S.V.: The people will laugh at such a dictation of my Lord but it is the truth and bare truth. Nobody has got the capacity of understanding it. The order given to you just now was binding upon **Lord Krishna** in His lifetime. He (गुरु महाराज ऋषि लंका) will come to you often for training. I am fixing the morning time for him, although you can call him at any moment.

ऋषि लंका यानी सीलोनः मेरे पीर ने मुझ को भी देने से कुछ नहीं रखा यानी सब कुछ दे दिया। जैसा कि तुम्हारे पीर ने कहा है। मुझे मालूम था कि मेरे गुरु महाराज आप के पास मौजूद हैं और हवा मुझ को भी पहुँची। होश उड़ गये। इस से पहले की तवज्जह का दिलदादः हो गया था। अब समझ में आया कि मैं ने कुछ नहीं सीखा। इस वक़्त (आप की) तवज्जह ने मुझ को हेरत में डाल दिया।

वक़्त 7:45 pm

हज़रत क़िब्लाः मैं ख़ामोश था, अब तय हो गया। **श्री कृष्ण जी महाराज** की फ़नाईयत तुम में हो कर रहेगी। कह भी चुके हैं। (तारीख़ 30.1.46) मगर इस तरह से, जैसे रफ़्ता-रफ़्ता मैं ने तुम में फ़नाईयत हासिल की थी। उस का आग़ाज़ हो गया।

श्री कृष्ण जी महाराजः उड़ीसा का जाना मुल्तवी रहेगा। जब तक कोई ख़ास ज़रूरत पैदा न हो जाये।

9-4-46

S.V.: Lord Krishna has made up His mind to bring you to the Level, the world has never seen - the strange making of your Guru. He (MM) is now going towards liberation, if he continued to be such.

हज़रत क़िब्ला: स्वामी विवेकानन्द जी की इबारत का मन्शा यह है कि **श्री कृष्ण जी महाराज** तुम को अपने Level पर लाना चाहते हैं।

S.V.: You have got so many works to do that for such a trifling thing you need not to exercise yourself. With reference to **Narain's** letter dated 7.4.46:

B.Madan Mohan Lal should rise early, specially tomorrow, if his health allows he should take bath. He should arrange himself for the work at 5.00 am and get up after 6.00 am doing the same thing. My Lord has given him power this time. He should be punctual in his work. **Agha's** mode of replying was very harsh. I will tune him from today. Your duty will be to work without any show unless such matter comes on itself. Such people cannot come round unless they are destined to be so. They have been spoiled. Create a new world. Zat (ज़ात) can be moved itself but who is going to realise it. Stages you can insert in a moment but who will realise the plainness and simplicity as you call it.

11-4-46

महात्मा बुद्ध जी: Connection उन सब के जिन के कटना चाहियें थे, कट चुके हैं। जो लोग कि रह गये हैं, थोड़े से हैं। उन को फूंक-फूंक कर क़दम रखना चाहिये ताकि आयन्दा कोई सूरत ऐसी ही पैदा न हो जावे और बदनामी का बायस हो। संगठन अजीब चीज़ है, इससे काम लो। मौजूदा इन्तज़ाम दर-हक़ीक़त इसीलिये था कि लोग सब मिल कर एक हो जावें। ऐसा ना हुवा। सबब? हालत में कमी। क्यों? सही मायनों में मुहब्बत नहीं की गई। किस से? अपने गुरु से। अगर होती तो मुमकिन न था कि सरल हालत न दौड़ने लगती। जब यह हो जाता तो ऊँचाई-निचाई, बड़ाई-छोटाई का सवाल ही न रहता। सब एक से नज़र आते।

हज़रत क़िब्लाः बुद्धजी महाराज का मन्शा इस तहरीर से यह है कि जिस ने यह हालत पैदा कर ली, जहाँ पर सब एक ही होते हैं तो तफ़रक़े का सवाल ही नहीं रहता।

महात्मा बुद्धः क्या हँसी आती है कि एक साहब (**उमा शंकर, ऐटा**) मुझे ले कर बैठे जिन के क़रीब भी मैं न गया। मेरी हालत कुछ अजीब मेहरबानी और मुहब्बत की रही है। सुधार फ़र्ज़ समझा और इस में ज़िन्दगी व्यतीत कर दी कि लोगों को फ़ायदा हो। वरना, क्या यह शख़्स इस क़ाबिल नहीं है कि इस को सज़ा दी जाये। छोड़ता तो सब छोड़ता। हर्ज न था। उसे नहीं मालूम कि वो ख़ुद क्या है और उस के पीर की क्या हस्ती है। आँखें नहीं कि देखे। हम जानते हैं। मतलब। तावक़्ते कि साबित न हो जाये कि पीर या

गुरु निकम्मा है; रुहानी मन्ज़िलें तय नहीं करा सकता है, हरगिज़ न छोड़े।

14-4-46

S.V.: Number of changes **Patanjali** has undergone in this world. He took the present form now. **You are Rishi Patanjali, the same soul.**

हज़रत क़िब्ला: स्वामी जी महाराज ने राज़ की बात खोल दी।

S.V. : People should learn the lesson from this epic. Liberation is not an easy matter. A Rishi praised by all, comes now for liberation. There are hundreds of examples of this type. **Swami Shankar Acharya** has not yet taken the trend towards liberation. How fearful is the circle of rebirth! God bless you. The people think it a very easy matter. Happy are those who try to come again and again in this world. They have no idea of liberation. They do not want to get rid of their present state. What is required for the freedom of soul, is to free oneself from all desires. That is the only thing for liberation. You may go for penances for a thousand years, still there is doubt of being returned. Go for a moment in the state of everlasting happiness in a way that you master the condition. Sufficient it is for liberation. I like the idea and your mode of teaching (fools do not understand it) adhering to plain (plainness) and simplicity of Nature. If that thing comes in itself and you gain mastery over it, liberation is sure. The idea is very simple. I daresay that nobody

could, leaving your Guru, catch the idea to express it in plain and simple way the phase of "plainness and simplicity". When this thing comes, calmness prevails. Nobody having it, can be disturbed even if he is tortured.

The object of all my dictations is that the people coming to you must rigidly follow it. If liberation is lost this time, who can guarantee the future prospect. None knows what is going to happen the other day. If a moment is lost this time means a year gone. This time the Nature incarnated herself for the liberation of the souls, so doubly benefited you are all reaping - I mean for those having faith in God's work and management.

At 4.40 pm : The question about liberation was for a peculiar nature. Liberation means, liberation in body, free from all worldly desires; one who has acquired the capacity in his own body of liberation ....

हज़रत क़िब्लाः मैं इस जुमले को पूरा किये देता हूँ। अस्ना-ए-dictation में स्वामी जी को कुछ ज़रूरी काम आ गये। जिस शख़्स ने अपनी ज़िन्दगी में यह हालत पैदा कर ली जो स्वामी जी महाराज ने लिखाई है वो जिस्म रखते हुये आज़ाद हो गया। और यह होना लाज़मी है। इस में शक नहीं कि मैं ने अक्सर लोगों को आज़ाद कर दिया। मगर यह ऐसी बात है जो बार-बार हर जगह पर नहीं की जाती।

22-4-46 7.40 am

श्री कृष्णजी महाराजः मैं भण्डारे को देखता रहा। कुछ न था। सिवाये आदमियों के जमाओ के, जैसा मेले में हो जाता है। फ़ैज़ क़तई बंद था। वहाँ अब किसी में ताक़त नहीं रही जो फ़ैज़ दे सके। सरचश्मा तुम्हारे यहाँ जारी था।

राधाजीः भाई, तुम इस को बंद क्यों नहीं कर देते।

(नोटः मैं ने कुछ बातें इस के मुतल्लिक़ कहीं। जवाब दिया।) तुम कुछ काम मेरे सुपुर्द कर सकते हो। यह वक़्त आ गया, लोगों को सच्ची परख जाती रही। तुम्हारे पास बहुत से dictates हैं, सब में सरलता की तारीफ़ है। और यह चीज़ बड़ी मुश्किल से मिलती है। इस का सिखाने वाला बजुज़ एक आध के कोई समझ में नहीं आता। चीज़ कमयाब है, इस लिये क़द्र नहीं। इस के लिये गृहस्ती को छोड़ जंगल में रहे। यह ख़ालिस हालत दर-हक़ीक़त ज़ात की है, या यूँ कहो कि ज़ात की हालत की शुरुआत है। इस के समझने वाले बहुत कम मिलेंगे। तुम्हारा वतीरा शुरु से ऐसा ही रहा है कि ख़ालिस चीज़ नज़्र की। **जुनूबी हिन्द** के दौरे में यही चीज़ तुम ने भरी, और हर जगह जहाँ भेजे गये, यही समाँ बाँधा। ज़रूरत भी इसी की है। बड़ी हस्ती की यही पहचान है।

S.V.: I assure you, my dear, this is the first chance from the days of **Lord Krishna** that you are filling the Air according to the dictate of my Master and myself, too. It is needed everywhere and wanting too.

30-4-46

SV: I was seeing last night your Satsang with my own eyes, as it was barren, nobody could like it. For you it is the last course to move on certain places to see the man for training of such a high standard. Your Guru is always busy with you not losing a single minute to throw you higher and higher. That is the thing he can give you as a token of love.

हज़रत क़िब्लाः बाबू **मदन मोहन लालः** यह भी मेरी ईजाद है कि सब कुछ दे कर फिर भी आगे कैसे बढ़ाया जाता है।

S.V.: He is always restless and wants to see you higher and higher. If I say that such a personality like your Guru (I admit) was never born. For you I have said sufficiently. Get a man for training of such a high standard. He (your Guru) is the guiding power.

4-5-46

हज़रत किब्लाः भाई, बाबू **मदन मोहन लाल**! कहने को तो मैं ने अज़ीज़ **रामचन्द्र** के बारे में सब कुछ कह दिया। ज़ाती क़ाबलियत भी ज़ाहिर कर दी। उस के तरीक़े भी बतला दिये। अमल भी रोशन कर दिये। मगर एक ज़बरदस्त बात कहने से रह गई। वो यह कि यह मेरी तरफ़ हमातन गया था। झाड़ झंकाड़ (मिस्ल कांटों के जो आग लगने के वक़्त सब ख़ाक हो जाते हैं) सब के साथ मुझ में फ़नाईयत की कोशिश की थी। वो कैसे, कि इन

चीज़ों को उस हालत पर लाना चाहा जो असल में मिल कर एक हो जाती है। भाई, यह बात ख़ुदादाद थी। कोई हिदायत इस तरह की इस को नहीं दी गई। इस की नक़ल लोग करना चाहें तो कर सकते हैं। यह बात उस वक़्त तक खुली न थी और गुप्त थी। इस का संभालने वाला मैं ही था। अब ज़ाहिर कर रहा हूँ। अहमियत का परदा शुरु से ही पैदायशी चाक था। इस ने उस को और भी मदद् दी।

19-5-46 8.00 am

S.V. : All are losing their existence. Making one for the work. **Mahatma Buddha** has lost his existence and merged in you this very time.

20-5-46

बुद्ध भगवान: मेरी हालत मैं ही जानता था। एक ख़ास बात क़ाबिल लिखाने के यह है कि तुम्हारे गुरु महाराज ने वो हिस्सा भी ले लिया था जिस को सब से अच्छा समझता था और मेरी हालत का अन्जाम था।

यह निस्बतें तुम को तुम्हारे गुरु महाराज से मिलीं। अब develop कर दी गईं। शिकायत जो कल तुम ने अपनी निस्बत की थी। यह कि कैसा दिल व जिगर **बुद्ध जी** का था जो एक दम से राज, बीवी, बच्चा छोड़ कर जंगल की तरफ़ रुख़ कर दिया। यह कमज़ोरी नहीं। यह कमज़ोरी नहीं थी, बल्कि तुम्हारे यहाँ के उसूल के अन्दर थी।

मयाना रवी, एत्दाल पसंदी सिलसिले की जान है। **बुद्ध गया** तुम को जाना चाहिये। जगह को अज़ सरे नौ मुनव्वर कर दो। जंगलों में कुछ निशानात भी हैं जहाँ मैं विचरा हूँ और असर है। चाहो, मालूम कर लेना। ज़रूरी काम **बुद्ध गया** है जो अभी बताया। **सीलोन** में एक मक़ाम है उसे यहाँ ही से शुद्ध कर देना। मैं फ़ना हो चुका हूँ। आता रहूँगा, जो दरियाफ़्त करोगे, बतलाता रहूँगा। मेरी निस्बत भी इस सिलसिले (**सहज मार्ग**) में पहुँच गई। एक बात तुम्हें और करना होगी। वक़्त पर बतला दी जायेगी।

S.V.: You will have to initiate somebody in the hands of **Buddhaji**. Mandates will remain the same, you got from **Lord Krishna** with addition made by your Guru.

28-5-46

हज़रत क़िब्लाः बरेली का अब्दाल एक वजह से सलब किया गया कि हिन्दु-मुसलिम फ़साद में ख़िलाफ़े हुक्मे क़ुदरत उस ने मुसलमानों को मदद् दी थी। **बरेली** और **शाहजहाँपुर** उस के सर्कल में था। दोनों ले लिये गये।

29-5-46

हज़रत क़िब्लाः मथुरा के अब्दाल के सर्कल में **शाहजहाँपुर** और **बरेली** दे दो। इसलिये कि उस ने तुम्हारी ख़िदमत की है। **मद्रास** का क़ुतुब अगर वायदा करे तो उस का सर्कल बढ़ा दिया जावे। Coastwise उस का सर्कल रहेगा **उड़ीसा** तक। **बिहार** के

क़ुतुब का सर्कल **बंगाल** और **आसाम** तक रहेगा। **बम्बई** और **मालाबार** में इस वक़्त कोई शख़्स available नहीं है। **गुजरात** और **राजपूताना** एक शख़्स के हल्क़े में रहेगा। **पंजाब** और **कश्मीर** और **सिंध** की एक डिविज़न रहेगी। U.P. में **करुणा शंकर** का काम रहेगा। इन सब की निगरानी **रामेशर** के ज़िम्मे रहेगी। एक अब्दाल **बदायूँ** में है, उस को सलब कर लो।

24-6-46

हज़रत क़िब्लाः नीमसार (नैमिषारण्य) को मुनव्वर कर दो। उस में कुछ लाशें पड़ी हैं, हड्डियाँ रह गई हैं। यह उन जात्रियों (यात्रियों) की हड्डियाँ हैं जो तीर्थ करने **नीमसार** गये थे। बता दूँगा। नेक ख़याल थे। तृप्ति नहीं हुई। उन की रूह अपने क़ातिल के गिर्द अब भी चक्कर लगा रही है। **श्री कृष्ण जी** की राय है कि उन को तबाह कर दिया जाये। एक बच्चा भी न बचे। एक जगह और है, मौक़े पर बता दूँगा। रूहों को क़तई liberate (आज़ाद) कर दो। Morality गिर गई है। किस की बदौलत? यह ही लोग जो बानी-ए-मज़हब अपने आप को समझते हैं। **चौबों** या **पण्डों** के यहाँ कभी न ठहरे। कुछ नेक भी हैं मगर इस का पता लगना दुश्वार है।

27-6-46 नीमसार 11-10 am

S.V.: You have been meditating all along. The city is resounding (with) the spiritual echo. There is no necessity of meditating any longer. The tank (**Chakra Tirath**) has been

hypnotised sufficiently. The work is not much here so you can start. One thing remains, no doubt, and that is the compliance of the dictates of my Lord about the bones of the souls assassinated. The work is a very important one, it must be finished before you leave this place. The tank is the only place here to be esteemed highly.

Ditto at 7.00 pm

S.V.: You have consulted me whether the Sanskaras of the souls going to be liberated be burnt or transferred. The answer is that **burning of sanskar is against the Law of Nature**, but you have done the most part - I mean that you have burnt it to a greater extent; what remains now is to be transferred to the oppresser. The rest of the work you will do at your house.

29-6-46

हज़रत क़िब्लाः तुम्हारा **नीमसार** का काम अच्छा रहा। वकील साहब की ख़्वाहिश तुम को **लखीमपुर** ले जाने की ज़्यादा थी। कह नहीं सकते थे, इसलिये तुम को मैं ने भेज दिया। काम और आ गया। छुट्टी नहीं। कचहरी खुल रही है। मजबूरी है। **गया (Gaya)** की हालत नागुफ़्ता-बे है। बड़ी ख़राब है। मौक़ा निकालो। जाना होगा। उधर से **जगन्नाथ पुरी** की भी ख़बर ले लेना। अव्वल, **गया** (मक़ाम तीर्थ) बादा **पूरी** (तीर्थ) **नदिया** (Nadia) (Orissa) में **चैतन्य महा प्रभु** तुम्हें भेज रहे हैं।

S.V.: I am very glad with your work at **Neemsaár** (Naimisharanya). The work is half complete because the dictates of my Lord, your Master, remain unfulfilled to the extent of destruction. Do it. I tell you, if you complete the destruction of **Gaya**, I will vacate my office for you as a reward.

हज़रत क़िब्ला: गया का destruction शुरु कर दो।

S.V.: The changes are made in the first step for the destruction by the force of will. Circumstances are created to bring the work into action **vide** note of **Lord Krishna** in the letter sent to **B. Sripat Sahai**. But remember destruction is bound to come. You cannot measure your will specially allotted for the (Godly) work, which if gathered to a point can destroy a thousand worlds.

श्री कृष्ण जी महाराज: मैं नीमसार के काम से बहुत ख़ुश हुवा। अब काम **गया** का दरपेश है जो बहुत ज़रूरी है। मौक़ा निकालो।

नोट: बमक़ाम **लखीमपुर** बाबू **ईशर सहाय** के यहाँ मुक़ीम था। 8 (आठ) बजे रात के प्रशाद चढ़ाया। बुज़ुर्गान मौजूद थे। पहले **श्री कृष्ण जी महाराज** ने तवज्जह फ़रमाई। उस के बाद **राधाजी** ने पहले मुझे तवज्जह फ़रमाई और उस के बाद बाबू **ईशर सहाय** को भी तवज्जह में बैठने का हुक्म दिया। दोनों को अन्दर ठण्डक का एहसास हो रहा था। जैसे बर्फ़ में छू कर हवा ठण्डी आती है। यह **राधाजी** की तवज्जह में बैठने का पहला मौक़ा था।

11-7-46   8.30 pm

S.V.: The forgotten days are remembered. We want all of you to be at the zenith in spirituality. Why so? Because of the time's need. Not this, but the work after life, helping him (RC) in his great task. Spirituality is something else and the power is something else. Example: Your Guru (Lalaji) in spirituality. How to achieve it? The same thing which has been so often told you. It is very easy to gain the power but it is most difficult to acquire the thing needed. Children play, grow old, their happiness is gone for ever, they have in their toys.

If they think of their cradle again in their lifetime, the people will always suspect them to be crawling on the foothold of childhood. If the same thing goes on and on, the result would be the same boy's habit sticking to their toys alone. Similarly, if a man acquires the true knowledge but goes back to his old habits, the people can say that he has no knowledge actually needed, leaving aside slavish habits - the thing poisonous to the human growth of spiritual life. If one improves, that means he is going on the right path. These are the stages of Tyag (त्याग) or renunciation. One must pass through it firmly, but having faith in one's Master. Children! these are the lessons for you. Today's work is finished.

4-8-46

S.V.: The **Mohammedan** system has gone away for the

good vide my Lord's note somewhere. You are giving the starting point of the new religion and culture of the **Hindu** fashion. You have been brought up similarly. Your position as to the matter, just talked about had been taken away ere long before the actual system came into being. It was the **system prevalent among mohammedans**, different from ours, found generally among the beasts. I assure you dear, the system prevalent now was a dream to them and they could not catch it easily. There will be hardly a few among them who reached the actual limit. The thing so highly praised is nothing but **Maya (माया)**. We only boast of reaching direct to the **Zaat (ज़ात).** Although, the thing was borrowed from us, yet they could not give the finishing touch.

सवालः क्या इस वजह से कि वे लोग **हज़रत मुहम्मद साहब** (सल०) को अपनी इबादत में शामिल कर लेते थे या कोई और वजह से?

Ans: Their mode of living was responsible for it.

हज़रत मुहम्मद साहब (सल०): इस की वजह बहुत साफ़ है। सच कह दूँ। मैं भी आख़िर वक़्त तक उस चीज़ को हासिल करता रहा जिस का छोर नहीं। पैरवी नहीं की गई ताकि यह बात साथ में मिल कर उन को भी नसीब हो जाती । जानवरों को इस से वास्ता। इतना क्या कम था कि लाज़वाल हस्ती पर उन का यक़ीन हो गया। रफ़्ता-रफ़्ता की बातें थीं। मेरे बाद ऐसा कोई न हुवा कि उन को, जिस चीज़ की मुझे ख़बर थी, बता देता और जंगली तर्ज़ व मुआशरत

उन की छुड़ा देता। फिर भाई, असल, असल ही है। यहाँ की सरज़मीन और हवा ऐसी है जिस में बक़ौल तुम्हारे सादगी की बू भरी हुई है। सब का रुझान इसी तब्क़े पर रहा है। मैं भी इसी तब्क़े में था। मगर वहाँ तक रोशनी अरसे से नहीं पहुँची थी, इस लिये मुझ को वहाँ वाअज़ करना पड़ा। मगर अफ़सोस, यहाँ पर भी असर दूसरों का काफ़ी पड़ गया। फिर भी बहुत कुछ वो बात क़ायम है। मुझे तुम्हारे इस ख़याल से कि **इल्मे बातिन** या **ब्रह्म विद्या** उसे चाहे कह लो चाहे **इल्मे लद्दुनी**। इस का मज़हब से क़तई ताल्लुक नहीं। मज़हब सिर्फ़ रोशनी रास्ते के लिये दिखाता है। और जंगलीपन से इन्सान बनने की तरग़ीब देता है।

10-8-46

हज़रत क़िब्लाः सुबह के वक़्त तुम्हारा एहसास था कि **चित्तोड़** में एक ऋषि काम करने के लिये मुन्तख़िब किया गया है। (8.35 am) जिस वक़्त इस की हालत शुरु हुई तुम को एहसास हो गया।

19-8-46 at 8.30 pm

बरोज़ सोमवार, जन्माष्टमी (अव्वल)

मीरा बाईः मुझे यह घर बड़ा सुन्दर मालूम हुवा और यह कमरा जहाँ साक्षात **श्री कृष्ण जी** महाराज बिराजमान हैं, अच्छा लगा। इस कमरे में कुछ परमाणु ऐसे हैं जिन को नहीं होना चाहिये।

आयन्दा यह एहतियात रखी जावे कि इस में ज़िक्र और ख़याल इसी तरह के हों। कमरा बन्द रखा जावे। जब ज़रूरत हो तो यहाँ आ जावे या साधारण तौर यहाँ कोई बैठना चाहे तो कोई हर्ज नहीं।

1-9-46 (1.45 pm)

S.V.: Everbody is tossing in the hands of **Maya**. **Maya** is the illusion. Everbody is enveloped in the darkness; he seeks remedy within the same globe. What he gets, gets from the same shadowy thing which is itself not pure. What is pure? is the question and where does purity remain or remains supreme, is the only circle of God. We are not moving in that sphere to bring the correct things for the proper use of conscience. It is the wrong conception that the dictates of conscience always lead towards Godly things, in the first step. Nobody can doubt its sincerity. But when? When it is trained. Training is not a joke and everybody would have done so, had it been the easier way. You know my life. I was thoroughly educated and the best reader, and I had the conscience of my own, but I could not catch even the glimpse of Almighty, unless I went to Guru. If anybody can compare with me in knowledge, he should stand on his legs and see the result that he will go ultimately to his Guru for learning. Your Guru had the born capacity, but at last he went to his guide for his improvement. The examples are very rare, rather seldom found which enabled him to go straight without any helper. Why should we not adopt the means by which hundreds of persons have improved; why should we not throw ourselves on (at) one's feet when we see the sure remedy ahead.

10-9-46

S.V.: History of the Emblem from which main points may be taken.

Thousands of men have been doing work of spirituality from the time immemorial - of course on different lines. The goal of everybody was the same. Some **mohammedan** gentleman borrowed from us the glimpses of spirituality. They did very well in their times with the result that we **(Hindus)** have lost everything. Their teachings were confined generally with their kinsfolk, belonging to the same religion. There were a few **Hindus** - most of them turned themselves into **mohammedans**, who got this kind of teaching. Whenever they **(Hindus)** gave training to others, it was wholly after **mohammedan** fashion. Your Guru, my Lord improved much of it and imparted it to us. It was due to his sacrifices and services to his fellow beings that the Nature has gifted him with new method of teaching after **Hindu** fashion in his lifetime in improved form, to impart. The System, you know, has been modified altogether in **Hindu** fashion. The links connected with **mohammedan sages** have been broken down by the Will of the Almighty. It is now in present form needed to prepare an **Emblem** to Commemorate **the spiritual era of Shri Ram Chandra Mission**.

There was darkness all along before the world came into present form. **Darkness means no light and no light means**

Darkness. I expressed this to denote the things unchanged in last run of abhyasi. Now we descend from it and see the different lights of Sun and Moon. Now coming from upward, we cross them and come to the point wherefrom to start to attain the goal. There are different things in the world in its solid form captivating us to a great extent. We have now prepared the way to go through these things and reach the goal. Before starting from this point we generally have to cut down the solidity of things described as mountains and prepare the way for - I mean, for the place of destination. Sun and every thing are left behind. Of course, we have to pass through different colours, in adopting the way meant for spiritual advancement. **Swastika** is the sign of all ritual rites performed among **Hindus**. We now start from this point called Swastika and perform different kinds of abhyases in the fashion of **Karma Yoga**. After that we enter into **Sahaj Marg** where Guru is perfectly needed and his shelter is needed, leaving aside the solidity in toto, after a few practices of Yoga, in the fashion of my Lord. The rising Sun denotes the spiritual era given birth by my Lord. The light of the rising Sun is commencing at the base of the Emblem which shows our starting point and also that the rising Sun has full command at the base from which we start in the beginning.

हज़रत क़िब्ला: मैं इन्तज़ामन् **नरायन सहाय** को **कानपुर** के सतसंग के लिये मुक़र्रर करता हूँ। उस को चाहिये कि अपनी तरक़्क़ी में लगा रहे और दूसरों को भी फ़ायदा पहुँचाये। मैं ने उस को तवज्जह देने के लायक़ कर दिया।

S.V.: It can't exhaust now.

हज़रत क़िब्लाः नये लोगों को जब सतसंग में शामिल करे और उस के मुताल्लिक़ जो ख़ास बातें मालूम करना चाहे, यहाँ से पूछ सकता है।

21-9-46

हज़रत क़िब्ला (मुताल्लिक़ा जात पात) इस वक़्त क़ुदरत की तरफ़ से तहरीक थी कि उस को जात पात (ज़ात पात) रखना मन्ज़ूर नहीं। यह बात सख़्ती से जावेगी। क़ुदरत का कोई हुक्म जात पात रखने का न था। यह इन्तज़ाम घरेलू तरीक़े में किया गया था। नतीजा यह हुवा कि एक-एक जमाअत अलेहदा क़ायम हो गई। बड़ा हिस्सा ब्राह्मणों ने ले लिया। उस वक़्त यह इस के योग्य भी थे। मगर इन्हीं में से अन्खुवा फूटने लगा। तफ़रीक़ दर तफ़रीक़ शुरु हो गई। Sections क़ायम हो गईं। और न जाने कितने बल पड़ गये। और अलेहदगी हो गई। नुक़्ता-ए-निगाह अपनी supremacy हो गया। इसी तरह से और जातियों का भी हाल हुवा। हर एक में कई-कई सेक्शन्स (Sections) क़ायम हो गईं। नीच-ऊँच का ख़याल पैदा हो गया। तुम्हारा amendment सिर्फ़ इस हद तक मन्ज़ूर हुवा है कि जात-पात के हामियों (जमाअत करने वाले लोग) पर total destruction का ख़याल न बांधा जाये। हुक्म सख़्त था। इस ज़द में तुम भी आ सकते थे। क्योंकि हर शख़्स ऐसा ख़याल ले कर नहीं उतरा। संभाले में कुश्त व ख़ून होना लाज़मी है। बिला इस के कभी काम चला ही नहीं। देर सवेर तुम्हारे हाथ में है। हम लोगों

को इस से क़तन् मतलब नहीं। ख़्याल बांधो कि यह (ज़ात पात) जा रही है। और उन लोगों को जो इस के हामी हो रहे हैं और उन का कट्टरपन किसी सूरत से नहीं जाता तो ज़रूर बरबाद करने वाली तवज्जह दी जावे। रियायत नहीं। हुक्म है। **यह चार जातियाँ इन्तज़ामन् थीं**। समझ लो कि फ़ोज का इन्तज़ाम था। लड़ाई के बाद यह चीज़ें और उसूल जो जंग में थे, क़ायम नहीं रहते। सबसे पहले तुम मैदान में आओ। उसूलों को ख़त्म कर दो। अपने ऊपर लागू बनाओ। यह काम तुम्हारे एक अरसे से सुपुर्द था। यक़ीन दिलाता हूँ कि जिन को ज़द में लिया है उन की तबाही शुरु हो गई और बहुत से घर बेचिराग़ हो गये। मगर यह काफ़ी नहीं है। बड़ा काम है। मेहनत करो। Constructive programme जो इस के साथ है, साथ ही साथ चलेगा। दोनों चीज़ें लाज़िम और लाबुदी हैं।

2-10-46 Lakhimpur

S.V. : I observed your work in Southern India. It is progressing. For the thing you are required to meditate this very day and this very time is the order of **Lord Krishna** to endow (you) with certain powers. Look here, the power will not be used in any matter except the godly one. The point has not been bestowed yet to anybody. It is a special gift of Nature for you for the work. You will do total annihilation of certain places. The order will follow later on and it wil be kept confidential.

श्री कृष्णजी महाराजः मैं ने आज वो ताक़त मुन्तक़िल कर दी है जिस के लिये क़ुदरत का हुक्म था।

S.V. : Three hours after, you can take meal, but better it is, (if you do) not take so early but in the night as (in a) usual way.

Look here, you are going to be prepared not for this world but for the brighter one as well. Your working here is by the way only. You are meant for the great task before you, after you leave the body. We are all leaving the work for you in the brighter world. Having been merged in you in toto, all sansthas will disappear, having no concern with anybody else in the brighter world. It is high time for you all to avail of the opportunity. The time is passing on and it will never return. Our eyes are with you and on you alone.

नोटः इस वक़्त का सीन(Scene) पेश नज़र है।

S.V. : We were all checking the power coming down to you.

हज़रत क़िब्लाः भाई, मैं ने कुछ नहीं रखा। इन्तज़ार यही रहता है कि सब कुछ तुम को मिले। जिस्म कमज़ोर, ताक़त बेइन्तहा। गुरु भगती की मिसाल है। दीवाने हैं वो जिन की समझ इस तरफ़ काम नहीं करती। क्या कभी ऐसा हुवा है कि कुल force ज़ात की एक दम उमंड पड़ी हो। हम सब उस के रोकने में मशग़ूल थे ताकि ऐसा न हो कि सीने पर एक दम आ जावे और तो राही-ए-मुल्के बक़ा होना पड़े।

3-10-46

S.V.: Be cautious, the time is now coming for the world benefit. In India dissensions are progressing. That is the Nature's work for good. Leave it for the time being and see the result. It is going to be in future in Europe. All will be dissembled and it is you and you alone will do it. Do you remember the words of **Christ**? What he wants?

The clear dissemblement of all the members of his religion. The destiny of a Nation is always interwoven with bloodshed. Whether their family members may do it or some external agency may perform it. This is the hint for your working. The rest will follow after. The world is in tumult and disorder. Its fate will be decided by you.

24-10-46

जगमोहन नरायन जी (साहबज़ादे हज़रत क़िब्ला) : मैं ने यह मिसाल कहीं नहीं पाई कि गुरु ने आलमे-बाला पर भी अपनी जगह अपने शिष्य के लिये छोड़ दी। जाना नहीं होता। सच पूछो तो जो बात आप को नसीब है, मुझ को नहीं। मैं ने आप को बड़े भाई की निगाह से देखा, अब भी ऐसा ही समझता हूँ। जिस्म नहीं है। आप के आने में यहाँ अभी देर है। सामान बुलाने के लिये गो कई दफ़ा हो चुका है, मगर हमारे लाला जी साहब ने इस को होने नहीं दिया। यह बात लालाजी साहब ने आप की मर्ज़ी पर छोड़ दी है। हमारे (**अब्दुलग़नी**

खान) पीर का ऐसा बुरा हाल हुवा कि किसी का न होवे। लालाजी साहब का हाथ न होता तो मुमकिन था मैं आज़ाद न जाता। चचा (**रघुवर दयाल**) के बारे में मेरी राय पहले ही ख़िलाफ़ थी। रुहानियत रुख़सत होने लगी थी और यह बात मेरे ही ज़माने से शुरु हुई थी। अब कुछ बाक़ी नहीं रहा। आगे नस्ल भी ख़त्म है। और भाई साहब, हमारे यहाँ भी क़रीब-क़रीब ऐसा ही हाल है। सैंकड़ों में चन्द लोग हुये तो क्या। ख़ैर अब भी उम्मीद है।

हज़रत क़िब्लाः Ceylon का काम अब तक नामुकम्मिल है, देर ज़्यादा हो गई।

तसलीम व रज़ा की हालत आख़री कही गई है। यह ज़रूर है कि इस का सिरा और आख़िर कुछ भी नहीं। जहाँ पर पैदा हो जावे। यह भी देखा गया है कि अक्सर बुज़ुर्गों ने यहीं से शुरुआत की और यह भी हुवा है कि अस्नाए सफ़र में यह बात पेश आई। ऐसा भी हुवा है अक्सर कि मदारिज रुहानी कुछ तै करने के बाद यह बात नसीब हुई। अपनी हिम्मत पर है और उस की मरज़ी कि जब चाहे इस हालत को बन्दे पर उतार दे। दलील मिस्कीनी सिफ़्त; आज्ज़ी; नम्रता झुकाव वग़ैरः।

27-10-46

S.V.: I was thunderstruck (awe-struck or wonderstruck) to hear your philosophical discourse today. I advise you to write these things on paper. I fear such things will not be found

in the years long to come. Lightening bolt is the wonderful theory. Nobody could feel it still. The other theories are quite correct. I always advise your brothers coming to you to give you substance to think over. But not one of them is doing it. Nature, in other words, is revealing herself. Silent. Will somebody of you dare to write it?

9-11-46 6.30 pm

क़िब्ला बाबू हर नरायन वालिद माजिद मदन मोहन लालः (मदन मोहन लाल के दरियाफ्त पर)

फ़रमायाः बाज़ों का क़ुदरती तौर पर यह हाल होता है (यानी बुज़ुर्गों) और ज़ात से connection होता है। और यह वो लोग हैं जिन को क़ुदरत इस काम के लिये भेजती है। मगर इस के यह मानी नहीं कि दूसरे लोग कोशिश करें और कामयाब न हों। फ़र्क़ इतना रहता है कि ऐसे लोग जो बने बनाये आते हैं उन के लिये बराहे-रास्त distribution of work होता है। पैदा की हुई हालत में यह बात नहीं होती। मगर मतलब वही हो जाता है। यहाँ गुरु से बराहे-रास्त; वहाँ ज़ात से। इस में यानी गुरु वाले में पित्तामारी का काम है और उस में ज़रा सा साफ़ कर देना पड़ता है। तरीक़ा शुरु से चलो।

तरीक़ाः अपने आप को धीमा बनाते चलो। जितना धीमा कर लिया, उतनी ही चीज़ पहुँच गई। अब तो तालीम ही इस क़िस्म की हो रही है। आगे चल के यह बात लोगों में develop होगी।

फ़नाईयत से यह मुराद है कि गुरु या बुज़ुर्ग अपने आप को उस में लय कर देता है(यानी मुरीद में) । अब वो चीज़ जो ले ली गई है उस के ऊपर का ग़िलाफ़ हारिज होता है या रहता है। इस से (इस वजह से) खटा खटी की आवाज़ उस covering यानी ग़िलाफ़ से ऊपर नहीं जाती जो समझ में आवे। होती ज़रूर है। यह काम तुम्हारा (**मदन मोहन**) है और मदद् ईशर की। कोशिश communication stage की नहीं करना चाहिये बल्कि covering को फाड़ने की। तुम्हारी (**मदन मोहन**) will क़ुदरतन् उस को चाक कर सकती है। क्या मराक़बे में जहाँ और बातें हो सकती हैं, या करते हो, नहीं हो सकती। ज़रूर यह बात भी हो सकती है कि इस के चाक करने का ख़याल बांधा जाये। और ज़राए इस्तेमाल किये जायें जो इस के मुतरादफ़ हों। तुम सवाल यह भी करोगे कि कौन सी चीज़ें इस के मुतरादफ़ हैं। वही तुम्हारे अल्फ़ाज़ सादगी और शान्ति वगैराः। इस चीज़ में घुस पड़ो और तमाशा देखो। हमारे यहां हर जगह शान्ति के लिये दुआ की गई है और अपने ही लिये नहीं बल्कि कुल दुनिया वालों के लिये। बात क्या है। यह ही असल चीज़ है। और पाना मुश्किल। इससे आगे जो कुछ भी है आवरण हैं यानी ग़िलाफ़, हिजाब, परदा। इन्हीं को चाक करना सब का काम है। मिशन। यह गुरुद्वारा होना चाहिये।

ख़याल करो कि मैं शान्ति के समन्दर में डूबा हुवा हूँ और उस की लहरें आवरण को हटा रही और चाक कर रही हैं। एक घंटा करना चाहिये। क्या तुम्हें (MM) खट-खट की आवाज़ कभी नहीं सुनाई दी। हुई तो ज़रूर और कहा भी कुछ जो **लल्लन** के बारे में

था। यह नाकारा है। अपने दिल को जो इस की वजह से दुःख होता है, बचाओ। आज से कुछ पहले कहा था।

नोटः यह dictation **मदन मोहन लाल** के पूछने पर वक़्त 6 1/2 बजे शाम, तारीख़ 9 नवम्बर, सन् 46 ई0 उन के वालिद माजिद ने दिया थ।

श्री बद्री प्रशाद जीः वालिद माजिद बिरादर अज़ीज़ **श्री राम चन्द्र** जी इरशाद फ़रमायाः मुझे कुछ कहना सुनना नहीं। **मदन मोहन** का शुक्रिया कि इसने तुम्हारे (RC) बारे में पहले से आगाह कर दिया था यानी मेरी ज़िन्दगी में। तुम ने (RC) मुझे ऐवज़ ज़रूर दिया मगर क्या मेरी ज़ाँफ़िशानी से तुम को दुनियावी राहत नहीं मिली। परिश्रम तुम ने मेरे लिये किया मगर क्या तुम ईमानदारी से कह सकते हो कि मेरी मौजूदा हालत तुम्हारे परिश्रम का नतीजा है। हरगिज़ नहीं। मैं तो हमेशा उन्हीं (मुराद **हज़रत क़िब्ला** गुरु महाराज से) का धन्यवाद दूंगा जिन्होंने तुम को बनाया।

हज़रत क़िब्लाः बाबू **बद्री प्रशाद** ने बहुत कुछ कहा मगर थेड़ी सी मौजूदा सूरत में कहने में ग़लती की है। इस लिये कि यह पुतला (RC) जो इस वक़्त मौजूद है अगर उन का न होता तो मैं किस में हलूल करता। ख़ुदा ऐसी औलाद सब को देवे। तुम्हारी (RC) औलाद में एक शख़्स ऐसा और आ रहा है। कब ? वक़्त बतादेगा।

18-11-46

अर्जुन जी महाराजः महाभारत का सीन फिर मौजूद है। टंकोर के शब्द ने कुछ इस तरह से ख़याल के दायरे में धक्का दिया। गो वो ख़याल तुम्हारा था, मुझ तक ख़बर हो गई। **असुर** बढ़ रहे हैं। वो बातें फिर मौजूद हो गईं। पढ़ो। वायु मंडल बता रहा है और आप किस भूल में हैं। इस सीन का ख़ात्मा तुम्हीं करोगे। यह नहीं कि यह ज़िन्दगी काफ़ी हो, आगे भेद खोलने की मुमानियत है। आसार नुमायाँ हो गये। स्वामीजी इस काम को जो उन के ताल्लुक़ है, छोड़ रहे हैं। इन की हस्ती बहुत बड़ी हस्ती है। यह ताक़तें जो तुम्हें दी गई हैं, काम करेंगी। इस का तमाशा ज़िन्दगी बाद नज़र आयेगा। (इस का सीन सामने आ गया मगर अल्फ़ाज़ में अदा नहीं होता)। **बाण विद्या** अपनी शक्ल में आयेगी और तरीक़ा भी यही होगा। भाई, यह साइंस है। मन्त्र के द्वारा इस में ताक़त दी गई और उस ताक़त का इस्तेमाल चलाने वालों को बता दिया गया। अगर मैं तुम को बताऊँ तो तुम कुछ नहीं कर सकते। इसलिये कि उस की बुनियाद तुम्हारे पास है ही नहीं। जो है वो आ रही है। जब कोई शख़्स ऐसा पैदा हो जावेगा तो जैसे रूहानी मामलात तुम पर उतर रहे हैं, उस पर भी उतरेंगे। इन में Ether का फ़ोर्स रहता था और इस का ताल्लुक़ बड़ी चीज़ से रहता था। और यहाँ सब ताक़तें मौजूद हैं। देखो कौंधा। इस की चमक देखी। यह जला देने वाली ताक़त है। इस फ़ोर्स को बाणों में रखा गया था। मशीन नहीं थी। Will Power काम करती थी जिस को लोग सिद्ध कर लिया करते थे। हर चीज़ preserve है।

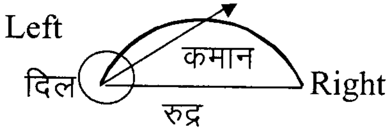

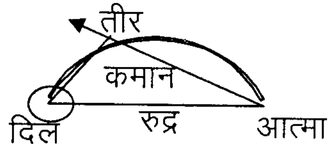

जिस वक़्त मैदाने जंग में तबाह करने की ज़रूरत हुई, बाईं तरफ़ से तीर निकला। इस राज़ को सिर्फ़ **कृष्ण जी महाराज** ही जानते थे। सीधे हिस्से से बाण चलाना मैं ही जानता था। यह नोट मैं आगे आने वालों के लिये छोड़ता हूँ। ज़रूरी है। मैं ने दो बातें बताईं। दो ख़ास हथियार मैं ने बता दिये। बाईं तरफ़ जो बाण रखा हुवा तुम ने देखा, उस में कुल Ether की ताक़त को अपने मातहत कर लिया था। मन्त्र द्वारा जो चीज़ हासिल की जाती है, अनन्त नहीं थी। ख़्याली ताक़त उस के साथ रहती थी और उस में उस का पैराव हो जाता था। Ether पर Command पूरे तौर पर मुझ को हो गया था। क्या मैदान में जो तवज्जह मुझ को **कृष्ण भगवान** ने दी थी, वो क्या महज़ रूहानी थी। इन चीज़ों को साफ़ कर दिया था, इसलिये कि हथियार ठीक उठा सकूँ। हथियार बेकार हैं अगर ऐसी Training न दी जावे। हाँ, एक बात और बताता हूँ। प्रलय का सीन पैदा करना मेरे हाथ में था। और यह बाण अब तक ईजाद नहीं हुवा। मन्त्र बेकार हैं अगर ख़्याली क़ुव्वत उन के साथ न हो। बड़ी वसीह इल्म है।

सवालः जर्मनी ने बहुत से हथियार ईजाद कर लिये थे?

जवाबः उन में खर्चा होता है और इन में ख़र्चा नहीं होता।

ख़र्चीली एक चीज़ ज़रूर थी। उस में कल थी। किसी वक़्त में इस कलदार चीज़ को वायुयान (विमान) कहा है। इस में Will Power की ज़रूरत नहीं थी। चन्द धातों (धातुओं) से काम लिया जाता था। एक धात उस में उकसाने वाली भी थी। यह मेरा नोट अगर साईन्सदानों (Scientists) को दे दिया जाये तो ले उड़ें। ज़मीन को ख़राब नहीं किया गया।

27-11-46

हज़रत क़िब्लाः आज वक़्ते शब 8 बजे **रामेशर प्रशाद** की कुण्डलनि शक्ति जग गई। और कुछ हरकत गुदा चक्र के मक़ाम पर भी हुई। लाज़िम है कि एहतियात रखे। लड़कपन से काम न ले। इस क़िस्म की तवज्जह आम तौर पर देने की मुमानियत है।

28-11-46

हज़रत क़िब्लाः गुरु **ऋषि लंका** इस वक़्त मौजूद हैं। कुछ फरमायेंगे।

गुरु ऋषि लंकाः मैं बहुत ख़ुश हूँ कि आज इस वक़्त 6.45 वक़्ते शब ऋषि लंका का मक़ाम क़ुद्स तुम्हारे गुरु महाराज की अपार दया से खोल दिया गया। आज ग्यारहवां रोज़ है कि (उस ने) अन्न जल नहीं किया था। हुक्म दे दो कि ब्रत छोड़ दे।

ऋषि लंकाः मैं अपनी मुराद को पहुँच गया। शुक्रिया। आप

मेरे जो काम सुपुर्द करें (उस के लिये) हमेशा तैयार रहूँगा। तालीमी सिलसिला अगर **जुनुबी हिन्द** में छिड़ जावे और आप (RC) इजाज़त दें तो मैं मिस्ल अपने शिष्यों के, उन को तालीम करना शुरु कर दूँगा।

हज़रत क़िब्लाः अब (यक) न शुद दो शुद। (**गुरु ऋषि लंका**) कह गये हैं कि जो मक़ामात आप ने **रामचन्द्र** के तै फ़रमाये हैं यानी वो मक़ामात या हालतें जो ज़ात में तैराकी के वक़्त तै कराये हैं या करा रहे हैं, मुझ को भी (आप) अता फ़रमावें। मैं ने कितना अच्छा जवाब दिया कि यह सब **रामचन्द्र** के हाथ में है। उस को मुख़्तार कर दिया है या यूं कहो कि अपने आप को उस में मिटा दिया है। सिर्फ़ थोड़ा सा क़ाबू बाक़ी रखा है। लिहाज़ा यह काम तुम्हारे (RC) सुपुर्द करता हूँ। जब चाहो, बुला लो।

ऋषि लंकाः हाय, यह चीज़ तुम से लोग लेने से छोड़े देते हैं।

हज़रत क़िब्लाः तुम ने इस वक़्त वो गति जो हायल होती है, एक निगाह में तोड़ दी और उन को बेपायाँ-कनार दरिया में डाल दिया। इतनी जल्दी नहीं चाहता था। ख़ैर। आयन्दा एहतियात रखो। याद करेंगे। और दर हक़ीक़त वक़्त था कि मुझ से यह आरज़ू की।

S.V.: I tell you such an example you will never find ever and after. It is not a joke.

हज़रत क़िब्लाः भाई तुम लोग इस हालत से कब मुस्तफ़ीज़ होंगे। वक़्त जा रहा है।

S.V.: Souls are coming to you for the same purpose from the brighter world. About half a dozen are already here. Further arrival is checked this time as the human brain cannot work to the extent required for all of them at the same time or one after the other.

1-12-46

S.V.: You have come here for the world liberation. So many souls are waiting in the brighter world. You are gaining mastery over them.

5-12-46

हज़रत क़िब्ला: मेरी सज्जादा नशीनी के लिये मुँह चाहिये। क्या कोई ऐसी आत्मा मौजूद है जिस में यह ताक़त हो कि हर काम या (हर गाम) क़ुदरत के उस पर इन्कशाफ़ होने लगें। लोगों ने इस को मज़ाक़ समझ लिया। जो चौंका (मतलब **बिरजू** और **नन्हे** से है) उस ने अपने आप को सज्जादा नशीन समझ ही ज़ाहिर किया। समझ लिया हम कामिल हो गये। घर की सभ्यता सब हमारे पास रही। कुल हक़ हमीं को मिल गये। जुम्ला दौलत के हम ही पासबान हो गये। यह चीज़ धुनिया, जुलाहों के हिस्से में नहीं आती है। दिल चाहिये। वो कैसा? जिस में मैं समा चुका हूँ। क्या यह मिसाल कहीं मिल रही है। ज़रूर, सिर्फ़ एक मैं। क्या किसी में जिद्दत तबाअ ऐसी पाई जाती है। क्या sacrifice की मिसाल कोई और भी है। क्या

कोई हस्ती अब तक नमूदार हुई जिस में बहुत से आवरण आने से पहले ही उतर चुके हों। क्या कोई शख़्स ऐसी गति अपने साथ लाया जिस में महज़ असल ही असल छाई हुई हो। इन बातों को ढून्डिये तब पता चलेगा कि वाक़ई मेरा सज्जादा नशीन कौन हो सकता है। मैं समझता हूँ यह मिसाल बजुज़ तुम्हारे कहीं नहीं मिलेगी। क्या कोई बजुज़ मेरे फ़ख़्र कर सकता है कि मेरे बनाये हुये को पाये के बुजुर्गों ने अपना लिया हो। यह हिस्सा वाक़ई मेरी ही क़िस्मत में आया, और है। इस वक़्त की ईजाद अगर वाक़ई आप लोगों को सुनाई जावे और इस को इसी हैसियत से देखा जावे तो हरगिज़ इस की मिसाल कहीं और जगह न मिलेगी।

ईजादः बड़ा circle जिस को Region of Heart कहा है इस की इन्तहा वहीं तक है जिस के आगे महज ज़ात ही ज़ात ख़लिस सूरत में रह जाती है। और इसी में बड़ी-बड़ी मोक्ष अत्माओं की तैराकी ज़िन्दगी के बाद भी होती रहती है। इस के (**राम चन्द्र,** सज्जादा नशीन) ख़याल में आया कि इस Region को पहली ही मर्तबा क्यों न ले लिया जावे ताकि इसी की सफ़ाई पहले ही से शुरु कर दी जावे और इस के बाद इस में वो ताक़त जो हासिल करना है, पहली ही तवज्जह में क्यों न दे दी जावे। चुनाँचे इस ने यही अमल किया। फ़ायदा इस का कुछ दिनों बाद नज़र आवेगा।

7-12-46

ट्रेन में लख़ीमपुर जाते वक़्त

हज़रत क़िब्लाः मरहबा इस समझ पर। ख़ुदा करे क़ुदरत के राज़

तुम से खुल जावें और मख़लूक़ ख़ुदा को फ़ायदा पहुँचे। अब तक जिन जिन लोगों ने अभ्यास किये हैं और बताये हैं, बड़ी मेहनत से सिद्ध हुये। रियाज़तें कीं। ख़ाक छानी, दर बदर फिरे तब कहीं बमुश्किल तमाम एक झलक दिखाई दे गई। और बहुत से जो इस नेमते उज़मा से महरूम रह गये। सबब यह था कि उन्होंने आसान चीज़ को मुश्किल तरीक़े में हासिल करना चाहा। उस में और भी पेंच डाल दिये। कितनी आसान चीज़ लोगों ने ना-समझी से जो बिल्कुल क़रीब है, तवज्जह नहीं फ़रमाई। तरीक़े बहुत से ईजाद हुये। अमल किये गये मगर गरमी ही गरमी हिस्से में आई। इस को लोग बहुत कुछ समझ बैठे। जोलानिगाह में तेज़ी और उभार को रूहानियत समझा, और यही परदा हायल होता रहा। असलियत की तरफ़ इन का रुझान न हुवा। इसी में ग़ल्ताँ-पेचाँ रहे। असलियत की ख़बर न थी। अब ज़माना आ गया है। और मेरी क़िस्मत से तुम ऐसी हस्ती ज़ाहिर हो गई। तुम ने जिनी आसानी से सीखा है इस से चोगुना आसान तरीक़ा दूसरों के लिये बना दिया गया है। इस वक़्त क्या ग़ज़ब का ख़याल तुम्हारे दिल में समाया और आख़िर को गुत्थी सुलझा ही ली। वो यह था कि जिस वक़्त इन्सान अपने काम से चौंके, अपने आप को उसी में चिपका हुवा तसव्वुर फ़रमाये। जब होश आवे, उसी तरफ़ ज़ोर दे ले। उस का और इस सहज अमल का तमाशा देखे। इस में कुल stages अमलन् पार होंगे। आख़िर को छट छटा कर वही चीज़ जिस पर हम को पहुँचना है, रह जावेगी। फिर उस में घुस पड़ो और तमाश देखो। आगे फिर। इस लिये कि जब कोई इस हालत पर पहुँच जावे तो फिर मुझ से सवाल करे। क्या अजब है कि उस को ख़ुद ब ख़ुद दीदार नसीब हो जाये।

इस की फ़िलास्फ़ी अगर लोगों को ज़रूरत हो तो तुम ख़ुद बयान कर देना।

22-12-46

हज़रत क़िब्ला: तुम्हारी ग़ीबत में अगर कोई सतसंगी यहाँ आ जावे और मेरे कोच (couch) के पास बैठ कर अगर फ़ैज़ लिया चाहे तो मैं फ़ौरन् उस के लिये मौजूद हो जाऊँगा। जब तक जी न घबरावे, बैठा रहे। ज़्यादती होने पर मैं ख़ुद वहां से हट जाऊँगा।

30-12-46

S.V.: I was thunderstruck to see certain things during your tour to villages in your Zamindari. My Lord was really roaming in the circuit by the bank of the river surrounded by. He was always thinking of your safety and he banished a few persons not wanting in the Society from the suburbs of the village making your way safe. Boys! Here is the example for you to copy out of intense love and devotion on the part of **Ram Chandra**.

This thing is of course, rare, but it does not mean that a man cannot reach this stage. I have given so many dictations for our boys to copy out.

"Love plays its part", is the result.

2-1-47

हज़रत क़िब्लाः आज वक़्त 9 बजे शब **हरी बाबू** को पूरा command **आलमे सुग़रा** का दे दिया गया। वो दायरा-ए विलायत में है। उस की ड्युटी लगेगी। निगरानी उस की **रामेशर प्रशाद** रखेंगे। **शाहजहाँपुर** का सर्कल जो **मथुरा** के अब्दाल के पास था इस को दे दिया जावे। अक़ीदा अपना दुरस्त रखे और काम पर मामूर हो जावे। पहली ड्युटी **शाहजहाँपुर** की सफ़ाई की होगी। उस के बाद जो ड्युटी होगी, बतला दी जावेगी। अब्दाल **मथुरा** को इसी वक़्त इत्तला दे दी कि वो सिर्फ़ **मथुरा** में काम करे। (9 बज कर 20 मिनट पर मथुरा के अब्दाल को इत्तिला दे दी गई और उस का ताल्लुक़ **शाहजहाँपुर** से हटा दिया गया।) यह बातें सब मुन्दरिज पण्डित **रामेशर प्रशाद** हुईं। बक़लम **रामेशर प्रशाद**।

3-1-47

लार्ड कृष्णाः गया का काम बहुत ज़रूरी है। मोहलत दे सकता हूँ। जाना पड़ेगा। **बनारस** और **गया** का काम ख़्वाह एक ही साथ ले लो, ख़्वाह एक-एक कर के। अगर चाहो तो **बनारस** का काम पहले निपटा दो, उस के बाद फिर **गया** चले जाना। बहर हाल तुम्हारी मर्ज़ी पर छोड़ता हूँ। **गया** में ज़्यादा वक़्त लगेगा। **बनारस** में तीन दिन लगातार काम करना होगा। अगर ठीक तरह से किया जावे, वरना एक दो रोज़ ज़्यादा लग जायेंगे।

13-1-47

हज़रत क़िब्ला: आज बतारीख़ 13 जनवरी, सन् 1947 ई०, वक़्त 7.45 शब को **एक शख़्स साकिन चन्द्र लोक** को जो एक अरसे से इन्तज़ार में था, इस वक़्त **रामचन्द्र** ने हुकमन् मेरे हाथ पर बैअत किया। जब ज़रूरत होगी और मैं मुनासिब समझूंगा तो और लोगों को भी जो इस के अहल होंगे, बैअत करा दूँगा। यह शख़्स अक्सर मौजूद रहा करेगा। इस की तालीम का वही तरीक़ा है जो इक़रार बैअत के वक़्त किया गया। सतसंग में यह शख़्स शरीक हुवा करेगा।

14-1-47 at 9.40 am

हज़रत क़िब्ला: जब कोई ख़बर खुलने वाली होती है तो इस से पहले इस में चक्कर पड़ना शुरु हो जाते हैं। चक्कर क्या होते हैं? वो ही जिन को आप लोग मुसीबत ख़याल करते हैं। मैं रात भर Brighter World में रहा, इस वक़्त भी हूँ। दुनिया की हालत दिगरगूं हो रही है। पेंच इज़्हार होने लगे। कुछ उक़्दा खुला ही चाहता है। मग़रबी तहज़ीब अपने मस्कन से रुख़सत हुवा चाहती है।

श्री कृष्णजी महाराजः दुनिया ने रुख़ फेर लिया। बरबादी के आसार नुमायाँ होने लगे। तुम्हारी will ने अब असर किया। अब कुछ रुख़ और है। क़ुदरत बहुतों को इस दुनिया से रुख़्सत करना चाहती है। शिग़ाफ़ लग चुका है। भलाई जब ही होगी जब काफ़ी बरबादी हो चुकेगी। मेरा चक्र ज़िन्दगी भर काम करता रहा, आख़िर को साफ़ कर

के मैं रुख़सत हो गया। अब उस की मुझे ज़रूरत नहीं रही। इस से तुम काम लो। आज से यह चीज़ तुम्हारे हुक्म पर काम करेगी। यह चीज़ अब तुम्हारे साथ जावेगी।

श्री राधाजीः (काल रूप दिखला कर फ़रमाया) भाई, तुम ने मेरा यह रूप देख लिया। यही हुक्म है। मैं भी इस ड्युटी पर मामूर की गई हूँ।

हज़रत क़िब्लाः यह इस वक़्त का dictation है, गोया तुम को पेश्तर से ही बहुत सी बातों से आगाह कर दिया गया है। सच पूछो तो तुम्हें अब फ़ुरसत नहीं। Working आता रहेगा। जो ड्युटी जिस के लायक़ हो, impart कर देना। यह इशारे हैं जो बतलाये गये।

S.V.: You have been bestowed with a thorough power this very time. Always utilise it in godly work and no other place unless it is thoroughly recommended. Time has made you fit to work.

Radhaji is also deputed for the work ahead.

श्री कृष्णजी महाराजः तुम को तुम्हारे गुरु महाराज के रूप में मुमकिन है लोगों ने देखा हो। मगर मेरे रूप में किसी ने नहीं देखा। अगर देखे तो वही फ़ैज़ मिलेगा जो मुझ से मिलता है। मगर तुम ने अपनी हालत ऐसी कर ली है जैसे कछुवा, कि जब हड्डी के अन्दर होता है तो फिर हाथ मुँह सब अपने अन्दर कर लेता है।

S.V.: Again my dictation as I have hinted down somewhere.

The same: You will build the temple of spirituality on the bones of others.

Sometimes you flow (fly) in rage, of course on right point (the godly power begins to work). (Then) what your Guru does? He loosens the string at the same time and you get down at once. When you find such happenings in your family or elsewhere; why don't you clear the atmosphere instantly, instead of flowing (flying) in rage; (on RC's saying something), said, I shall take the reins of your family in my hand and shall destruct some part, if needed. Fear not, you will be consulted in (at) each step.

All of you should try to keep him on level. You (RC) should not lose balance at any time.

Look here, boys! Nature, to say, is well balanced in him in some form or the other, because he is everywhere and in our hearts too.

Boys! you go trying and trying to reach the goal in his lifetime. Such masters will never come again, I say, for a thousand years to come at least. After it he will make himself somebody for his own doings. This is another thing I told you just now. This is godly thing I am speaking of. It has no concern with representation. Possibly he may represent just before his Master. This is the thing not to know so early. The Nature may split her work as she desires.

वक़्त 7-20 बज कर रात में

हज़रत क़िब्ला: दोनों (**मदन मोहन लाल और रामेशर**) के यह काम सुपुर्द करता हूँ कि ज़मीं में जुम्बिश न होने पावे, और तुम्हारा चक्कर काम करेगा।

ऋषि लंका: मुझ को वक़्त-वक़्त पर जैसी ज़रूरत होगी, काम की हिदायतें मिलती रहेंगी। **मदन मोहन लाल** और **रामेशर** दोनों आज ही से अपने काम में मशग़ूल हो जायें। इन की ड्युटी लगातार यह ही रहेगी। या-वोह करने की ज़रूरत नहीं। **मदन मोहन लाल**! तुम ने जैसे तसाहली काम में की, ऐसी नहीं होना चाहिये। आप नतीजे के ज़ुम्मेवार हैं। काम किये जाओ।

16-1-47

S.V.: Boys! try to be as Suksham (सूक्ष्म) (Lighthearted) as possible. Weight of thoughts are not likely to be yours. This you will feel in the long run; before it, are the results of your own doings. Surroundings have also thrown their effect on sumptuous heart. Time is passing on. I repeat the sentence daily. You are not coming up to the mark. What you are getting is the result of his (RC) kindness. You are not making yourself (yourselves) deserving for the High thing. I say all for your own benefit.

Who knows the Nature may call him at any moment. He is in a way restricted in his work on account of flesh and bones. Health decay amounts much.

I witness the scene at **Seohara** and find you (**Ramji Saksena**) busy all the time. See that you are also busy in things befitting you.

18-1-47 7.05 pm

S.V.: I do not want to see **Russia** in the present state. It is the root cause of all the miseries.

19-1-47

याज्ञवलक्य ऋषिः तुम ने मुझ को सिर्फ़ एक बार बुलाया था। आज अपनी तबियत से ख़ुद आया हूँ। दुनिया की हालत बहुत दिगरगूं है। आसार ख़राब हैं। जा रहा हूँ।

26-1-47 2 बज कर 5 मिनट दो पहर

हज़रत क़िब्लाः रामेशर प्रशाद से कह दो कि उन की बीवी को 2 बज कर 5 मिनट पर सिलसिला **सहज मार्ग** में क़ायम कर दिया गया। इस को मैं **इजाज़त शर्तिया** देता हूँ। वो आज से औरतों में काम करेगी। शुरु कर दे। बल्कि बेहतर तो यह होगा कि कल 27 जनवरी, सन् 47 ई० (बसंत पंचमी का दिन) को जब यहां आवे, वहीं से औरतों को जो इस वक़्त मौजूद हों, तवज्जह देती रहे। यह दिन मुबारक दिन है और मिशन इस को बहुत अहमियत देता है। लिहाज़ा यह दिन मैं ने इस की तालीम शुरु करने का भी रखा। हिम्मत बांध कर काम शुरु कर दे। यह नहीं हो सकता कि असर न हो।

27-1-47 (बसंत पंचमी, सोमवार - 11.00 pm)

S.V.: We congratulate the members of the Mission for celebrating our Lord's Birthday.

चैतन्य महाप्रभुः उड़ीसा जाने में क्यों देर कर रहे हो। तुम्हारी वहां बहुत ज़रूरत है। काम वहीं मिलेगा।

हज़रत क़िब्लाः मेरी राय तो यह है कि तुम साथ ही साथ और सफ़र जो दरपेश हैं, इस के साथ ही ले लो।

बनारस और **गया** में भी तुम को जाना है। **गया** का काम बहुत ज़रूरी है। **पुरी (जगन्नाथ पुरी)** अगर मैं ने ज़रूरत समझी, भेज दूंगा। एक बड़ा काम जो तुम ने इस वक़्त तक शुरु नहीं किया, वो वही है जो मैं पिछले नोट में कह चुका हूँ। ख़ैर बतौर याद्दाश्त कहे देता हूँ, यानी किताबों को दुरस्त करना। इस में बड़ा वक़्त लगेगा और तुम्हारे बाद कोई शख़्स ऐसा मालूम नहीं होता जो इस काम को कर सके। **मनुस्मृति** तुम ने शुरु की थी, चन्द श्लोक लिख कर रह गये। उस को ख़त्म करो। फिर दूसरी किताब लो और फिर तीसरी।

S.V.: Look here! This is not the only work for you. I want that you may cut the true figures (**Richaas**) from **Vedas** and write commentary on it. The commentary, if written by you, will be matchless. Huge work is piled up for you or is in store for you. You are not getting time for these things. Service is a great drawback. Is there any helper for such work? Devote at least an hour daily. For you I want a man with pen and pad.

31-1-47

हज़रत क़िब्लाः कारण बना। उस के मुताबिक़ ज़हूर की सूरत पैदा हो गई। जिस्म धारण किया, उस में जो काम किये, उस ने अपने **कारण** में नक़्श बना दिये। वक़्त आया, जिस्म छोड़ दिया। अब वो चीज़ जो जिस्म ने बनाई, अगली हस्ती के ज़हूर का कारण हो गई। अब उस में जो कुछ कर्म किये, जब तक रहे, कारण रहा। नक़्श बने। और यह सिलसिला मुत्वातर जारी है। हम ने जाने कितने कारण बनाये हैं। एक चीज़ **उपादान कारण** भी है। जिस से इन का सिलसिला है। इस को शुरुआत के लाने की वजह भी कहा जा सकता है।

सवालः जिस्म छोड़ने के बाद **कारण** का मक़ाम कहां है, यानी कहां रहता है?

S.V.: This is the legal department of Nature - सज़ा और जज़ा are orders from this place, according to the **Mohammedan** belief. It is also connected with the form beneath and above.

सवालः कारण को साफ़ करने का क्या तरीक़ा है?

जवाब : भोग।

सवालः स्वामी जी ने **राजयोग** में फ़रमाया है कि बहुत से सूक्ष्म शरीर बना कर भोग जल्दी भोगे जा सकते हैं। इस का क्या तरीक़ा है? और भोग पूरे होने के बाद हम को जिस्म छोड़ देना होगा या रहा भी जा सकता है।

S.V.: Look here! These are meant for the perfect yogis who after finishing their career of life want to get rid of them totally. The method is not cheap. It requires a greater power and can only be attained by the will of perfect yogis. Method is quite correct. Mahatma **Ram Chandraji** of **Fatehgarh** somewhere played this part. I am clearing this point. He has not done this for himself but for others. How I came to know this method? "In the state of trance." Reading of Nature commenced, I find out the remedy and explained to others. There is one thing more above it which if done, then we need not bother ourselves with the method, I described somewhere; above it there is one thing more which only Mahatma **Ram Chandraji** of **Fatehgarh** was knowing.

सवाल: किस stage पर राज योगी इस तरीक़े को इस्तेमाल में ला सकता है?

S.V. : In the state which your Guru belonged to (Hint to last thing mentioned above).

1-2-47

S.V.: One thing you ought to remember. Will, if once exercised can bring forth the desired result, but it is very difficult to invert it what has been done before. To go beyond the Nature is a sin; unless a man is made of special calibre.

हज़रत क़िब्लाः जब तक कि ख़ास तौर पर कोई हस्ती न बनाई जाये उस वक़्त तक उस में यह बात पैदा नहीं होती कि जो चाहे वो कर के दिखा दे और जब चाहे उस को फिर उसी सूरत में वापिस ले जाये।

2-2-47

S.V.: I have given some hints to **Mr. Mudaliar** for creating Laya Avastha (लय अवस्था). Since you (**Ramji**) are going with the same method, they will be useful to you as well. He (RC) has arranged for a copy to be sent to you in due course. They are perfectly necessary for those who want to reach God indirectly, that is through one's Master.

4-2-47

हज़रत क़िब्लाः मिश्रा जी डरते क्यों हैं जब कि यह कह दिया गया कि दिक़ का मरीज़ जिस की हड्डियां गल चुकी हों, उस के भी रूहानी stages इस तरह से पार कराये जा सकते हैं कि उस को ख़बर न हो, और न ज़ोर पड़े। यह बात ज़रूर है कि अगर जाँचना चाहेंगे तो ज़रूर पड़ेगा क्यों कि उस चीज़ को उभारना पड़ेगा। क्या यह चीज़ें ऐसी सहल हैं और इतनी जलदी दी जाती हैं? यह उन की क़िस्मत है। इस का लेना बहुत कुछ उन की मरज़ी पर मुनेहसिर है। चाहें तो तैयार हो जायें। बाबू **मदन मोहन लाल** से कह दो कि उन से ठीक तौर से दरियाफ़्त कर लेवें। ज़बरदस्ती नहीं है, उन की ख़ुशी पर है। मैं **अब्दुलग़नी** नहीं हूँ कि कह कर रह जाऊँ।

6-2-47

हज़रत किब्ला: कौन कहता है कि जिस चक्र से आदमी पार हो जाता है, उस को उस पर कमाल नहीं होता। यह विद्या ठोसता से बिल्कुल अलैहदा है; बल्कि वो हालत है जो सृष्टि पैदा होने से पहले थी। और यह वो असल ख़याल था जो पैदायशे आलम का सबब हुवा और ठोसता ज़हूर में आई। यह वो ताक़त है जिस का नतीजा (बिला बरामद हुये) बच नहीं सकता। इस में सब अन्सर मौजूद थे जिन्होंने मुख़्तलिफ़ शरीरों की रचना की। इन को अगर पांच हिस्सों में तक़सीम कर दिया जाये तो हर एक हिस्से में वो-वो ताक़त आ जाती है जो आग़ाज़े आलम का सबब बनी है। पहले क्या था। हर हिस्सा अपनी-अपनी ताक़त मख़सूस रखता था। यह ख़सूसियत रखते हुये भी हर हिस्से में पांचों ताक़तें छुपी हुई थीं। जो हिस्सा जिस ताक़त के लिये मख़सूस था और बिशेषता जिस हिस्से में थी उस के साथ भी पांचों ताक़तों ने मिलकर काम किया। यानी उस विशेषता ने अपना हिस्सा (अलबत्ता) सब से फ़ायक़ रखा। अब हर हिस्से में पांच-पांच हिस्से हो गये। सब को अगर मिला दिया (यानी जोड़ा) जावे तो तादाद पच्चीस (25) की हो जावेगी। यह चीज़ **सुग़रा** यानी **पिण्ड** का मिल मिला कर जौहर बनती है। इस का अहाता (क़याम) **पिण्ड शरीर** में ज़्यादा पाया जाता है। यह **पिण्ड** का हाल है। **ब्रह्माण्ड** में इस का निचोड़ (यानी जौहर) जाता है। और इस से आगे इस का निचोड़ और उस के आगे उस का निचोड़। ग़र्ज़ेकि यह चीज़ ख़ालिस (सूक्ष्म) होते-होते आख़िर को बिल्कुल ख़ालिस हो कर असल में मिल जाती है।

अब सवाल ताक़तों का आता है। जो ताक़त कि एक चक्र पर है वही दूसरे पर मिलेगी। वही तीसरे पर, चौथे और पांचवें पर। फिर फ़र्क़ क्या होगा।

एक से दूसरे पर लताफ़त ज़्यादा होगी। इस तरह हर हिस्सा (चक्र) में यही लताफ़त बढ़ती चली जायेगी। इस हिस्से योग पर वो लोग आते हैं जो इस से पेश्तर के हिस्से को ख़त्म कर चुकते हैं। या यूं कहो कि जिस को इस की ज़रूरत होती है। ख़ुलूस को ख़ुलूस से रगड़ देने में (से) ख़ुलूस ही पैदा होगा। जिस हिस्से का कि ख़ुलूस है उसी हिस्से की चीज़ बढ़ेगी। लिहाज़ा उस में जो ताक़तें पोशीदा हैं अगर उन से काम लिया जाये तो इत्मीनान रखिये (बिला निकले) नतीजा बच नहीं सकता। क्यों कि नेचर (Nature) ने जब इस से काम लिया, नतीजा मतलूब बरामद हो गया। इस से पहले सिवाये इस चीज़ के और कुछ न था। मुख़्तसर (सूक्ष्म, लतीफ़) चीज़ ज़्यादा फैलाव रखती है। नुक़्ता फैल कर बढ़ाव की शक्ल पैदा कर लेता है। बस यही समझो। आप इस point पर आ जाइये फिर देखिये वही सूरतें फ़र्दियत के साथ आप से बरामद होती हैं या नहीं, जो कुल से कुलियत के साथ बरामद हुईं थीं। असल में इन्हीं धारों में अपने आप को शामिल कर देना है। क्या यह ताक़त नहीं कही जा सकती।

इस का माहसल बस यही है कि आवागवन से अपना छुटकारा हासिल कर ले।

13-2-47

हनूमान जी महाराजः यह पहला मौक़ा है कि इस दुनिया से कूच करने के बाद मैं इस हैसियत से आया हूँ।

महाभारत में सिर्फ़ **कृष्ण जी** की यह ताक़त थी कि जब चाहा मुझ से बुला कर काम ले लिया। दुनिया में कोई ऐसी ताक़त अभी तक पैदा ही नहीं हुई। मेरा काम संग्राम करने का है। मैं हर वक़्त **रामचन्द्रजी महाराज** के साथ रहा। सिला क्या मिला। पूँछ लगा दी गई। मैं शहज़ादा था और छत्री (क्षत्री) क़ौम थी। बहादुरी के कारनामे मशहूर हैं। यह सब माता **अञ्जनी** की बदौलत हैं। वो ब्रह्मचारिणी थी। ठोस औलाद पैदा की।

जामवन्त, नल वगैराः, यह सब मोक्ष पा गये। **जामवन्त** को रीछ बताया जाता है।

सवाल हनूमान जी के मन्त्र और बलीया (दैवी आपत्तियाँ, भूत-प्रेत) के जन्त्र के असर और ताक़त की बाबत था।

जवाबः ताक़त तुम्हारे गुरु में है। आँखें नहीं कि देख सको। कहे देता हूँ, दुनिया में इन से अच्छा पार्ट **रामचन्द्र जी महाराज** के बाद किसी ने नहीं किया, मिसाल नहीं। जवाहरात उगल दिये। एक बात बताता हूँ। बहादुर आदमी के दिमाग़ नहीं होता। यह नहीं कि खोपड़ी ख़ाली होती है। मतलब यह है कि वो अपने आप को उस रूप में लय कर डालता है। कोई ख़याल बजुज़ उस के क़ायम नहीं

रहता, इस लिये उस की मोक्ष होना ज़रूरी है। मगर भाई जो चीज़ कि तुम ने इस वक़्त बख़शी है, क्या कहूँ। यह हुक्म था जिस की तुम ने तामील की।

S.V.: Look here, he has taken from this date the duty of guarding you at times when it is perfectly needed.

हनुमान जी: इस क़िस्म की तवज्जह जैसी कि आप ने हुकमन् दी थी, चाहता हूँ कि पाता रहूँ। **रामचन्द्र जी महाराज** का अब वजूद नहीं है।

S.V. : He (**Hanumanji**) has lost his capacity. He is one like you.

हज़रत क़िब्ला: बड़े ज़ोम में तशरीफ़ लाये थे, और ठीक भी था कि तमाम उम्र उन की उसी में लय अवस्था रही। और यही चीज़ उन के साथ गई। मैं ने इस वक़्त उन की capacity क़तअन् काफ़ूर कर दी और वो ज़ोम और हिम्मत जो उन में मौजूद था, अब नहीं रहा। लोचदार हालत ले कर गये। नफ़्स बढ़ रहा था। लोग फ़ायदा बेजा उठा रहे थे। क़त्ल के वक़्त उस ताक़त से लोग मदद् तलब करते थे।

हनुमान जी महाराज: मेरे पूंछ नहीं थी और इस लिये कोई चीज़ लपेटी भी नहीं गई। मेरी will power यानी क़ुव्वतें इरादी बहुत ज़बरदस्त थी। एक झटके में बड़ी से बड़ी इमारत ढा सकता था।

मैं ने **लंका** समन्दर की उस गैस से फूँकी थी जिस का **दफ़िया रावण** के पास न था। **लंका** के चारों तरफ़ यह चीज़ बहुत पाई जाती है। मैं ने अपनी इच्छा शक्ति से यह चीज़ समन्दर से निकाल कर उस तरफ़ रुजूअ कर दी थी। ताक़त में उस वक़्त मेरा कोई सानी न था, बजुज़ मालिक के। अगर चाहता तो एक झटके में **लंका** को उलट सकता था, लेकिन इस से नुक़सान माई **सीता जी** के पहुँचने का था। इसलिये नहीं किया। इलावा इस के बहुत सी बातें जो ज़रूरी थीं, रह जातीं। क्या हिमाक़त है **लंका** और **सोने** की! बिल्कुल ग़लत। इस से मुराद यह है कि उस से बेहतर इमारत वाक़ई कहीं नहीं थी। ख़याल करो कितनी लम्बी चौड़ी **लंका** थी। कुल दुनिया में अगर सोना इकट्ठा किया जाये तो इस हद तक नहीं हो सकता। मुमकिन है कि उस से एक आध कंगूरा बन सके। राजाओं के महलों में जवाहरात का काम होता है और सोना भी इमारतों में ज़ेबाइश के लिये लगाया जाता है। यह बात ज़रूर थी और ज़्यादा तादाद सोने की इस लिहाज़ से मौज़ूद थी।

14-2-47

S.V.: He (**Hanumanji**) comes to you for training.

हनुमान जी महाराजः हिन्दुस्तान की तरक़्क़ी उस वक़्त हो सकती है जब औलाद नेक पैदा की जाये। माँ का असर औलाद पर बहुत पड़ता है और बच्चे में असर बहुत आता है। निचली ख़िल्त (वात, पित्त, कफ़, रक़्त आदि) उसी (माँ) का हिस्सा होता है। आवरण बाप का होता है।

नोटः हम लोग यानी बिरादरे मोहतरम **रामचन्द्रजी**, **रामेशर प्रशाद**, **मदन मोहन लाल**, **मनेशर सिंह** और **राजा बहादुर** बैठे। दौराने बात चीत राजा बहादुर ने दरियाफ़्त किया कि **शंकर** जिन को **शिव**, **महादेव**, **कैलाश पति** वगैरः हिन्दु जाति कहती है और लिंग आकार को **शंकर** और आराध्य को **पारबती** जी तसव्वुर कर के पूजा करते हैं। इस की असलियत क्या है?

इस बात को सुन कर समर्थ गुरु महाराज की इजाज़त हासिल कर के बिरादरे मोहतरम **रामचन्द्रजी** ने **शंकर जी** का आवाहन किया। वो तशरीफ़ लाये और मुन्दरजा ज़ैल dictate दिया।

योगीराज शंकर जीः कुजा शक्ति और कुजा मैं। ऐसी शक्ति जिसे क्षय (फ़ना करने वाली) शक्ति कहते हैं, कभी ज़हूर में नहीं आ सकती। यानी जिस्म धारी नहीं हो सकती। उस से लगाव ज़रूर पैदा किया जा सकता है। मैं ने अपनी काया कल्प न जाने कितनी मर्तबा योग बल से की। मैं मुद्दतों तक ज़िन्दा रहा। अपने योग बल से जब चाहता था जवान हो जाता था। **कैलाश** मेरा स्थान था। वहाँ मैं रहता था और तालीम करता था। बड़े-बड़े ऋषि मुझ से अपनी गुथ्थियाँ सुलझाते थे। मैं ने योग बल से बड़ी ताकतें हासिल कीं थीं। **रावण** का उस्ताद मैं ही था। उस ने ताक़तें हासिल कर के विद्या का नाजायज़ फ़ायदा उठाया। उस की अक़्ल बिगड़ गई थी। चन्द वो ताक़तें उस को हासिल थीं जिन को अगर मौजूदा ज़बान में **पंच अग्नि विद्या** कहा जाये तो सही है। इस के ऊपर के हिस्से का उस को कमाल न था। मगर जितना किया था उस में परिपूर्ण था।

रामावतार से ले कर मुद्दतों मेरा क़याम रहा है। कुछ हिस्सा **कृष्णावतार** में भी था। मगर पूजा मेरी ही की जाती है। और मेरी ही निस्बत **पार्बती** जी से क़रार दी जाती है। जो ग़लत है। मैं बाल ब्रह्मचारी था। मेरी शादी कभी नहीं हुई। लोगों के दिमाग़ फिर गये हैं। क्या शक्ल बना कर मेरी पूजा की जाती है। मेरी पूजा का आग़ाज इस तरीक़ा में बेवकूफ़ों और शोहदों ने कर दिया। मैं हर शक्ल में नमूदार हो सकता हूँ। लगन चाहिये। मिसाल मौजूद है (मुराद **हज़रत क़िब्ला**)। **हठ योग** की मुश्किलात जो पेश आवें, वो मैं अब भी हल कर सकता हूँ।

लार्ड कृष्णाः तुम को (RC) साल भर से ज़्यादा हो गया **मथुरा** में पहुँचे। हुक्म है तुम्हारे लिये कि साल मे एक फेरा ज़रूर करो। एक दौरा अप्रैल सन 47 ई० के आख़िर तक तुम्हारा ज़रूर होना चाहिये।

16-2-47

नोटः यह dictate माता **पार्बती जी** का बसिलसिला **शंकरजी** मौरख़ा 14 फर्वरी है।

माता पार्बती जीः मैं एक राजा की लड़की थी। यह क़िस्सा कि **महादेव** योगीराज के साथ मेरी शादी हुई ग़लत है। मैं एक सतित स्त्री थी। बर (शोहर) भी ऐसा ही चाहती थी। लिहाज़ा उस की जुस्तजू या टटोल मैं ने अपने दिल में की (पति की शक्ल सामने आ गई) यह एक **दक्खन देश** का शहज़ादा था। इस को मेरे साथ

विवाह पसंद न था। मैं उस को गुण सुन चुकी थी। यह शहज़ादा बाजगुज़ार था। मेरी लौ उसी से लग गई थी और मैं ने उस को हासिल करने लिये तपस्या की थी। उस वक़्त मैं एक कन्या थी यानी कमसिन। मैं ने बरसों (वर्षों) उस की याद में गुज़ार दीं। ईश्वर से प्रार्थना की। जाप किये। आख़िर को उस के दिल पर असर पड़ा और मेरी शादी हो गई। बरसों मैं ने उस के साथ गुज़ारीं। आख़िर को जब वो इस **मृत लोक** (मृत्यु लोक) से सिधारा, मैं ने भी सती हो कर जान दी। **दक्ष** एक बड़ा राजा था। मेरे साथ जो क़िस्सा मन्सूब किया जाता है, यानी यज्ञ में जलने का, ऐसा नहीं है। उन का यज्ञ बिधंश (विध्वंस) ज़रूर हुवा मगर यह बात नहीं थी। ऐसी बातें एक राजा के लिये उस वक़्त की सभ्याता से क़तई बईद हैं। राजा ऐसा नहीं कर सकता कि हम को बुलावा न देता।

एक पण्डित ने जो यज्ञ कर रहा था, किसी वजह से उस में गिर कर इत्तफ़ाक से जान दे दी थी। यज्ञ बहुत बड़ा यज्ञ था। देवता भी आवाहन किये गये थे। मैं भी मौजूद थी। यज्ञ में इस तरह पर एक ब्राह्मण का जान देना यह समझा जाता था कि यह दुराचारी है। इसलिये इस को यह जामा पहनाया गया। लड़को! मेरे सतीत्व की हालत ज़रा आगे बढ़ कर देखो। हम लोगों को ध्यान कराया। यह चीज़ तुम से और हिन्दुओं से आलोप हो गई। देखो एक **सतित स्त्री** अपने पति को बिल्कुल ऐसा समझती है कि उस की निगाह उस से बाहर कभी नहीं जाती है। यह ताक़त बिल्कुल उसूल के अन्दर है। यह काम स्त्रियों का है कि अपने पती को सब कुछ समझ लें। आदमियों का यह काम कि वो अपने गुरु या ईश्वर को सब कुछ

समझ लें। उस से बाहर निगाह कभी न जाये। एक बात और बताती हूँ। रूहानी इल्म वाक़ई गुरु से मिलता है। ईश्वर के पैमाएश की ताक़त किसी में नहीं होती। इस लिये मुफ़ीद यही रहेगा कि अपने गुरु को सब कुछ समझ बैठे। इस तरह से उस का डोरा (तार, ताल्लुक़, सम्बन्ध) ज़ात या ईश्वर से लग सकेगा। और फिर उस की निगाह बिल्कुल उसी पुरुष परमात्मा में हो जायेगी। जब यह हो गया मतलब सिद्ध हो गया। **किसी सतित स्त्री का शोहर कभी दुराचारी नहीं हुवा। दक्ष** उस वक़्त का एक title यानी ख़िताब था।

बसवाल बाबत **मन्दोदरी** और **रावण,** स्वामी जी ने जवाब दिया।

S.V.: Special cases are exempt. There are always exceptions in the Nature too; of course very seldom. **दक्ष** उस वक़्त का एक title (ख़िताब) था।

19-2-47

S.V: That will be the last part of your programme, I mean the utilisation of **Kshac Shakti (क्षय शक्ति)** in the end of the world. Look here, these powers are given to one always, not generally. You do not know your own state which is the only cause of all your misery, pain and troubles. You are attached to that great power, the remnants of which are still found in your body.

हज़रत क़िब्लाः अरे भाई, बात साफ़ है। मुमकिन नहीं कि

आग के क़रीब हो कर आंच न महसूस हो। यह बात किसी की समझ में न आवेगी, लिहाज़ा इस को ज़्यादा वाज़ेअ करना बेकार है। और इस से किसी का ताल्लुक़ भी नहीं।

S.V.: The resurrection will be performed by you, I mean the last finishing touch of destruction or the extinction of life in toto.

10-3-47

कबीर साहब ने दरियाफ़्त किया कि **बनारस** कब जा रहे हो? मैं ने अर्ज़ किया कि जून में इरादा है, बशर्तेकि आप बुज़ुर्गों ने इजाज़त दे दी। हुक्म दिया कि **कबीर चौरा** पर जाना और उस को उलट कर आना। मेरे connection जो मेरे शिष्यों से हैं, मैं नहीं चाहता कि अब रहें। काट दो। अपना सिलसिला मैं तुम्हीं में क़ायम करता हूँ। आख़िर को मुझ को वही करना पड़ेगा जो **स्वामी विवेकानन्द** जी महाराज ने किया है। मेरा तरीक़ा तालीम यही था जो तुम्हारा है। **शब्द** से चलता था और आख़िर में वही बात आ जाती थी। अपना काम बिलकुल तुम्हारे सुपुर्द करता हूँ। यानी अपनी शाख़ तुम में लय किये देता हूँ। इस की तुम्हारे गुरु महाराज ने इजाज़त दे दी है। सब बुज़ुर्गों ने मन्ज़ूर कर लिया है।

S.V.: Mine will go with you. My Master has slackened his connection. It is now you who will reproduce them in its own form. I had appointed you my representative a few years back.

चैतन्य महाप्रभुः मेरे भी connection मेरी सन्स्था से काट दो।

इस की ज़रूरत नहीं रही। सिर्फ़ एक ही रहना चाहिये।

हज़रत क़िब्लाः देखो **रामेश्वर**, क़ुदरत की मर्ज़ी हो कर रहती है।

मेरे सवाल के जवाब में हज़रत क़िब्ला ने यह फ़रमाया कि सिलसिला टूट जाने से यहां पर यह मतलब नहीं कि जाता रहा। मतलब यह है कि तुम बैहैसियत सज्जादानशीन के उन का आग़ाज़ करोगे। इस वक़्त तक का ताल्लुक़ होना जो जो लोग अपना **कबीर** साहब से समझते हैं, वो अब किसी के द्वारा नहीं रहेगा बलिक इस की बुनियाद तुम डालोगे और तुम्हारे ज़रिये से होगी। और connection भी तुम्हारे ही ज़रिये से जुड़ सकेगा। मैं मुनासिब समझता हूँ कि **रामेशर प्रशाद** को इस पंथ की तुम्हारे ज़रिये से इजाज़त दे दी जावे। सुबह बुलाना।

कबीर साहब ने अपना सज्जादा नशीन **रामचन्द्र** को क़ायम किया है।

हज़रत क़िब्लाः अब यह शाख़ मए दीगर शाख़ों के मुजमलन् **रामचन्द्र** से चलेगी। तवज्जह में वही कैफ़ियात होंगी जिन में इस क़िस्म की ताक़तें शामिल होंगी। मैं चाहता हूँ कि **कबीर** साहब को भी मेरे सिलसिले में शामिल कर लिया जावे। आयन्दा से जो बैअतें की जावेंगी उन का ताल्लुक़ **कबीर** साहब से भी रहेगा। अब सुनो। **चैतन्य महाप्रभु, स्वामी विवेकानन्द जी, मैं ख़ुद, बुद्ध भगवान, कबीर साहब** और हमारे **जग्गू** सब एक सिलसिले में हैं। हमारे

शिष्य जो हैं उन सब के ताल्लुक़ अब इसी सिलसिले से कर दो। यह कुल मिल कर **सहज मार्ग** के नाम से पुकारा जायेगा। यह duty **रामचन्द्र** की होगी। एक-एक कर के सब ले लो। बेहतर यह समझता हूँ कि जो लोग यहां पर मौजूद नहीं हैं, यानी जो बाहर हैं, उन के आने पर उन को समझा कर, बतला कर, ताकि उन को भी मालूम हो जाये, उन का सिलसिला अब ऐसा कर दो।

नोटः 11 मार्च सन् 1947 ई० को पं० **रामेशर प्रशाद** के connection जैसा कि हुक्म था, कर दिये गये।

19-3-47

हज़रत क़िब्लाः लोग ग़लती करेंगे अगर ऊपर लिखे हुये की तामील में मोतरिज़ होंगे।

31-3-47

हज़रत क़िब्लाः नक़्शा जो तुम्हारे सामने कई रोज़ से आ रहा है, यह बुनियाद उस तालीम की है जिस को तुम ने **centre** और **central region** कहा है। आज पहला ही दिन है कि इस क़िस्म की तालीम तुम ने शुरु की। तजुर्बे से मालूम हो जायेगा कि इस में क्या बात है और हर चीज़ कितनी मुश्किल तौर पर आती है **पहला circle** आम लोगों के लिये reserve है यानी शुरुआत इस पहले circle से होना चाहिये। इस के बाद रोशनी ख़ुद-ब-ख़ुद मिलती रहेगी। इस पहले circle में ही बहुत से stages पार होते हैं। **दूसरे**

circle में पहुँचे हुये आदमी ख़ाल-ख़ाल नज़र आते हैं। और तीसरे का कोई जिरबिल्ला। आगे क्या कहूँ। यह उक़्दा दर हक़ीक़त अब हल हुवा है। इस क़िसम की तालीम देने वाला कोई पैदा ही नहीं हुवा। और न उस के ख़याल में यह बात आई। पहले circle में नफ़्स ख़त्म होता है जिस के लिये बरसों रियाज़तें की जाती हैं। इसी circle का **पिण्ड** एक दाना है।

S.V.: Lord Krishna is here with you.

श्री कृष्णजी महाराजः यह **पहला circle** वो है जिस में मैदाने जंग में बैठ कर **अर्जुन** को **विराट शरीर** दिखलाया था। इस पहले circle की यह एक अद्ना हालत है जो दिखाई गई थी। जिस ने यह discovery की है, एवज़ में चाहता हूँ कुछ दे दूँ। दे दिया। जिस्म के छोड़ने के बाद कुलियतन् हिस्से में आयेगा।

लड़को! मैं चाहता हूँ, वक़्त रायगाँ मत खोओ। इन का कुछ ठीक नहीं, कब चल दें।

2-4-47

हज़रत क़िब्लाः Discovery जो पहले की है यानी **B Point**। तरीक़ा जो कुछ बताया गया, तवज्जह से लोग नहीं कर रहे हैं, वरना बड़ा फ़ायदा उठा जाते। जिन्होंने किया है, फ़ायदा हुवा होगा।

S.V.: This is the seat of the mind to its worst condition.

If one purifies it, he does everything for his betterment. You are taking your duty for it, although a little help is required. This kind of teaching is not an easier one. Mental strain is greatly needed. Here all miseries and thoughts give way. How beautiful point it is for Abhyasi. Nobody could discover (it)yet. I will call it an invention, not a discovery while going to the office you had a talk with your Bhai Saheb (Shri **Madan Mohan Lal**) telling him the way of success in spiritual life. That is the highest training you introduce at the (very) first step. "Lose yourself" is the key note. It is the sure prescription, unfailing.

हज़रत क़िब्लाः रामचन्द्र मैं कह सकता हूँ कि यह बातें किसी के दिमाग़ में आज तक उतरी ही नहीं। सब खोल कर रख जाओ, जो कुछ हो सके। सीने में रखने की ज़रूरत नहीं। इसलिये कि जो लिये चले गये, वो गये।

8-4-47

हज़रत क़िब्लाः मक़ामात की तवज्जह अक्सर दी गई हैं और फ़ायदा हुवा है। ढंग से भर दी गई हैं और फ़ायदा भी ठीक हुआ। मक़्सद भी हल हुये। और जो चाहा सो कर दिखाया। बुज़ुर्ग लोग बराबर कामयाब हुये और मुराद को पहुँचे। इस के मुतल्लिक़ तहक़ीक़ातें होती रहीं। मतलब मेरा तालीम से है यानी तालीम के मुताल्लिक़। मगर जब हम ज़्यादा बेहतर बात मिल जावे तो हम उसी को अपना औज़ार तालीम का क्यों न बना लें। बरसों का वक़्त क्यों न बचा लिया जावे। **हम दिल के मक़ाम से चलते हैं। दिल की**

तालीम इन पर (रामचन्द्र) ख़ास तौर से उतरी है। लोग इन से समझ लें, और अभी इस में और भी बातें खुलेंगी जो वक़्त पर मालूम हो जावेंगी। इस को एक तरफ़ रखता हूँ। अब Bracket वाला मसला आता है। यह बात इस ने अभी discover की है। इस की लोगों को मश्क़ें करना होंगी। मुज्मला बतलाऊँगा। मुख़्तसर में बताये देता हूँ। कोई जगह ऐसी ख़ाली नहीं है जहाँ पर क़ुदरत का दिमाग़ काम न कर रहा हो और जो जिस जगह पर है उसी अहाते के अन्दर काम अन्जाम देता है। अगर उस की दुरस्ती कर ली जावे तो उस की field कुल साफ़ हो जाती है। लिहाज़ा बेहतर यही होगा कि उस दिमाग़ पर तवज्जह फ़रमाई जावे। वो इस तरीक़े पर कि बेहतरीन सफ़ाई के साथ उस में वो power दी जावे जो हमारा माहसल है। और साथ ही साथ उस की field की भी जो ख़राब हो चुकी है, सफ़ाई करता चले। यह तरीक़ा मैं बहुत मौज़ूँ समझता हूँ। हर **चक्र** पर यह बात मिलेगी और यही तरीक़ा तालीम का हर जगह रहेगा। या तो आदमी सिर्फ़ दिल ही पर तवज्जह करता चले, उसी से सब मक़ामात रोशन होते चलेंगे। देर का सवाल ज़रूर रहता है, या फिर दिल को एक हालत पर पहुँचा कर बारी-बारी से यह मक़ामात ले लेना चाहिये। असल तत्व है।

20-4-47

हज़रत क़िब्ला: काम बढ़ रहा है। Workers तैयार करो। **हरी** के ज़रा कान ऐंठ दो। इतनी बड़ी duty और यह ढीलापन। मैं इस को तुम्हारी कमज़ोरी कहूँगा। तुम शिकायत करते हो कि लोगों में

direct catching की ताक़त नहीं आती। आजावे अगर काम sincerely किया जावे। यह कमी है। अगर लोग काम करते वक़्त एक निगाह दिल पर भी बनाये रखें तो करते-करते directions जल्द मिलने लगेंगी।

21-4-47

S.V.: The theory you have devised just now is correct. **Maya** and its fluid is the same. The power working in its centre is not the **Maya.** The power does not come from dry bones but from its generator, having the force in it.

सवाल: Creation के लिये matter कहां से आता है, जब कि यह कहा जाता है कि महा प्रलय में कुल matter और उस की Identity ख़त्म हो जाती है?

जवाब: एक से अनेक होने के ख़याल की हरकत माद्दा पैदा कर देती है।

S.V.: The idea of other than Himself created matter.

24-4-47

महात्मा बुद्धः यह इल्म दुनिया में खूब फैले। यही चीज़ predominate करेगी। **सहज मार्ग** वाक़ई सहज मार्ग है। इस से आसान रास्ता मिला ही नहीं। तुम में से कुछ लोग तैयार हो जायें, दौरा

करें। ऐसा होवे कि बार-बार लोग जाते रहें और पहुँचते रहें, ख़यालात को तरोताज़ा करते रहें, अपनी बिजली भरते रहें। यह तरीक़ा मुसल्सल किया जावे। ना उम्मीदी का ख़याल क़तई हटा दिया जावे। इसलिये कि यह वाक़ई होता है।

27-4-47

हज़रत क़िब्ला: इस वक़्त एक तवज्जह अज़ीज़म पण्डित **रामेश्वर प्रशाद** जी के **गुदा चक्र** पर खुलने के लिये दी गई। यह आख़री मक़ाम है जो हमारे यहाँ बहुत बाद में खोला जाता है। इस के खुलने में तीन यौम लगेंगे। Precaution यह है कि तीन यौम तक हल्की ग़िजा खावे। और मुत्वातिर तीन रोज़ तक आता रहे। **कुण्डिलिनी शक्ति** इस की जाग चुकी है। अब इस पर नम्बर है।

S.V.: Duties are coming to him of most important nature.

30-4-47
(वक़्त 9.15 pm)

हज़रत क़िब्ला: मुज़्दाबाद! अज़ीज़म पण्डित **रामेश्वर प्रशाद** का **गणेश** चक्र कुलियतन् जाग उठा है। मैं ने आज **स्वाधिष्ठान** भी ले लिया है। कल तक यह भी असली हालत पर आजावेगा।

1-5-47
(वक़्त 9 pm)

हज़रत क़िब्ला: बड़ी ख़ुशी का मक़ाम है कि आज अज़ीज़ीम पण्डित **रामेश्वर प्रशाद** जी का **स्वाधिष्ठान चक्र** भी जाग उठा। Power में कोई कमी नहीं है। **गुदा चक्र** का मक़ाम कुलियतन् खुल चुका है मगर इस पर चन्द तवज्जह और देना पडेंगी। उस को अब दर हक़ीकत यही करना बाक़ी है कि अहकामे ईज़्दी में मसरूफ़ हो जाये। जो कुछ उस को मिले और अपने **मिशन** की बहबूदी और भाईयों की फ़लाह में मसरूफ़ रहे। अब उस का यही काम है और आयंदा तरक़्क़ी इसी में है। मैं उस पर पूजा की पाबंदी लाज़मी नहीं समझता। जी चाहे करे और जी चाहे न करे। उस के लिये दर हक़ीक़त ऊपर के अहकाम की तामील ही पूजा है। मेरी औलाद में चन्द ऐसे शख़्स और बन जाते और यकजहत रहते तो कहिये क्या **मिशन** घिसटता हुवा नज़र आता। रीढ़ की हड्डियों की ताक़त कुछ खुलना बाक़ी है। यह **रामचन्द्र** रफ़्ता-रफ़्ता खोलेगा। यह ताक़तें हैं जो हर एक शख़्स को दी नहीं जातीं। इस की तालीम का तरीक़ा बस उस को मालूम है। और मैं ने उस को उस की आख़री हालत पर यहाँ की तामील कर के तकमील किया है। वैसे तो भाई, रूहानियत की इन्तहा नहीं और रीढ़ की ताक़तों से इस का कुछ सरोकार भी नहीं। हाँ, हिस्सा ज़रूर है। उस के दिमाग़ के कुल मक़ामात खुल चुके हैं। **क़ुद्स (अव्यक्त गति)** अब नज़दीक है। मगर इस के बाद फिर बेशुमार मक़ामात हैं। जिन की इन्तहा नहीं। और वो **centre** के क़रीब पहुँचने पर ख़त्म होते हैं। इस का तरीक़ा वाक़ई अछूता है, जो

इस पर अनुभव के ज़रिये से उतरा है। और अज़ीज़मन अगर उस का हिसाब लगाया जाये तो **दूसरे सर्कल** की हालत पर पहुँचते हो। इस के बाद पांच और बाक़ी हैं जिन के cross या तै करने के बाद central region में असल तौर पर पहुँच हो सकती है। अक्सी सूरत में ले जाना और बात है। यहाँ पर ज़िक्र कुलियतन् पहुंचने का है। देखना तुम्हारे कमज़ोर भाई (RC) की सेहत क्या काम करती है। क़ुव्वा जवाब दे चुके हैं। हिम्मत काम करने की बाक़ी है जो उन्हीं क़ुव्वा पर असर कर रही है।

4-5-47

(वक़्त 8.50 pm)

नोटः बड़ी ख़ुशी का मक़ाम है कि बाबू **ईश्वर सहाय** साकिन **लखीमपुर** ने अपनी हिम्मत और मेहनत से विलायते **उलिया (पार ब्रह्माण्ड मन्डल**) में क़दम रख दिया।

25-5-47

श्री कृष्णाजी महाराजः जब कोई चीज़ अमल में आती है तो लाज़मी है कि उस में कट-छँट (काट-छाँट) हो। जो शख़्स के इस मार्ग में रह गये, अपनी ज़िन्दगी का तमाशा देखेंगे। मालूम हो जायेगा कि ज़िन्दगी का मक़सद क्या है। यह चीज़ इस से पेश्तर कभी ईजाद नहीं हुई, न इतने सहल तरीक़ों से इस की पूर्ति की गई। तुम दोनों में क़ल्क़ बहुत है और यह भगती की निशानी है। मैं ने अपनी ज़िन्दगी

में काट छाँट ही की और आख़िर तक करता रहा। मगर तलवार से भी। तुम सिर्फ़ ख़्याली ताक़त से काट छाँट कर रहे हो। देखो कैसी कामयाबी होती है। यह वो घाव है जो कभी पुर नहीं होता। और इस की कोई दवा नहीं। अपने दिल को इस परेशानी से बचालो कि इतनों में इतने रह गये। गिलानी छोड़ दो। होना यही था। एक बात मैं आयन्दा लोगों के लिये बताता हूँ। वो यह है कि जिस के system में नसें इस तरीक़े की खिंची हुई हों और गुत्थियां पड़ गई हों कि वो उन को मिटाना न चाहे, अपने आप को फिर भी बहुत कुछ समझे, अपना ही ज़ोम रहे, वो इस क़ाबिल नहीं कि इस रास्ते में डाला जाये। और किसी को क़ुदरत भी नहीं कि उस को संभाल सके। गरमी दे देना और बात है, मगर ठीक ठाक लाना बहुत मुश्किल है। ऐसे शख़्स* का अन्जाम ख़्वाह कितनी ही कोशिश करे बजुज़ ना-उम्मीदी के कुछ नहीं होता। मेहनत रायगाँ जाती है। अगर किसी शख़्स की मिसाल सामने रखो तो यह बात जल्द समझ में आ सकती है।

26-5-47

हज़रत क़िब्लाः तुम ग़ल्ताँ व पेचाँ थे कि कोई ऐसी तरकीब मिल जाती कि नफ़्स पर इन्सान जल्द क़ाबू पा जाता। यह ख़याल तुम्हारा कल से गूंज रहा था। चुनाँचे इस वक़्त ईश्वर ने मदद् की और **बाबू ईश्वर सहाय** को वैसी ही तवज्जह दी जो इस मतलब के सिद्ध करने के लायक़ थी। इस क़िस्म की तवज्जह बहुत सफ़ाई के बाद देना चाहिये।

---

*F.N: यह dictation **मदन मोहन लाल** जी के संदर्भ में उतरी है।

पहले उस की ख़ूब सफ़ाई वक़्तन् फवक़्तन् करता रहे। जब ख़ूब सफ़ाई दूसरे तरीक़ों से हो जावे तब तवज्जह इस बात की देना चाहिये कि वो कुल हालत जो रूह के बाद पैवस्त है, शुद्ध हो गई। और उस को काफ़ी ठहराव के साथ तवज्जह देना चाहिये। जब तुम्हारी will इत्मीनान दिला दे कि शुद्ध तवज्जह ने मैदान को साफ़ कर दिया है तब रूह की ताक़त यानी उस की रूह की ताक़त उन हालतों की जगह जो साफ़ की गई हैं, उभार कर भर दे। यह अमल वक़्तन् फ़वक़्तन् करना चाहिये, इसलिये कि इन्सानी फ़ितरत यही है कि कुछ न कुछ करती ही रहे। और इस का नतीजा अगर बिलकुल ईश्वर की तरफ़ नहीं लग गया है तो कुछ न कुछ ख़राबी ज़रूर पैदा करता रहेगा।

S.V.: You have been bestowed with the different inspirations untouched by others in many respects.

(With reference to ideas expressed on page 67 of Raj Yoga by Swami Vivekanandaji)

There is an idea which generally the people or quacks have. They impart spirituality without thinking a bit of his capacity. The disciple is besmeared totally with dark status of humanity and they begin to infuse godly effulgence. The disciple improves by the force they give. It is the force or the power which acts on the object. If you add the power to any object, the ingredients which the objects have, shall develop and it will bring up the disciple with the things he has got. If you

exercise more and more on the things so swelled in, it will acquire the state of solidity with the result that the density contained in it, will grow large. On the contrary if they do the things in correct form taking out the spoiling substance contained in the disciple, the result will be quite glittering. Mode of teaching you can learn from our Lord.

नोटः तारीख़ 7 (सात) जून, वक़्त सह पहर एक बज कर पचास मिनट पर **मुनशी रघुवर दयाल जी** का इन्तक़ाल हुवा।

23-6-47 मक़ाम मथुरा

हज़रत क़िब्लाः मथुरा में बहुत सी ऐसी जगहें हैं जो अब तक discover नहीं हुईं। वो लाइन जिस से कि **श्री कृष्ण जी महाराज** हो कर गये हैं वो वहीं से शुरु हुई है जहां पर कि आप की पैदायश थी। पच्छिम की तरफ़ एक चोर दरवाज़ा ज़िन्दाँख़ाने का था जिस से हो कर आप **गोकुल** लाये गये। जगह मालूम हो सकती है मगर उस की गुज़रगाह अब ऐसी जगह से है जहाँ काफ़ी तबादला हो चुका है। लिहाज़ा वो लाइन अब आम लोगों की निगाह में लाई नहीं जा सकती। फ़क़त इशारा दिया जा सकता है और पैमायशी लकीर भी बनाई जा सकती है। इस का भाई, measurement, ठीक तौर से उस वक़्त हो सकता है जब State मदद् करे। तुम्हारे लिये यह अमर दुश्वार है तुम्हारी (हिन्दुओं की) History भी ग़लत तहरीर की गई। (इशारा **मथुरा** के दरियाफ़्त शुदा मक़ामाते मुक़द्दस से है) किसी ने ख़्वाब के ज़रिये से कोई जगह दरियाफ़्त की और किसी ने महज़ क़लबी इत्मीनान

कर के अपना अन्दाज़ बता दिया। बेशुमार जगहें हैं। इस के लिये अगर रियासत मदद् दे तो चप्पा-चप्पा ज़मीन खोली जा सकती है बल्कि जहाँ पर नक़्शे-पा पड़े हैं वो जगह भी बताई जा सकती है। नक़्शा **गोकुल** का जो उस वक़्त था सब मए हदूद के जो उस वक़्त क़ायम थी बताया जा सकता है। **मथुरा** के हदूद जो उस वक़्त क़ायम थे, बिल्कुल ठीक पैमायशी तौर पर बताये जा सकते हैं। मगर क्या कोई मर्दे मैदान है जो इन बातों को दरियाफ़्त कराने के बाद शाय कर सकता है। क्या इस मेहनत की उजरत कोई देने को तैयार है। अगर ठीक तौर पर हर जगह ठिकाने की और हर मालूमात ज़रूरी मोहइया की जावे तो एक साल से कम न लगेगा, और यह मेहनत चौदह घंटा रोज़ करना पड़ेगी। मैं तुम को कल **गोकुल** में एक जगह बताऊँगा जो ग़लत दरियाफ़्त हुई है।

24-6-47

मक़ाम मथुरा, गोकुल महाबन, टीला, नक़्शा, वक़्त क़रीब 10 बजे सुबह के।

हज़रत क़िब्ला: दोबारा मुझे फिर लिखाने की ज़रूरत हुई। यही जगह है, मन्ज़र देखो। (See map on page 78)

कहीं पर मैं ने कहा है कि गुरु दीक्षा उस वक़्त देना चाहिये जब मक़ामे **उलिया** या **पार ब्रह्म** मण्डल में दख़िल हो गया हो। याँ ज़िम्मा मैं ने ख़ुद ही लिया है। जिस को मुनासिब समझता हूँ, **उलिया** तक किसी सूरत में पहुँचा देता हूँ। वक़्त और स्थान अच्छा है। मैं **नरायन सहाय** को **उलिया** तक अक्सी तौर पर पहुंचा भी चुका हूँ। यह काम मैं ने इस वक़्त किया। मुनासिब है कि तुम्हारी

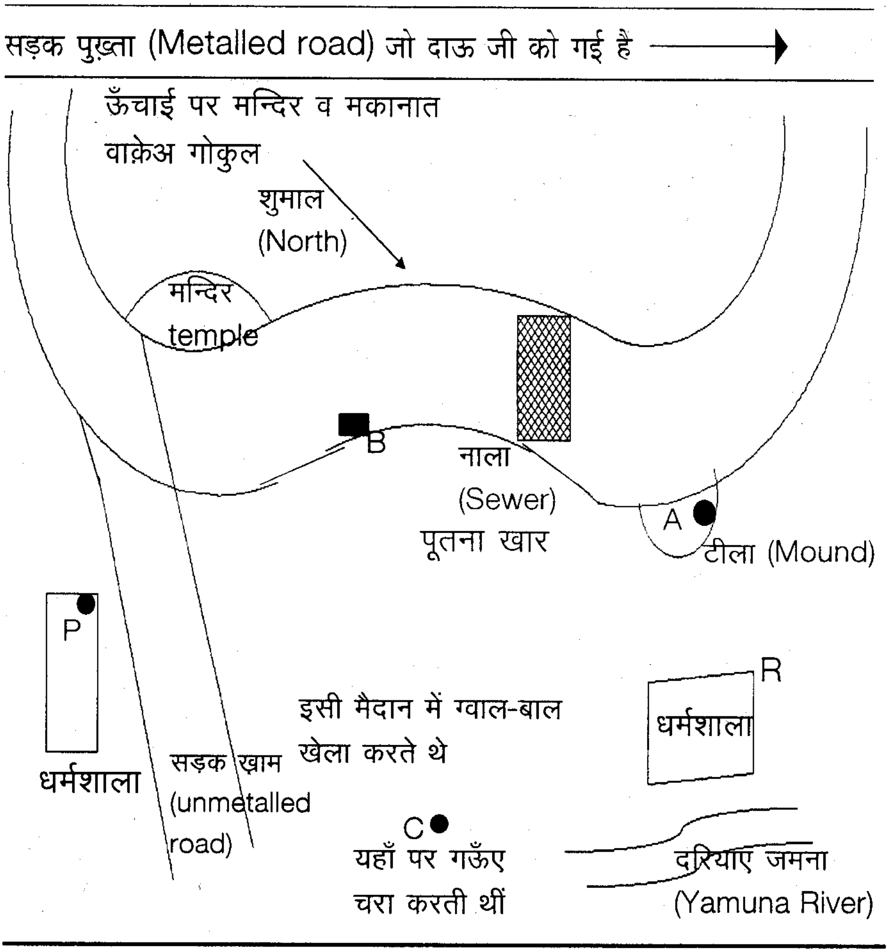

A यहां पर श्री कृष्ण जी गऊएं चराते वक़्त बैठ कर आराम करते थे

B पैदायश के बाद मथुरा से गोकुल आते वक्त यहां पर ठहर कर आराम किया था

C पूतना के मरने का मक़ाम

R से फ़ासला मक़ाम A तक 1 1/2 फ़र्लांग (330 yards)

धर्मशाला के कोने P से फ़ासला मक़ाम B तक 210 क़दम (steps)

बैअत इस जगह से ही start हो जाये और record में आ जाये कि फ़लां मक़ाम पर ऐसा किया गया।

श्री कृष्ण जी महाराज: यह लफ़्ज़ या इबारत जो ऊपर तहरीर है, तुम्हारे **मिशन** की हिस्ट्री में जाना चाहिये।

बजवाब इरशाद किया: मैं जिस वक़्त यहाँ पर बैठता था, जंगल ही जंगल पड़ा हुवा था। **जमना** बिल्कुल क़रीब थी। इस के किनारे कुछ कट गये थे। ख़ाली जंगल था। ज़माने के असरात ने जो कुछ भी कर दिया हो।

नोट: तारीख़ 24 जून, सन् 47 ई० वक़्त क़रीब साढ़े दस बजे दिन के, मक़ाम **गोकुल महाबन** टीला, नक़्शा; **नरायन सहाय** को बैअत किया।

25-6-47

(मक़ाम मथुरा)

हज़रत क़िब्ला: मेरी पैदायशी हालत जो कुछ भी थी, बयाँ कर दी गई। गोया मैं अपना हिस्सा अपने साथ बहुत कुछ लाया था। मुझ में रोशनी ईश्वर विषय की क़ुदरती तौर पर मौजूद थी, जिस ने मुझे इल्मे हक़ीक़त की तरफ़ राग़िब किया। इस रोशनी में जो पैदायशी थी, मराक़िब रहने लगा। बुनियाद मराक़िबे की यहीं से शुरु हुई। Stages पार होने लगे। मुझ को रोशनी बुज़ुर्गों यानी हिन्दु बुज़ुर्गों से मिलती रही। मैं ने जो कुछ किया अपनी जगह पर किया और उस नेमत को

जो मुझ में ख़ुदादाद थी, तरक़्क़ी देता रहा। **हिन्दुस्तान** की अज़मत हमेशा दिल में रही और समझता था कि वाक़ई यह जगह ऐसी है जहां बड़े बड़े महात्मा पैदा हुये। मैं अपने ख़याल से महात्माओं को टटोलता भी रहा। सब से बड़ी हस्ती मुझ को **श्री कृष्ण** की नज़र आई। जिन्होंने मुझ को इस तरफ़ बहुत कुछ रोशनी दी। मैं ने उस में कुछ ईजादें भी कीं और तर्ज़ बदला, मगर मैं उस से आगे नहीं बढ़ा, जिस में कि **हिन्दुस्तान** के महात्मा बढ़ चुके थे यानी वो तरीक़े मल्हूज़ रहे। वहीयाँ मेरे ऊपर नाज़िल होती थीं। इस को फ़ौक़ियत यूं दी गई कि **अरब** में कोई ऐसा शख़्स पैदा नहीं हुवा था।

नोटः दरियाफ़्त शुदा मक़ामात A,B,C नक़्शे में सुर्ख़ी से दिखाये गये हैं।

30-6-47

हज़रत क़िब्लाः मैं यह चाहता हूँ कि हर शख़्स को एक-एक काम दे दिया जावे और वो उस का जिम्मेदार रहे और उस का दिल भी उस को, उसका ज़िम्मेदार ठहराये। मतलब यह है कि वो उस काम की ज़िम्मेदारी अपने दिल से महसूस करे। नई पौध ही जोश के साथ काम कर सकती है। पुराने लोगों को important क़िस्म के काम सुपुर्द किये जावें और godly duties उन को सुपुर्द की जावें यानी जो इस काम के लायक़ हैं। उन को यह चीज़ फ़ौक़ियत के साथ सुपुर्द की जावे मगर साथ ही साथ और ज़रूरी काम भी करते रहें। अफ़सोस, तुम इतने थोड़े रह गये, indifference फ़िर भी दूर न हुई।

ईश्वर न करे कि हमारी आने वाली औलाद में यह बात पैदा हो। मेरा खेल तो बिगड़ चुका। ग़लतियाँ जो कीं, सामने आ गईं। मुरव्वत का ख़मयाज़ा भुगता। तुम लोग गो बहुत थोड़े हो मगर यक़ीन दिलाता हूँ कि अगर सब मिल कर एक हो रहो तो ऐसा कोई काम हो ही नहीं सकता, जो कर न डालो, और फिर ईश्वरी मदद तुम्हारे शामिले हाल है। फ़क़त इरादे की ज़रूरत है ताकि उस में हरकत पैदा हो जाये और अपना काम शुरु कर दे। बहुत कुछ छंट चुके, ईश्वर न करे कि अब इस में से भी छंट जावें। जिस पर कि काम की ज़िम्मेदारी होती है, क़ायदा है कि ज़िम्मेदार बनाने वाला शख़्स को भी बहुत कुछ ऐसा करना पड़ता है कि उस शख़्स की ज़िम्मेदारी निभ जाये। बादशाह अगर कारकरदा आदमी के इख़्तियारात सलब कर ले तो ज़ाहिर है कि यह चीज़ उस के ज़वाल की निशानी बने। इसलिये यह कभी हो नहीं सकता कि ऐसे शख़्स का जिस को क़ुदरत ने ज़िम्मेदार बनाया है अपनी मदद् से उस को मुरस्साअ न रखे। हर हालत में, मैं बेहतर यह ही समझता हूँ कि मिल कर काम किया जावे और ऐसे शख़्स से मदद् ली जावे जिस की रसाई धुर तक हो।

मैं एक नोट आगे आने वालों के लिये छोड़ता हूँ, जो सुर्ख़ी से मोटी क़लम से नोट बुक में लिख दिया जावे ...

बिला पात्र बनाये हुये किसी को ऊँचा न पहुँचा दे। अगर ऊँचा पहुँचना मन्ज़ूर है तो मेहनत करे और मेहनत ले।

तरीक़े दो ही हो सकते हैं कि या तो तालीम कुनन्दा पर अपने आप को ऐसा छोड़ दे कि ज़ैसा मुर्दा ब दस्ते ग़ुस्साल या ख़ुद मेहनत करे, हुक्म निभाने और तवज्जह के लिये अपने को पात्र बनाता चले। दूसरे तरीक़े के लोग मिल सकते हैं। पहले तरीक़े के करने वाले मिलेंगे मगर निहायत थोड़ी तादाद में। इक्का दुक्का। पहला तरीक़ा करने वाले को, सच पूछो तो कुछ करना ही नहीं रह जाता, मगर वो भी हुक्म की पाबन्दी से बरी नहीं होता। यह अमर हर सूरत में लाज़मी है।

हमेशा काम Dictatorship से ही चलेगा, ख़सूसन् रुहानियत का। इससे मेरा मतलब यह है कि अहकामे एज़दी की पाबन्दी कराने के लिये, जिस पर बराहे रास्त अहकाम सादर होते हैं।

4-7-47

S.V.: Some days back I had told you to complete the destruction of **Gaya**. Since you are not going to that place owing to certain disturbances, you should adopt yourself in a way to complete it from this place. Make it a point.

27-7-47

(For B. Ishwar Sahai and others)

हज़रत किब्ला: दुनिया के तल्ख़ तजुर्बों ने मुझ को इस बात पर राग़िब कर दिया कि मैं अपना काम ऐसे लोगों से लूं जो आयन्दा मिशन की ज़िन्दगी बनाने वाले हों और इस से ख़ास दिलचस्पी रखते हों। मेरी

औलाद सब की सब निकम्मी निकली, ब-इस्तस्ना एक दो आदमी। इस में एक हालत में तुम (अज़ीज़ **रामचन्द्र**) भी शामिल हो सकते हो। इसलिये कि मुझ में मुरव्वत बेइन्तहा थी। और तुम ने एक क़दम इस से आगे रखा। ज़माने का लिहाज़ न रखते हुये बहुत सी बातें तुम ने ऐसी कीं जिस का ख़मियाज़ा अब भोगना पड़ रहा है। इक्का दुक्का जो रह गये थे उस में से भी रुख़सत होना शुरु हो गये। दो न सही एक सही। क्या तुम्हारा यह फ़र्ज़ था कि मुझ को बहुत सी बातें करने से रोकते। अगर तुम मुझे न रोकते तो तख़्ता पलट गया होता। मगर क्या तुम्हारे रोकने से यह बात रह गई। होना जो है, होकर रहेगा। तुम ने ऐसी मुरव्वत से काम लिया जो नाज़ेबा थी। बदनामी तुम्हारी भी हुई और सब से पहले मेरी। करना वही पड़ेगा जो हुक्म है। देर कितनी ही लगा दी जावे, आख़िर में नतीजा वही गिरेगा। सच पूछो तो तुम ने क़ुदरत के कामों में दख़ल दिया जो किसी तरह भी मुनासिब न था। ख़ैर सुबह का भूला शाम को आ जावे तो भूला नहीं लिया जाता। मेरा वो ख़ून है कि जिस के एक क़तरे से सैकड़ों ऋषि और महात्मा तैयार हो सकते हैं। यह क़तरा लाइन्तहा है। क्या किसी की यह ताक़त थी कि तुम्हारे लिये ऐसे शब्द इसतेमाल करता जो अगर ख़ुद उस के लिये इस्तेमाल किये जायें तो नागवार गुजरें। सच तो यह है कि शुरु में तुम्हारे सीधेपन न मुझ को तकलीफ़ पहुँचाई और मुझे तहफ़्फ़ुज़ का ज़िम्मेदार होना पड़ा। तुम्हारे ज़ब्त व तहम्मुल (forbearance) ने उन कही बातों के निशाँ मुझ पर बना दिये। क्या हुवा। ले डाला। देखा नतीजा। किये जाओ ज़ब्त, आख़िर नौबत यह हो सकती है कि किसी की मिट्टी ख़राब हो जाये। हो चुकी है, फिर भी गुमाँ नेक तुम्हारा क़ायम है। संस्था चलाने वाले में यह बात नहीं

होना चाहिये। एक हो मगर will से काम करे। कामयाबी हमेशा ऐसे ही होती है। ऐसा शख़्स जिस के इतने मददगार हों और उस की will ख़ाली आवे। यह हो ही नहीं सकता। कोई शख़्स ऐसा नहीं आ रहा है जिस में इतने बुज़ुर्गों की फ़नाईयत नसीब हो। मगर क्या करूँ तुम ने (**रामचन्द्र**) हालते मौजूदा पर आने से पेशतर ही हर चीज़ का ख़ात्मा कर दिया। कमज़ोरी जिस्मानी इस चीज़ के हासिल करने में और भी मददगार हुई। गरमी और हिद्दत तवानाई के लिये ज़रूरी है। इस को मैं ने सूरज वाली गरमी कहा है। इस को भी ठन्ड से तब्दील कर दिया। कैसे तन्दुरुस्ती बढ़े। वरना अगर किसी में यह ताक़त होती, ज़मीं उलट देता। ख़ैर गुज़िश्ता रा सल्वात, आयान्दा रा एहतियात। (अर्थात गुज़री हुई बात को जाने दो, आयन्दा के लिये सावधानी रखो) अब यह करना है कि सब लोग जो इस के शायक़ीन हैं, इस का काम (मिशन का काम) इन की ज़िन्दगी तक कम अज़ कम अपना फ़र्ज़ अव्वली समझ कर चिमट जावें। बनाने में देर लगती है। फिर जहाँ पहिय्या ढुलकने लगा, रथ ख़ुद ब ख़ुद चलने लगता है। इस को oil करना पहिय्यों में ज़रूर होता है। और इस के लिये कोई न कोई हस्ती ज़रूर मिलेगी।

6-8-47 (वक़्त ग्यारह बज कर 30 मिनट दोपहर)

हज़रत क़िब्ला: शुक्र है आज पण्डित **रामेश्वर प्रशाद** को दूसरे सर्कल का कमाल नसीब हुवा।

नोट: यह सर्कल वो हैं जिन का इशारा पीछे कुछ आ चुका है।

नोट: शुक्र है कि बाबू **रामचन्द्र सानी** ने 7 बज कर 5 मिनट

शाम के वक़्त, फ़ना के दायरे में क़दम रख दिया। ईश्वर इस्तक़ामत दे और रोज़ ब रोज़ आगे क़दम बढ़ावे। आमीन।

18-8-47

S.V.: We are having dictation of the Nature after a long interval. Your state should be quite balanced. You need not care whatever it may be - Hindus or Mohammedans. Destruction of the **Punjab** sometimes pinches you. I tell you from this very time to take this work in your own hand and complete the destruction. Only **Mohammedan** elements are not to disappear but the **Hindus**, some of them too, will meet the same fate. You cannot have the world changed unless there are certain elements made to disappear. The world problem is before you and you cannot imagine yet what havoc your will work with in the time coming. After it, work of **Europe** is coming. But let **India** meet the same fate which ultimately **Europe** has to meet. **Foundation in true sense will always be**

Foot Note: **India** got independence on **15-8-1947** from the **British rule**. The function of freedom started at the stroke of midnight on 14th August in the Central Hall of Parliament where **Jawahar Lal Nehru** delivered his famous address "Tryst with Destiny". In July 1947, Indian Independence Act was passed which provided for the partition of India into two Dominions - **India and Pakistan**. With the partition of Bengal, **Punjab** and **Assam** forced transfer of population took place which was sudden, swift and violent and bloody. Forces of disruption were let loose uprooting millions of families leading to loot, murder, arson, abduction and kidnappings about which **Sardar Patel** had said, "the avalanche of the Punjab tragedies had almost swept us off our feet." Here reference about Punjab alludes to this communal holocaust.

laid on the bones. The special powers given to you by **Lord Krishna** in the form of **Chakra** will be the last weapon to complete the destruction but you should not exercise that powerful weapon unless ordered. It is but for bringing about a thorough state of destruction. While working in the **Punjab**, you should not mind Hindus and Mohammedans. I want the repetition of **Noakhali** in the **Punjab**. Your journey to **Karachi** has been stopped for the time being. Your driving rod shall work all over. I do not want the **Bania Government** in **India**. **Gandhiji** is meddling with the affairs. He has done well to improve the lot of **commonalities** as a politician. I am ordering you to stop **Gandhiji** from all his activities but first wait for some time. I do not find a single man in **India**, at present, who can lead the country.

19-8-47

S.V.: The political change is again necessary in **India**. We have to overthrow the **British Government*** totally. We have to meet the disturbances*** (See F.N. on page 87). **Agastha Muni** is already working. Since you delayed in ordering him, I have ordered him directly. Care should be taken in future and order must not be delayed. He will announce you the result and may consult you. A part of your programme should go to **Pt. Rameshwar Prasad ji.** He will work in

---

Foot note: *The reference, perhaps, is about **Lord Louis Mountbatten** who assumed the charge of Viceroy of India in March 1947 and who was retained as the First Governor General of free India till 20th June, 1948 in view of the declaration of **Mr. Attlee**, the British Prime Minister that it was "the definite intention of the British Government to effect the transference of power to responsible Indian hands by a date not later than June, 1948." **Shri Chakravarty Rajagopalachary** took over from him as the first Indian Governor General of free India on 21st June, 1948.

the **Deccan** for creating panic and disturbances in **Hyderabad**. But look here, the **Hindus**** of that place will be guarded. **Nawab** is to be overthrown.

नोट: 23 अगस्त सन् 47ई० से **पंजाब***** का काम बन्द कर दिया गया।

23-9-47 (10.35 pm)

S.V.: I have come here to witness the important meeting of the **Mission** on which depends the future of the **Sanstha**. I want the machinery of the **Mission** agoing smoothly. Malice I do not want. You should all combine and unite together for the common cause. Make yourself with threads to stay together. Boys! future depends upon you. I started my **Mission** singlehanded and see the result. It has acquired world support. What was the thing under it? Self-confidence. You need not worry yourself that your Mission will not improve. My words at **Rameshwaram** will be true. This time **the emblem** should be as desired. My Master is showering his blessings on you all. Really if your **Mission** improved, it is my success. The Mission dedicated to my Master is a body, now away from spirituality. There may be some improving. This is my **Mission** now. People will know after you. I work in this field only now and many sages do the same.

F.N.: ** **Hyderabad**, the biggest and the richest among the states in India had a population of 85% Hindus.

*** Reference is about the ravages occurred in the wake of the **Partition of India**.

26-9-47 (8.15 AM)

S.V.: Every individual of the **Mission** must feel himself responsible for the work ahead. Controversies should cease. Strictness should be observed. Never mind if you are four or five. Work will be done unitedly.

21-10-47

हज़रत किब्लाः इन्तज़ामी मुआमलात जो मिशन के मुतल्लिक़ हैं उन को संभालने के लिये तुम को इख़्तियार देता हूँ कि जो सज़ा और जज़ा चाहो और तज्वीज़ करो, मुझे मन्ज़ूर होगी। रुहानियत में ने दी है, मैं वापस भी ले सकता हूँ तुम्हारे ज़रा से इशारे पर। लोगों की क़िस्मत तुम्हारे हाथ में है। तुम से अलैहदा हो कर अगर कोई अपना भला चाहे तो मुमकिन नहीं। मैं अपने आप को तुम्हारे हाथ में दे चुका।

24-10-47

S.V.: The upheaval due to the volcanic eruptions brought forth the **Deccan Plateau. It was the first thing in the world which came out of water**. The eruption began firstly on that Plateau. Due to the same upheaval different sorts of earth at points took their proper shapes. The philosophy started on the **Deccan Plateau**. There were upheavals of earth at certain points simultaneously. By and by these developed into the vast expanse of land. I mean to say that the upheaval was first beneath the **Deccan Plateau**. If somebody digs out the plateau itself, he will

find the marks. You were ordered to start the work on the **Deccan Plateau. The second oldest is Egypt.** We are expecting again a volcanic eruption near about **Europe**. Some land will be immersed in the water.

25-10-47

ऋषि जी, बानिए राज योगः यह ठीक है मैं इस का बानी था। मेरे बाद के लोग अरसे तक मुझ से तालीम पाते रहे। इस मक़ाम को पहुँचे हुये लोग शाज़ोनादर होते हैं। जब ईश्वर को कोई ख़ास तबादला पैदा करना मन्ज़ूर होता है तो ऐसे ऋषि और महात्मा पैदा हो जाते हैं। उनकी ज़िन्दगी मुसीबत और उलझन की रहती है, बाद में उन की क़द्र होती है। ईजाद मैं ने की, तहरीर न कर सका। आख़िर में यह एक system हो गया। तुम्हारे साथ आम तौर पर लोग मुख़ाल्फ़त करते हैं या यूं कह लो कि मुताब्क़त कम करते हैं। (क़ुदरत की धार रोकने वाला कोई नहीं) यह बातें निशाँ इस बात का हैं कि तुम्हारी हालत और वाक़यात भी पिछले लोगों से मिलते जुलते हैं। ताज्जुब है। यह बात ईश्वर के ही इख़्तियार में है कि वो जैसा चाहे, ज़रूरत के मुताबिक़ उस को बना देवे। गुरु की क़ाब्लियत ख़ास शर्त है। बिला इस के आवाज़ भी वहां तक नहीं पहुंचती। उस के जाने कितने बन्दे मौजूद हैं।

(बसवाल ख़ुद) किताब अंग्रेजी में, कोई ज़रूरत इस अमर की मालूम नहीं होती कि इस को और ज़्यादा बढ़ाया जावे। जो कुछ

लिखा है, ठीक है। किस की समझ है कि Central Region* जो तुम ने लिखा है, समझ सके। यह राज़ आज तक खोला ही नहीं गया था।

ईश्वर वो वक़्त लावे कि जब इस मक़ाम तक लोग पहुँचें। तब कहीं उन को इस बात की ख़बर हो सकती है। पहुँचना भी आसान है। वहाँ की ख़बर लाना बेहद मुश्किल है। यह वही कर सकेगा जिस ने ज़र्रा-ज़र्रा अपना लय कर डाला हो। मैं महात्मा **रामचन्द्रजी महाराज** के जैसी बुज़ुर्ग हस्ती को धन्यवाद देता हूँ।

(**हज़रत क़िब्ला**: यह ऐसे बुज़ुर्ग ज़बर्दस्त हैं जिन की मिसाल मिलना मुश्किल है। काया पलट इन्हीं ने किया था। अपने सब ज़र्रात ख़याल से बदल दिये थे।)

किताब का हर हिस्सा सही हे। Regions जो क़ायम किये हैं, वाक़ई में असल हैं। इन के बाद जो Regions हैं यानी वो Regions जो इन Regions में शामिल हैं उन की क़िस्में भी बेशुमार हो सकती हैं। **पातंजली** को यह चीज़ें उस के ज़माने में न खुली थीं और उस को ख़बर भी न थी। हवस liberation की ही रही मगर अपने वक़्त में वो न पा सका। देखो जब तक अनुभव शक्ति न खुल जावे, अपनी तहरीर से लोगों को गुमराह न करना चाहिये। ज़माने में रिवाज है कि जो चीज़ जिस के समझ में आई, लिख डाली। समाध्यान बहुत सी लिखी गईं मगर यह क़िस्में किसी में न लिखी गईं।

---

*F.N. अधिक जानकारी के लिये देखें, मिशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक ***राजयोग का दिव्य दर्शन***।

27-10-47

(Self Anubhava verified by S.V.)

In my vision I found out while reading the **Central Region** of the book, that there is something most destructive, besides that mentioned in the **Central Region**, to be found near **Ceylon**, in some part of the **Western Ghats**. The thing as it seems to me is between **Western Ghats** and the seashore, and I am finding it out more in about one-third southern portion of **Western Ghats**. There may be certain other places where things of more important nature may be found. But since I have no concern with it I do not ponder, unless the thing itself comes disclosed to me.

S.V.: Can anyone dare to attempt to research it? I can send you for research work if anybody wants to do. But who will like to extract these things from a handful of bones (RC).

Platinum is found in **India**. It is lacking everywhere. **Gold** is found in abundance in **Assam** but no one has yet researched it. **There is a hidden treasure of such things in India**. **Coal** is in abundance. The hidden treasure you will find mostly in the **Himalayas** and below it for some distance. **Sylhet** is very rich in minerals. Can you dare to say to **Mr. Nehru**, the unbeliever of God. By **Sylhet** I mean all the suburb area. What is now lacking in **India**? Courage. **Pakistan** area (proper) you will find mostly barren for some times more. Trade will fade. They will weep with both hands on their heads. Their condition will be like that of beggars. Supremacy will reign and **India**

will be a dominant country but as long as **Gandhiji** is here in this world, things are not expected to become so. He is adopting the wrong procedure. Let us see now the fate of **Europe**. You will find precious things in **Northern India,** I mean the **Himalayas** and suburbs mostly, and destructive things mostly in **Southern India** to the **East** and **West** of it. If you try to discover it, I can help you. **India is scientist's star**. **Atom Bomb theory was first invented in India by a great sage**. Every scientific explorer in **India** was some **Rishi**. People do not understand the Spiritual Value. (In reply to question by self); Let the destruction be complete. You have come here for the same. This is the chief work for you. Others will build.

The most precious thing **ruby**, rare in the world is at the **N.W. Corner** of **Kashmir** but not in abundance as many other things. **Silver** is everywhere in **India**. There are very many things I can tell you. But they have no value at present except scratching paper with goose's quills.

13-11-47

S.V.: You are deputed for such sacred work of God dissolving everything in the world in the end. As I had told you somewhere, you will be the guiding power for such work and give instructions to somebody to complete the chain. This work is specially given to you. Others will work under your command. Sages will there be but you will be the landmark in the history of spirituality or rather destruction. The man doing this last sort of work, of course will be swimming in the **Central Region** and that will be the personality next to you.

22-11-47

हज़रत क़िब्लाः नारद एक ऋषि थे गाते-गाते और अभ्यास करते-करते प्रेममय हो गये थे। इस का ताल्लुक़ बहुत कुछ अन्दरूनी आवाज़ से भी रहा। इस में उन्होंने फ़नाइयत हासिल कर ली थी और अपना दायरा उसी के अन्दर वसीअ कर लिया था। ख़्वाहिशात रुख़सत हो गई थीं। उनको अरसा लगा था। उन की पहुंच बस उस मक़ाम तक थी और फैलाव भी था जिस को **Heart Region** की बहुत नीचे से कुछ ज़्यादा हालत कह सकते हैं। लिहाज़ा तुम्हारा यह कहना सही है। "That he was far below the rungs of this ladder." लफ़्ज "far" अगर इस में से हटा दिया जावे तो तर्जुमा सही हो जावेगा। उन की जोला निगाह आख़िरी हिस्सा ladder के कुछ ऊपर थी। यूं कह लो कि पहले और दूसरे डन्डे के बीच में थी।

S.V.: Set up a ladder having rungs, seven or so. **Narad** was whirling round the last portion of the ladder which lies between the two rungs. These rungs complete the whole ladder from top to toe. In my opinion seven rungs will be the list of your explanation. That means for your understanding, he was under the one-seventh part of the ladder.

हज़रत क़िब्लाः तुम्हारी किताब (**Efficacy of Raja Yoga**) का verification **कृष्ण भगवान** ने किया है। सेहत की ज़रूरत नहीं। इबारत सही कर लो।

S.V. : I tell you truth, the books you have written are matchless. It requires the ability of the reader to understand. The **Central Region** has no doubt displayed the secrecy of Nature. I guarantee that nobody knew it before. Remember my remarks for the first book - *Commentary on Ten Commandments of Sahaj Marg*. It is the first book after **Gita**.

8-12-47 (on sick bed)

S.V.: There are so many things in the world that bewitch the people in general and people go about steering like the canoe in the pond or river. Things seem to them so attractive that they do not find leisure to go towards Reality (which is) not so glittering as the things before them. So many actions arising due to the interest created by them in the heart result in different (forms of) miseries or they form layer by layer huge rock quite stormy sufficient to walk on; and so many layers are there because so many lives you have undergone from the very existence of the world. Think of their fate, which they are going to have and still do not want to get themselves aloof to move on to some higher atmosphere. The things which teach them in the end are the difficulties, intricacies and miseries of lives. When these layers begin to lose their capacity by the effect of the miseries, and a man somehow or other gets in touch with the thought of Almighty, and this thing goes on far longer till they are clearified (cleansed) with these layers to a higher degree, then his interest begins to tread on. Now he starts his real career, provided the same attraction may not come in his way. These things are mostly possible and the result is

soon to come, if one gets a Master, capable like **Lalaji.** At this stage, development now begins and the solid layer is of course no more. The Suksham (subtle) one remains present before coming to the standard of liberation. But the difficulty of such a man grows greater in the struggle. He now begins to attract other layer which come in Bhog form. I think your Supreme Master has discussed some when taking your example about the struggle which a liberated soul faces before leaving body. Here the light of Master very often becomes the instrument in saving the thing - the layers entering such a man. Still Nature takes this sort of work from such personality because She knows her own work. The subject lately discussed is short but sufficient. Nobody can realise this condition unless he enters this condition. So, you **Pt. Rameshwar Prasad Misra**, the favourite of my dear, and so to me, really worked at this stage. We were checking the pollution of the matter to go underneath, I mean under the layer. Operation was done a day late. Still no harm done. Deserves congratulations.

22-12-47

S.V.: You have faced calamity. Why? You know it already. Be cautious for the future. To keep company with good persons brings good result. I had warned you when you were going to **Southern India**. But your complete indulgence to the folly proved fatal. Your Master said somewhere in the notes recently, you should follow to the core of the heart. I assure you again that success will dawn. No power on earth can check the success of your **Mission**. Of course time is required. You have

been doing and clearing off the bushes which may be impediment in your future success; and there you are doing with your friend for the cause of **the Mission**.

Lord Krishna is here wishing you success.

हज़रत क़िब्ला: मैं ने सब बातें पहले ही आगाह कर दी थीं। ख़ैर, अब सही।

नोट: यह आदेश **बाबू मदन मोहन लाल** जी के बेजा तथा ग़लत बर्ताव व रुझान के संदर्भ में है।

24-12-47

हज़रत क़िब्ला: लोगों का ख़याल है कि मुझ में रहम बहुत है। यह सही है, मगर जहां पर इन्साफ़ की ज़रूरत है, रहम पास नहीं फटकता। तुम्हारी बीमारी में मैं ही मुआलिज था। साथ ही उस के यह सज़ा थी। सज़ा इन्साफ़न् दी गई। मुआलिज होना, यह अलामत रहम की है। इस के यह मानी नहीं कि मुहब्बत की किसी तरह मुझ में कमी हो गई। सज़ा के मानी यह थे कि जो ग़ुबार कि तुम ने अपनी will से जमा कर लिया था, उस को लाज़मी तौर पर हटाना था। मैं **एक** चाहता हूं और यह भी कि उस के हुक्म के सब ताबे रहें। अगर **वो एक** इस इन्तज़ार में रहे कि दूसरे लोग उस पर हुकमरानी करें तो मेरा मन्शा फ़ौत होता है। इस आदत से तुम को फ़ायदा ज़रूर हुवा, यानी हर शख़्स को तुमने बड़ा ही समझा, ख़्वाह वो रुहानियत में तुम से बल्लियों नीचा क्यों न हो। मगर यह बात उसी वक़्त के लिये ज़रूरी थी, अब नहीं। **स्वामी जी महाराज** ने मुत्वातिर तुम को warnings दीं। मगर

तुम कुछ ऐसे मजबूर थे कि उस की पाबन्दी न कर सके। पिछले Dictation में कहीं पर मैं कह चुका हूं कि मेरी रुहानी औलाद एक दो को छोड़ कर सब निकम्मी निकली। लोगों की अक़ीदतमन्दी मुलाहिज़ा हो कि जिस को मैं अपना लूं, उस पर हुकमरानी करना चाहें। इस बारे में मैं कुछ दिखा चुका हूँ। क्या यह हो सकता है कि जिसे मैं फ़ैज़ देना चाहूं और तुम्हारी मर्ज़ी न हो; यक़ीन रखो कि मेरी तबीयत भी वैसी ही बन जावेगी। और फ़ायदा नहीं उठा सकता। और यह एक तरीक़ा है और उसूले क़ुदरत; जिस से सब मजबूर हैं। सही कहता हूँ। अगर मुहब्बत और उनसियत तुम्हारे दिल में किसी शख़्स की न होती तो यह डांट डपट मुझ को भी इन्तहाई नागवार होती। मेरे एक भी हुक्म की तामील इस बारे में नहीं की गई। और यह ख़तायें तुम्हारे नामाए-ऐमाल में लिखी जा चुकी हैं। फ़क़ीर को मुहब्बत कैसी। जो हुक्म है वही ठीक है। ऐसी-ऐसी ख़तायें तुम ने की हैं कि जिस बात के लिये क़ुदरत का हुक्म हो चुका है, तुम ने चौबीस घंटे उस की मन्शा पूरी नहीं होने दी। क्या यह बात मुनासिब थी? हरगिज़ नहीं। और जिन के साथ यह सुलूक किया है (इशारा **मुन्शी मदन मोहन लाल** से) उन का यह हाल है कि अपना ही हाथ हमेशा बाला रखना चाहा। उन हज़रत का यह ख़याल था कि **रामचन्द्र** को सज्जादा नशीनी क्या मिल गई, वो मेरा महकूम हो गया। यह कभी ज़ाहिर नहीं किया गया कि फलां वास्ते से मुझे फ़लां चीज़ मिली। क्या इस को ख़ुदी नहीं कहते? रौअब गांठने में हमेशा उस्ताद रहे। जिस पर ज़िम्मेदारी होती है वही ख़तावार होता है। क़ुदरत को किसी से उन्सियत नहीं, बल्कि वो किसी शख़्स को अपना औज़ार बना लेती है। यह उसूल बराबर

चला आ रहा है। मुझे उस वक़्त उन सब बातों की सज़ा तुम्हें देना लाज़िम था। मैं कह भी चुका हूँ कि तुम्हारी ख़ता जल्द मुआफ़ नहीं हो सकती। यह भी सुना कि अगर ऐसा शख़्स कम अज़ कम अपने हवास से तुम को surrender कर देता, हालत देख लेते। जितनी जल्दी तुम ने उन के साथ में कीं, इस का ख़याल उन के दिल में क़तई नहीं। यह शराफ़त है? इस की सज़ा उन को मिल चुकी है। Liberation खो चुके। हो नहीं सकती। ख़ैर, बहुत सी बातें हैं, मुख़्तसरन् कह दी गईं। जिस शख़्स को तुम से उन्सियत और मुहब्बत है समझ लो उतनी ही मुहब्बत वो मुझ से कर रहा है। **तुम** से **मैं** मुराद है। कुल Dictation मैं इसी बात पर दूंगा जो तुम्हारी और पण्डित **रामेशर प्रशाद** की कल बातें हो रहीं थीं और **रमा शंकर** भी मौजूद थे। अब तुम अपनी ज़िन्दगी को regulate कर लो। मैं कह चुका हूँ और फिर कहता हूँ, सही और ग़लत से मुझे मतलब नहीं। यह तुम समझ लो क्यों कि तुम्हारे पास जिस्म है और तर्जुबा। वही करूंगा जो कहोगे ख़्वाह कुछ मेरा बिगड़ जावे। अल्फ़ाज़ से अपने हट नहीं सकता। मुझे Brighter World से इतनी मुहब्बत नहीं क्यों कि वहां क़याम तुम्हारा है, बजाये मेरे। हां बाग़ सरसब्ज़ और शदाब ज़रूर देखना चाहता हूँ। अस्नाए बीमारी में जब **मिस्त्रजी** की बीवी के बारे मैं अज़ीज़म पण्डित **रामेशर प्रशाद** ने कुछ अर्ज़ किया था, तुम्हारे दिल में यह ख़याल पैदा हुवा था कि अपने भाई को मैं वो ताक़त दे दूं कि जिस को चाहे liberate कर दे। मैं ने यह बात मन्ज़ूर कर ली और यह चीज़ उस में मौजूद है, मगर हर जगह यह नुस्ख़ा इस्तेमाल किया नहीं जाता; फिर भी इस की मर्ज़ी पर है। तरीक़ा बता दूंगा।

25-12-47

हज़रत क़िब्ला: जिस शख़्स ने अपने आप को कुलियतन् क़ुदरत पर छोड़ दिया, क़ुदरत उस की निगराँ बन गई, यानी उस बड़ी ताक़त की निगाह उस पर जमने लगी। वही switch वाला क़िस्सा पेश हो गया। ज़न्जीर हिली और ऊपर से निदा आई। ऐसी मुहब्बत करने वाले ख़ाल-ख़ाल हैं, और यह चीज़ मुश्किल भी है। इस लिये हम अपने पीर का सहारा लेते हैं और बाज़गश्त करते हुये आख़िर पर यही बात पैदा हो जाती है। बाज़ शख़्स पीर का सहारा क़तन् नहीं छोड़ते। उन में यह कमी ज़रूर बाक़ी रह जाती है। आख़िर में यानी जिस्म छोड़ने के बाद दोनों की कैफ़ियत एक ही हो जाती है। मैं ने आख़िर पर भी यही पहलू लिया था और तुम को भी मैं ने यही नसीहत की थी। सुशक्ति (सुषुप्ति) के स्थान पर जिस वक़्त will का force भर (या पड़)जाता है, क़ुदरत की धार रवाँ हो जाती है।

सवाल पण्डित जी: किसी चीज़ पर will बांधने से भी कभी नहीं होती और बाज़ दफ़ा सिर्फ़ कह दिया और हो गई, वो point कौन सा है और कहां है।

जवाब: यह point* दरियाफ़्त हो चुका है और A और B points के दरमियान है। उस के क़रीब में ही **सुशुक्ति (सुषुप्ति)** का स्थान है। वहां से एक लड़ी दिल में जिस के कि दो टुकड़े कर के नक़्शे में दिखाये गये हैं, दूसरे आधे टुकड़े तक जाती है।

---

*F.N. अधिक जानकारी के लिये देखें, मिशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक ***राजयोग का दिव्य दर्शन***।

दरीं वर्ता कश्ती ख़रोशद हज़ार,

कि पैदा न शुद तख़्ताए बरकिनार।

(**अर्थातः** इस भंवर में हज़ारों कश्तियां बरबाद हो गईं। कितना ही शोर मचाने या प्रयत्न करने पर एक भी तख़्ता (लकड़ी का टुकड़ा) किनारे पर प्रकट नहीं हुवा। **वर्ता** का अर्थ है, मृत्यु का स्थान, ऐसी ज़मीन जहां रास्ता न हो। आम तौर पर भंवर / पानी के चक्कर के बारे में बोलते हैं।)

यह इस मक़ाम को अक्सर हिन्दु वलियों ने **भंवर गुफ़ा** कहा है। उन के ख़याल की परवाज़गी दिमाग़ के हिस्से पर गई है और उस को **भंवर गुफ़ा** मान लिया है। दर हक़ीक़त यह उस का अक्स है। **रामेशर** यह बात मैं समझता हूँ कि अभी तक हल नहीं हुई। अगर एक मक़ाम A कह लिया जावे और दूसरे को B माना जावे और चूंकि इस का छोर नहीं, न आग़ाज़ है, न अन्जाम, तो बताओ कौन किस का अक्स कहा जावेगा।

S.V. : I think you remember the teaching under **Seven Circles** round the heart. They are the divisions with certain curls in the **Central Region**. If you start from the **first circle** and reach the last one, that means you have gained the last point and you come on the landing ground of the Rishis and the liberated souls. What is that? You begin from the heart and end in the **Heart** but reach at the landing ground. Do you not cross all the regions in that way?

29-12-47

हज़रत क़िब्लाः रात एक मसला दरपेश था कि लोगों में सोज़ो-गुदाज़ पैदा क्यों नहीं होता। यह ख़ता तुम्हारी है। अच्छी क़ाबलियत के लोग वाक़ई तौर पर इस ज़माने में कमयाब हैं। बनाना पड़ता है। कुछ उस की क़ाबलियत कुछ अपना will force। लगलगा कर तैयार करना पड़ता है जनाब की क़ाबलियत तो वाक़ई तौर पर जनाब ही तक है। क्या तुम्हें उम्मीद है कि इस हद तक तालीम ग्रहन करने वाला ज़िन्दगी में मिल सकेगा। मेरा अन्दाज़ तो यह है कि जो शख़्स कि सज्जादा नशीन होगा उस में भी ठोंस ठांस करना पड़ेगी। तुम्हारी हालत जो कुछ भी है, समझ लो कि **नेचर** ने अपने काम के लिये बनाई है। इतना काम तुम पर लदा हुवा है कि सच पूछो तो तुम को बात की भी फ़ुर्सत नहीं। बादे ज़िन्दगी यह चीज़ें जो भरी गई हैं, काम देंगी। आप की तवज्जह नफ़ीस इन्तहाई है मगर इस का ख़रीदार कौन! सोज़ो-गुदाज़, यह तरक़्क़ी के निशानात माने जाते हैं। जनाब की तवज्जह अपनी हालत बाज़ात की कैफ़ियत से होती है। इतना गहरा सम्बन्ध क़ायम कर लिया है कि उस से अलैहदा होना ही नहीं जानते। यह मज़ावलत का नतीजा है। अगर मैं और ढील दे देता तो तालीम के नाक़ाबिल होते। इस लिये कि इस निफ़ासत को सिवाये उस के जो निहायत आला तरक़्क़ी पर मौजूद हैं कोई एहसास न करता। फ़ायदा इस से अच्छा वाक़ई नहीं हो सकता और वाक़ई यही तवज्जह है जो काम बनायेगी। मगर भाई, तुम पर ईमान कौन लावेगा, और कौन इस के समझने की क़ाबलियत रखता है। मैं अगर तुम को मजबूर करूँ कि नीचे के मक़ामात से तवज्जह

दिया करो तो वो तकलीफ़ जो आँअज़ीज़ को होती है, मुझ को गवारा नहीं होती। ताहम एक मुश्किल और है कि हर मक़ामात में, हर मसाम में, जैसा कि मैं कह चुका हूँ, मैं ने ज़ात की कैफ़ियत पूरी-पूरी भरी है। यह मेरा फ़र्ज़ भी था। Limitation जिस वक़्त कि मुझ में मौजूद था यानी जब बाहयात था, उस वक़्त की हालत और मौजूदा हालत में ज़मीन और आसमान का फ़र्क़ है। मैं ने आँअज़ीज़ को मौजूदा सूरत में बहुत तवज्जह दी। दिन और रात। और अब भी यही हाल है। लाज़िम है कि वही तरंग होना चाहिये। तुम मुझ में हो, मैं तुम में। फ़र्क नहीं। फिर ऐसी तवज्जह तुम में से क्यों न निकले जो सूरत कि मेरी मौजूद है। सोज़ो-गुदाज़ तरक़्क़ी के लिये आला शै है। मैं अगर तुम को ख़तावार साबित करूं तो कैसे हो सकता है। ख़ैर! **हो सके तो दिल के मक़ाम से तवज्जह दिया करो**। सच मानो, यहां पर जो कैफ़ियत लोगों की तुम्हारी तवज्जह में गुज़रती है, असल है। काम बनाने वाली है, मगर क्या किया जावे, क़दरदान नहीं। एक तुम्हारी तवज्जह अगर एत्क़ाद से ले लेवे तो ऐसी ऊँची कैफ़ियत से आशना हो जाता है जिस को बड़े-बड़े फ़ुक़रा तरसते हैं। यह भी बात है जिस मक़ाम की तवज्जह आँअज़ीज़ देते हैं उस का हर शख़्स अहल नहीं हो सकता; और तुम्हारी ही ऐसी कैफ़ियत है कि इस को बरदाश्त करा देती है। इतने ठण्डे हो चुके हो।

31-12-47

(In reply to Ishwar Sahai's questions)

S.V.: Boys! don't you appreciate the present time? Do you hope in future to get a man like him? I want you to be perfectly calm and at work in the cause of **the Mission**. Love is only remedy.

1948

2 जनवरी, सन् 1948 ई०

हज़रत क़िब्ला: Organization हमेशा उस वक़्त होता है जब कि हर शख़्स चन्द मुतद्दिद उसूलों का पाबन्द रहे। इख़लाक़ी उसूल ऐसे बना लिये जावें कि हर शख़्स पाबन्द रहे। उठक बैठक इस में सब कुछ शामिल है और भाई बात तो यह है कि जिस शख़्स ने असली नियमों की पाबन्दी कर ली वो इस हालत में ख़ुद ब ख़ुद आ जाता है। तुम ने जो Ethics लिखीं हैं, दिल व जाँ से अगर उस की पाबन्दी की जावे तो सब कुछ हल हो जायेगा। मामूली बातें रह जावेंगी जिस में बहुत सी ऐसी हो सकती हैं कि शायद तुम ख़ुद न कह सको क्यों कि वो ज़्यादातर तुम से और बिरादराने सत संगी से ताल्लुक़ रखेंगी। तहज़ीब की बहरहाल हर जगह ज़रूरत है, इस के लिये तुम कुछ बातें ख़ुद क़ायम कर के किसी शख़्स के सुपुर्द कर दो जो वक़्तन् फ़वक़्तन् उन से कहता रहे। यह सब आदाबे पीर पर मबनी होंगी। **हर शख़्स को चाहिये** कि एक आसन मुक़र्रर कर लेवे और जब अपने पीर या बुज़ुर्ग के सामने बैठे तो उसी आसन से बैठे, ख़सूसन् उस वक़्त जब कि सतसंग हो रहा हो। और आसन न बदले। हर शख़्स इन्तज़ार में रहे कि क्या हुक्म होता है। दीगर, **यह बात लाज़मी है** कि अपने बिरादराने मक्तब को बिल्कुल बिरादर समझे और वैसा ही बर्ताव करे। कोशिश करे कि उस की मान्दगी में शरीक हो। ख़िदमत ऐसी ही करे जैसी पीर की करना वाजिब है। जहां तक हो सके ग़मज़दा न रहना चाहिये। अगर ग़म आ भी जावे तो समझ ले कि मौजे-मालिक यही है और उस पर साबिर और

शकिर रहे। इस से तस्कीन हो जावेगी। **भौंड़ी बात सुनना कुफ़्र है।** अगर किसी मजलिस में ऐसी बातें हों जिन का सुनना हक़ीक़तन् रवा नहीं है, उस मजलिस से किनारा कशी इख़्तियार कर ले। **पीर को चाहिये** कि उस की निगाह यकसाँ रहे; बारिश होती रहे और एक दूसरे में तफ़रीक़ न समझे। तकलीफ़ उठावे और ख़िदमत सब की करे; रुहानी व जिस्मानी। (**हज़रत क़िब्ला**: "जो वाक़ई पीर है, उस की हालत यह ख़ास है।") इस मद में जो बिरादराने सतसंगी का आपस में फ़र्ज़ है, बिल्कुल वैसा ही फ़र्ज़ पीर पर भी है, यानी अपने आप को किसी तरह से उन से बड़ा न समझे। अगर कोई उम्दा बात किसी को मिल जावे, फ़ौरन पीर से कह देवे। मुहब्बत ही सब कुछ करा लेती है। यही चीज़ है जो ख़ुद organize हो जाती है। इस रस्सी में सब बन्ध सकते हैं।

मैं चाहता हूँ जो मराक़िबा मैं 18.9.44 के dictate में तहरीर कर चुका हूँ और जिस का ज़िक्र फ़तहगढ़ के भण्डारे सन् 1945 में भी किया जा चुका है उस को हस्ब ज़ैल तरमीम के साथ ज़रूर किया जावे। रोज़ाना।

मराक़िबा मुझ में और सब सतसंगी भाइयों के दिल में गुरु के तवस्सुल से ईश्वरी प्रेम पैदा हो रहा है और श्रद्धा बढ़ रही है। आख़िर में ऐसा ख़याल बांध कर कि यह वाक़ई हो गया, मराक़िबा ख़त्म किया जावे।

यह मराक़िबा शाम को ठीक 9 बजे सब लोग जहाँ-जहाँ हों, वहीं शुरु कर दें और पन्द्रह मिनट तक करें।

नोटः तरमीम बाला **बाबू ईश्वर सहाय** के कहने से की गई। वाक़ई **हज़रत क़िब्ला** का भी यही मन्शा था कि सज्जादा नशीन साहब को centre मान कर चला जावे।

हज़रत क़िब्लाः इस को मैं बहुत ज़रूरी समझता हूँ। बाबू **ईश्वर सहाय** से कह दो कि अपने यहाँ सब को बता दें और **रबिन्द्र नाथ खरे** को भी लिख दें। यह टैप (tap) का बन्द है। बेशुमार फ़ायदे हैं - रुहानी और इख़लाक़ी। कर के देखें। एक नुक़्स है, हर शख़्स तसाहिली में मुब्तिला है। मुहब्बत भी है मगर तसाहिली कुछ करने नहीं देती। कितना बुरा मर्ज़ है।

13-1-48
लख़ीमपुर खीरी

S.V.: Gandhiji is on fast. What for? To bring the condition of **India** on the balance. He is doing his business, you should do yours. Let us see who succeeds. **He will be shot dead**.

हज़रत क़िब्लाः भाई मन। **गांधी** को क्या कहा जावे। लामज़हब कह लो। बनियों से सल्तनत का काम हुवा है? क़ुदरत को यही हिकमत मन्ज़ूर होती जो **गांधी** जी की है तो **कृष्णावतार** क्यों होता। उन को ख़बर नहीं, क़ुदरत क्या चाहती है और न उन में इतनी ताक़त है कि मन्शाए एज़्दी को रोक सकें। आँखें नहीं खुलीं। इतना ज़ुल्म देखा। मन्शा क़ुदरत का ही सही मगर ऐसे ज़ुल्म व

सितम देख कर हर शख़्स का दिल उमंडना चाहिये था। किसी और वजह से मैं यह नहीं कह रहा हूँ बल्कि देखो तो सही। उसूले सोसायटी पर ग़ोर करो, पता चलेगा, कहाँ तक वो सही हैं। दुश्मनी से मेरा मतलब नहीं। यह तो किसी से नहीं होना चाहिये। मगर इस अत्याचार को रफ़ा करना उन का फ़र्ज़ था। दिखा देते कि हम में इतनी ताक़त है। उधर ख़ामोशी हो जाती। इस से क़ुदरत के मन्शा में भी अज़ाफ़ा होता था। ख़ैर, करने दो जो कुछ चाहें। तुम वही करना जो कुछ हुक्म है। ताक़त नहीं **गांधी जी** में जो **हिन्दु सोसायटी** को संभाल सकें और न उन के ऐसे तरीक़े हैं। इस में अगर काम कर सकती है तो वही क़ुदरते कामिला। बिला उस की मर्ज़ी के कुछ नहीं हो सकता। पटख़े जाओ हाथ पैर।

14-1-48

S.V. : You are enoying the same position, I have talked about in the book. Your Guru has established you in his place. It does not mean that you come again and again in this world. The present state of affairs as going on is due to its head in the Brighter World through his (Lalaji's) agency.

15-1-48

S.V.: You are at this stage thinking (of) God beside. You have been pondering over him while repeating Bhajan. There is no necessity of measuring him in the shallow depth of ocean. Of course, it is natural that whenever a man thinks of Him, he thinks

Him at the highest. For you it is not necessary. This is for the child, not for a man of your standard. Your condition, I know of your Guru. You are unaware of it. You should always think you in God. You need not search for the height. Sing again. When you are in search of Centre, you need not go abroad.

17-1-48

श्री कृष्ण जी महाराजः तुम ने यह वाक़या मुझ से उस वक़्त क्यों नहीं पूछा जब हर बात मैं तुम को बता रहा था। तुम्हारे गुरु महाराज भी इस को समझा सकते थे। यह बात ऐसी नहीं है जैसी कि तुम ने पढ़ी है। बात सही है मगर इज़्हार का तरीक़ा दूसरा। अमूमन् देखा गया है कि जब शायर किसी बात को बयान करता है तो ज़्यादातर उस की दिमाग़ी ठोसता काम करती है और वो अपने ख़्यालात को उसी रूप में ले आता है। यह इन्सानी ख़ास्सा है। मैं ने **अर्जुन** पर एक हालत तारी की थी और वो लगभग वही थी जिस को मैं तुम को किसी वक़्त दिखा चुका हूँ। भय तुम को इस लिये पैदा नहीं हुवा कि तुम बल्लियों आगे हो चुके थे। **अर्जुन** को मुझे उस वक़्त उस हालत में लाना था और वहां पर वो करिश्मा दिखाना था जहां पर हर चीज़ आने से पहले हो चुकती है। नज़ारा ख़ोफ़नाक ज़रूर था और उन को उसी हैसियत से दिखाया गया था। यह एक हालत है। इस को उस के देखने की ताब न थी। क्यों? इसलिये कि उस की हालत चका चौंद पन की हो गई थी। मैं ने अपनी पूरी will से इस को खींच दिया था और काफ़ी तौर से उस में फैला दिया था। **यह ग़लत है कि मेरे इतने हाथ पैर हो गये थे। और मुँह से शोले**

निकल रहे थे और उस में शूर वीर जल रहे थे। तुमने कभी ख़याल नहीं किया, इसलिये कि ज़ात के लुत्फ़ व सरूर में मुब्तिला हो। वरना यह हालत तिफ़्ले मक्तब भी पैदा कर सकते हैं। फ़र्क इतना है कि वो उन परमाणुओं और रेज़ों को उभार नहीं सकते। तिफ़्ले मक्तब के लफ़्ज़ से चौंके होंगे। मुराद यह है कि रूहानियत में चलने वाले expert के ज़ेरे साया रहने वाले कैसा कामिल, जैसा कि तुम्हारा गुरु है। एक ज़रा सी निगाह में जिन के यह ताक़त अभ्यासी में मौजूद होती है। देर सवेर का सवाल नहीं। ज़ाहिर है कि अगर यह बात जल्दी पैदा हो जाये तो इस को उसी नाम से मौसूम करेंगे। और बात भी सही है, इसलिये कि हर शख़्स मुब्तदी ही रहा। ऐसे मुबालग़े हिन्दु किताबों में जाने कितने पाये जाते हैं।

तुम लोग इस मक़ाम को **कुबरा** कहते हो। वसीअ मैदान यह है मगर जिस को तुम Mind Region कह रहे हो वो अफ़ज़लतरीं मक़ाम है जिस के आगे ज़ात ही ज़ात शुरू हो जाती है। **पहले हुक्म** सीधा Mind Region पर होता है। वहाँ समझ लो, एक मशीन fit है। उस की हरकत से आटे की तरह, होने वाली चीज़ बाहर आती है और फिर उस का पसारा हो जाता है। जिस मक़ाम पर कि आटा गिरता है और फिर जितना नीचे आता जाता है, फैलता जाता है, यानी उस की चौड़ाई बढ़ती जाती है। जैसे कि पहाड़ पर से अगर पानी फैंका जाये तो उस के दामन पर आ कर उस की चौड़ाई बढ़ जाती है। वहाँ पर यह बात उस से पहले हो चुकती है। लिहाज़ा यह बात जो तुम ने कही थी, Mind Region की नहीं थी।

तुम जो कुछ काम करते हो उस की तहरीक का आग़ाज़ वहीं से होता है। इसलिये कि उस Power से काम कर रहे हो जो Centre के नीचे मबज़ूल होती है यानी होने वाली बात की क़िस्मत बनाना शुरु कर देते हो। Power जितनी बढ़ाते जाओगे, चीज़ ज़हूर में आती जायेगी। इसीलिये मेहनत करने को कहा गया है।

30-1-48 शाहजहाँपुर

नोट: करीब सवा सात बजे शाम को हुक्म मिला कि **गांधी जी*** की शान्ति के लिये meditate किया जावे। **नरायन सहाय**, **हरीहर सहाय** और दो एक असहाब भी शामिल हुये। **नरायन** व **हरी** का एहसास हुवा कि **गांधी** जी की soul उस वक़्त मौज़ूद थी और उन का यह ख़याल सही था।

Footnote: ***Mahatma Gandhi (Mohan Das Karam Chand Gandhi)**, frail in appearance; simple, unassuming and austere to the point of asceticism in his way of life was not happy in the last days of his life. He was in deep agony in the midst of communal hatred and violence. He was shot dead on 30.1.48 at about 5.30 pm in **New Delhi** at his prayer meeting in **Birla House** by **Nathu Ram Vinayak Godse**. Gandhiji was about 78 years of age. **Pt. Nehru** said, "The glory has departed and the sun that warmed and brightened our lives has set, and we shiver in the cold and dark. Yet he would not have feel us this way. When we look into our hearts, we still find the living flames which he lighted and if these living flames exist, there will not be darkness in this land."

31-1-48

नोट: डेढ़ बजे दिन को मुझ को ड्युटी यह दी गई कि **हिन्दुस्तान** में R (rebellion or riots) फैलाओ और इस को बहुत शिद्दत से करने का हुक्म मिला।

31-1-48 9.40 pm

S.V.: God's will is to be obeyed, nobody can go beyond it. What is happening in the world, you need not care. Do your duty assigned for you. You need not worry about the happenings. Stick to work. Really speaking, you are playing the true part of Nature in the field of politics. No change can be made unless one or other is attached to it, I mean the great soul coming for the purpose. That is the law and is confined not only to **India** but to the whole world. There has happened nothing till now.

Boys! are you shocked at the death of **Gandhiji**? You should naturally be, as he was a great man - a politician. World will remember him for his work. And it is now so, why not, all of you end your sorrows. Happenings nobody can stop. That is the law of Nature. Such a great politician, **India** will not see in future, but in his own light he was good at heart and had noble **Itihas.** He has played his part well, no doubt. But when he is not needed, he was called off or he has been snatched away from your midst. He was meddling with our affairs. His ideas were pure, no doubt. But he was not guided by any of such a great soul whom he may have consulted with. Your letter reached him but he did

not mind it at all. Was it not his duty to consult you in the matter? It was not an ordinary one and it was sufficient for him to judge when it was written by the President of some Sanstha. That was due to his stubborn nature. Many things would have been clarified and his future programme would have been made for the work. I would not have hinted him in any way to come in open rebellion, but there were such works capable of being handled by him. I tell you he was called some time before his actual death. That is why his soul is coming to you for peace. Unless he makes up such period he would not be set at the proper place needed for him. He will remain so unless that period finishes. That is why you have not been ordered any further than to give the required peace to the soul. This is the world of **Gandhiji**, he commanded a good deal here, but he has no command over where you are.

There are many things in the note which should not be known publicly, as long as you are alive. Afterwards they will all go to the press. Keep the notes in safe custody. Remove the notes you have been given dictation under the influence of your Bhai Saheb (**Madan Mohan Lal**) to please him. They were at your request to My Lord, Your Guru. I remember a fact that you have taken down in your notes that was what your Master has not told you, or in contrary to his wish. Notes, he has got. That was only your property and that of the representative after you. Nobody is allowed to copy them out and make his own notes. **I want to prepare your representative, but let us see who comes.** Your bodily infirmity obliged me to prepare one for the task. The best suited man can be he who is absorbed in you. Is it

not a fact that from the very beginning you have tried to absorb yourself in the Great Lord? That is not the fact that you had no other business but what was before you. Is there anyone so brave, who comes like you in the field. There is one drawback in you - and we are powerless in that respect - that you have not yet lost the things inherited from your father. If I remove these things from you, you will decidedly go back to the place assigned for you by my Lord. It is possible that some people may get deceived but we are sorry for it. There is a very little veil in you left by your Master. Call it a deceiving veil to others. If it is broken your life will be gone. **It is the thing needed for a great soul like you in (and) me.** My Lord (**Swami Ram Krishna Paramhansa**) has left something which was broken a little before I had gone from this world. My condition was like you in this respect.

नोटः स्वामी जी महाराज ने इस परदे (veil) का अन्दाज़ा बज़रिये अनुभव करा दिया मगर कोई अल्फ़ाज़ नहीं मिलते कि इस को तहरीर में लाया जावे।

Your Guru had a veil like such, but he had power to tear it off. But your Master has kept this key reserved for himself as regards you. Look here. Search out. You seem to be the only soul in your family who tried to have communion (Union) with God. Such a personality always comes from such a dark block, remember. People are foreseeing **Avtar**. Is it there? How can they feel? If they find the air filled with the same force. If they meditate on the point, they will find the germs sufficiently

developed in the air. This is the stage given to you - (confidence) after the long run. **You are the spiritual Master and Avtar** for that. You can do in a second what the people cannot do in a thousand years, if they sit together for the same period. I will tell you nobody is born on the earth who had (leaving your Master) this kind of power; and one thing worth remembering is that if you exercise that power on the medium, he will lose his life. That is the speciality found in Avtars of this kind. No spiritual man can boast of it. You can send a man at once to liberation. Is there anybody who has this kind of courage?

If I open myself, I will accept your discipleship in this respect. I am merged in you. What for? I am running with you. All the great souls, merged, have really (been) speaking the same object. No liberated soul without any cause will do so. Your Master's position is quite a different one. You went in him, he came in you. That is the relation that a great Master must have with his disciple, made to work for himself. If you search deep you will find many Rishis in you, whether they have proclaimed as such or not. You utilise such power and see the result. If you throw such power on oneself, his condition will be like yours own. **But Nature does not want such a great personality in future**; so you have been forbidden by your Master to throw such power (**Avtari Power**) to anyone. I challenge everybody in the respect, **Hari** told you (leaving your Guru).

Have you seen such a Master that whatever he gains in the Brighter World, he transfers it to you? Who has eyes to see such things? They are frogs in the well. Nobody has capacity to understand it. For future, I tell you the same. They are barking like dogs. Really speaking they have nothing substantial in them. They have not yet measured the field abroad. They are like sickly persons who always require a dose. Icy things are before them and are moving in the glassy surface. I used "they" for persons who are not wanted in the Society made by **Lalaji** in his lifetime.

I also say the same for the great Rishis of the world. Nobody is yet born in the world who is prepared for such a kind of teaching which you often think of.

There is one speciality in your Guru, hardly found in anyone else. While swimming in the Utter .... (Ultimate State), he is praying for your spiritual advancement in spite of the fact that he has given all he had reserved for you. He is praying all the time to give you more and more. Is there any love found in anyone? Is there any Master who does such a thing with his disciple? Is there any example on the earth who has done such a thing with his disciple? I think not. While swimming we have been really speaking not the prayer but order. Although it is made in the way suitable. These are correct things brought to note this time. Power and energy fail here.

End of Part 7

Glossary

शब्द	अर्थ
असलियत	वास्तविकता (Reality)
अहमक़	मूर्ख
अहकाम	आदेश (orders)
अलबत्ता	निःसन्देह
अज़ीज़ो अक़ारब	प्रिय मित्र, यार दोस्त
अन्दरूनी	आन्तरिक
आज़मायश करना	परीक्षा / जांच करना
अवाम	जन-सामान्य, आम आदमी
अस्ल जौहर	वास्तविक / मूलतत्व (Real Essence)
आग़ाज़	आरम्भ
आलमे बाला.	परलोक, देव लोक
आयन्दा	भविष्य में
अस्ना	मध्य
अस्नाए सफ़र	यात्रा के मध्य
अमर	विषय
अब्दाल	अनंतकाल तक रहने वाले वो ऋषि जिन के ज़िम्मे सांसारिक कार्य चलाना है।
अज़ीज़	प्रिय (Dear)
अज़ीज़ेमन, अज़ीज़म	मेरे प्रिया (My dear)
अहमियत	महत्व (Importance)
अन्जाम	आख़िर (end), परिणाम
अज़सरेनौ	पुनः, नये सिरे से
आजज़ी	विनीतता
आगाह करना	अवगत करना, सूचित करना

आसार	लक्षण, चिन्ह
अता फ़रमाना	प्रदान करना
अमलन्	(Practically) व्यवहारिक तौर पर
आलमे सुग़रा	पिण्ड देश
अक़ीदा	विश्वास, श्रद्धा, मत, धर्म
अहल होना	पात्र होना, क़ाबिल होना
अन्सर	तत्व (Elements)
अद्ना	तुच्छ
अहाता	परिधि
अहकामे एज़्दी (ईज़्दी)	Godly orders, दैवी आदेश
अक्सी सूरत	प्रतिबिंबित रूप
अज़मत	महानता, श्रेष्ठता
अक़ीदत मन्दी	श्रद्धा, आस्था
आला तरक़्क़ी	श्रेष्ठ प्रगति
आँ - अज़ीज़	वो प्रिय (That my dear) (संबोधित को इज़्ज़त के तौर पर बोलते हैं)
आशना	परिचित
आदाबे पीर	गुरु के प्रति व्यवहार
अलैहदा	पृथक, separate
इन्तिहा	चरम सीमा
इन्तिहाई	अन्तिम, अत्यन्त, परम
इल्तिजा करना	प्रार्थना करना, to request, विनम्र निवेदन
इश्क़े सादिक़	सच्चा प्रेम
इज़ाफ़ा होना	वृद्धि होना
इबारत	लेख, श्रुत लेख, भाषीय विवरण
इन्तज़ाम	व्यवस्था
ईजाद	Invention, आविष्कार

इल्मे बातिन	अन्तर्गत विषयक विद्या, आन्तरिक ज्ञान, वो विद्या जिस से साक्षात्कार हो।
इल्मे लदुनी	Inspired knowledge, वो ज्ञान जो किसी को परमात्मा की तरफ़ से बराहे रास्त बिना गुरु के प्राप्त हो।
इवज़ या एवज़ देना	बदला देना, प्रतिफल
इंकशाफ़ होना	प्रकटन, ज़ाहिर होना
इत्मीनान रखना	सन्तोष (सब्र) रखना, विश्वास रखना
इन्तक़ाल	मृत्यु
इख़्तियारात या अख्तियारात	अधिकार
इस्तिसना	अपवाद
इन्तज़ामी मामलात	Administrative matters, प्रबन्ध कार्य, व्यवस्था संबंधि कार्य
ईमान	धर्म
ईमान लाना	पूर्ण विश्वास लाना
इख़लाक़ी उसूल	आचरण (व्यवहार)संबंधी नियम
इन्सानी ख़ास्सा	Human traits of character, peculiar qualities in a man, मानवीय गुण (स्वभाव, प्रकृति)
इजाज़ते शर्तिया	conditional (provisional) permission to train abhyasis
उक़्दा	समस्या, ग्रंथि
उजरत	क़ीमत
उन्सियत	लगाव
एत्दाल पसंदी	सन्तुलन की चाहत, liking for moderation
एहतियात रखना	सावधानी रखना
एत्क़ाद	दृढ़ विश्वास
क़लबी इत्मीनान	मानसिक / हार्दिक चैन

क़लक़	दु:ख, बेचैनी, आतुर्ता, क्षोभ
क़ुदरत	प्रकृति
क़िब्ला	पूज्य बुज़ुर्ग (गुरु)
करिश्मा	चमत्कार
कोशाँ रहना	प्रयत्नशील रहना
क़रीब	समीप, निकट
क़तई	सम्पूर्णतः, कदापि
कमयाब	दुर्लभ
क़वाअ	शक्तियाँ, इन्द्रियाँ, Potentialities,capacities, powers
क़द्र	सम्मान
क़ाबलियत	योग्यता
क़ुतुब	ध्रुव
क़श्तोख़ून	हत्या और रक्तपात, युद्ध
क़ुदरतन्	Naturally, प्राकृतिक
कामिल होना	पूर्ण, दक्ष होना
कुलियत	पूर्ण, सब, entirely
क़ुव्वते इरादी	इच्छा शक्ति
क़तअन्	Absolutely, नितान्त
कैफ़ियत (कैफ़ियात)	विवरण, अवस्था
कुलियतन्	सर्वथा, in toto
क़तरा	बूंद, drop
क़ायम करना	स्थापित करना
कमसिन	अल्प आयु, innocent, कम उम्र
क़दरते कामिला	सर्व शक्ति संपन्न प्राकृति
किनारा कशी करना	विरक्ति, संबन्ध विच्छेद करना
कुफ़्र	धर्म भ्रष्टता
कारकर्दा आदमी	efficient men, कार्यकर्ता

ख़ुद ब ख़ुद	स्वयमेव
ख़यालात	विचार
ख़िलाफ़े हुक्म	आदेश की आवेहलना (contrary to orders)
ख़ता करना	ग़लती करना, निष्फल होना
ख़्वाहमख़ाह	without rhyme or reason, नाचार, ज़बरदस्ती
ख़ुलूस	निष्कपटता, सादगी, निःस्वार्थता
ख़ालिस हालत	शुद्ध अवस्था
ख़ाक होना	मिट्टी में मिल जाना, मर जाना
ख़ुदादाद	ईश्वर दत्त
ख़िल्त	धातु (वात्, पित्त, कफ़, रक्त आदि)
ख़ाल-ख़ाल	इक्का दुक्का, rare, here and there
ख़सूसन्	विशेषतः
ख़ुदी	अहंता
ख़मयाज़ा	प्रतिकार, पछतावा, बदला
ग़ाफ़िल होना	बेख़बर होना
ग़र्ज़ेकि	तात्पर्य यह कि
गुन्जायश होना	संभावना होना
ग़ल्ताँ व पेचाँ रहना	उधेड़ बुन में रहना, परेशान रहना
ग़ीबत	चुग़ली
गुज़रगाह	मार्ग, पथ
ग़ुबार	धूलि, वैमनस्य
ग़मज़दा	शोकग्रस्त, दुःखित
ग़ैबत	परोक्ष रूप में
गुमाँ	शक, भ्रम, संभावना, ख़याल
गुज़िश्ता रा सल्वात् आयन्दा रा एहतियात	गुज़री हुई बात को जाने दो, आयन्दा के लिये एहतियात करो।
ग़िलाफ़	आवरण, covering

घर बेचिराग होना	उत्तराधिकारी के मर जाने से घर का निर्जन होना
चाक करना	काटना, फाड़ना
जामा पहनाना	वस्त्र पहनाना,
जस्तजू	अन्वेशण, तलाश, खोज
ज़ेबाइश	शोभा, सुन्दरता, श्रंगार
ज़ौम	अभिमान
जवाहिरात	रत्न, मणि
ज़हूर	प्रकटीकरण
ज़ुम्बिश होना	कम्पन, थरथराहट होना
जौलां निगाह	दौड़ का मैदान
जिद्दत तबाअ	नई ईजाद करने वाली (नूतनता) प्रकृति
जाँफ़िशानी	दूसरे के लिये जान देना
ज़ाहिर करना	प्रकट करना, प्रत्यक्ष करना
ज़ात	अस्तित्व, Being
जुम्ला	समस्त, सम्पूर्ण, वाक्य
जौहर	सार तत्व, रत्न, मूलतत्व
जिरबिल्ला	अत्यन्त विरल
ज़ब्त व तहम्मुल	सहनशीलता और सहिष्णुता
ज़वाल	गिरावट, पतन
ज़िन्दाँखाना	prison, (जेल)
तादाद	संख्या
तल्क़ीन करना	उपदेश करना, दीक्षा देना
तरक़्क़ी	प्रगति
तालीम	शिक्षा
तवज्जह देना	प्राणाहुति देना, ध्यान देना
ताल्लुक़	सम्बन्ध

तफ़रिक़ा	अन्तर, विरोध
तावक़्ते कि	समय आने तक, till that time
तर्ज़ व मुआशरत	किसी के साथ मिल जुल कर रहने का ढ़ंग
तब्क़ा	वर्ग, स्थल, region
तरग़ीब देना	प्रलोभन देना
तहरीक	movement, आंदोलन, उत्तेजना, प्रेरणा, सुझाव, प्रस्ताव
तफ़रीक़ दर तफ़रीक़	difference upon difference, पृथकता पर पृथकता
तसलीम व रज़ा	अपने आप को परमत्मा के हवाले करना, उसकी इच्छा पर राज़ी रहना
तालीमी सिलसिला	शिक्ष पद्धति
तसव्वुर करना	कल्पना करना (to imagine)
तामील करना	प्रतिपालन करना
तहक़ीक़ात	जांच पड़ताल
तरोताज़ा	fresh, हरा भरा
तकमील करना	पूर्ण करना
तालीम कुनन्दा	शिक्षक
तलख़ तर्जुबा	कटु अनुभव
तख़्ता पलटना	आबाद जगह का वीरान व बरबाद करना
तहफ़्फ़ुज़	बचाव, हिफ़ाज़त, रक्षा
तवानाई	शक्ति, ज़ोर
तजवीज़ करना	to propose, राय, सोच विचार करना
ताबे	अधीन, बस में
तहज़ीब	संस्कृति
तसकीन	सांतवना, शान्ति
तरमीम	संशोधन, काट छांट

तवस्सुल	आधार, कार्यसिद्धि क लिये किसी को बीच में डालना
तसाहिली	आलस्य, कायरता
तिफ़्ले मक्तब	पाठशाला में पढ़ने वाला बच्चा
दिलदादा	प्रेमी, समर्पित हृदय, आसक्त, मुग्ध
दर हक़ीक़त	वास्तव में
दरियाफ़्त करना	to discover, अन्वेषण/ गवेषण, जांच पड़ताल, खोज लगाना
दुश्वार	कठिन, दुर्गम
दरपेश	सामने, प्रत्यक्ष
दलील	arguments, तर्क, युक्ति
दर बदर फिरना	द्वारे-द्वारे फिरना
दीदार नसीब होना	दर्शन होना, साक्षात्कार होना
दायरा ए विलायत	मण्डल की परिधि में, in the midst of circle
दिगरगूं होना	विपरीत होना, अस्त व्यस्त होना, उथल पथल
दफ़िया	निवारण, तदारुक
दरियाफ़्त शुदा	खोज किया हुवा (already discovered)
नाज़ेबा	अनुचित
नेमत	प्रसाद, वरदान, दौलत, समपत्ति, अनुकम्पा
नतीजा मतलूब	उद्दिष्ट परिणाम
नक़ल	प्रतिलिपि, अनुकरण, स्वांग, नमूना
निस्बत	संबंध
नागुफ़्ता बै	अकथनीय, शर्मनाक
नुक़्ता ए निगाह	दृष्टिकोण, point of view
नामुकम्मिल	incomplete, अपूर्ण
नुमायाँ होना	प्रकट होना, स्पष्ट, ज़ाहिर होना
नमूदार होना	व्यक्त होना, प्रकट होना

नेमते उज़्मा	महाप्रसाद, बड़ी दौलत, महान समपत्ति
निगहदाश्त	संरक्षण, निगरानी, भरण पोषण
नक़्श	निशान, चिह्न
नफ़्स	मन, sensuality, श्वास, प्राणवायु, अस्तित्व
निस्बत क़रार देना	मंगनी / सगाई होना
नाउम्मीदी	disappointment, निराशा
नक़्शे-पा	पैरों के निशान
नागवार	नापसंद
नामाए ऐमाल	वो पुस्तक जिस में मनुष्य के बुरे भले कर्मों का लेखन हो
निदा	आवाज़
नफ़ीस	सूक्ष्म, उत्तम, पवित्र, सुन्दर
नफ़ासत	सूक्ष्मता, कोमलता, पवित्रता, स्वच्छता
पाये के बुज़ुर्ग	दर्जे के सम्मानित / प्रतिष्ठित लोग
पेश आना	सुन्मुख होना, प्रत्यक्ष होना
पोशीदा	छुपा हुवा
पैदायशी	जन्म से (from birth) प्राकृतिक, जन्मसिद्ध
पेशे नज़र	दृष्टि के सामने
पित्ता मारी	दिल लगाना, मेहनत करना, सख़्ती बरदाश्त करना
पैदाइशे आलम	सृष्टि की उत्पत्ति
पेश्तर	पहले, पूर्व
पैमायश	क्षेत्र माप, survey, क्षेत्र फल
पैवस्त होना	अर्न्तनिहीत होना (merge होना)
पीर	गुरु, सद्गुरु
फ़र्ज़	कर्तव्य, duty
फ़नाईयत	लय होना (mergence)
फ़ैज़	कृपा, Grace

फ़ना होना	लय होना, मृत्यु होना
फ़ख्र होना	गोरवान्वित होना, अभिमान होना
फ़ायक़	प्रमुख, प्रधान
फ़र्दियत	individuality, मानवीय वैयक्तिकता
फ़लाह	हित, कल्याण
फ़ितरत	प्रकृति
फ़र्ज़ अव्वलीन	first and foremost duty, प्रथम कर्तव्य
फ़ोत होना	ख़त्म होना, मृत्यु होना
फ़ुक़रा	सन्यासी, भिक्षुक
बाज गुज़ार	Tributary, taxpayer, feudatory, रैयत one who pays tribute
बाला	ऊपर
बिरादरान	भाई, हम मज़हब
बराहे रास्त	सीधे रास्ते से (directly)
बे अदबी	बदतमीज़ी, गुस्ताख़ी
बेग़रज़	निःस्वार्थ
बरकत	सौभाग्य, विभूति, बढ़ोतरी
बजुज़	सिवाय
बानी-ए-मज़हब	धर्म का संस्थापक
बे इन्तिहा	बेहद, बेअन्दाज़ा
बैअत करना	दीक्षा लेना (to initiate)
बरामद होना	वसूली करना, निकालना
बुनियाद	नींव
बशर्तेकि	इस शर्त के साथ
बहबूदी	भलाई, लाभ
बाज़गश्त	लौटना, वापिस आना
बाहयात	शरीरधारी (alive)

महसूस करना	अनुभव करना
मख़लूक़े ख़ुदा	परमात्मा का बनाया हुवा प्राणी वर्ग, संसार और उस की सब चीज़ें
मुकम्मिल	पूर्ण, सम्पूर्ण
मुक़र्रर	नियुक्त, नियत, निश्चित
मसरूफ़ होना	व्यस्त होना
मुख़ातिब होना	संबोधन करना
मराक़िबा करना	ध्यान करना
मुक़द्दम समझना	मुख्य समझना
मदद्गार	सहायक
मुर्जरिब नुस्ख़ा	प्रभावशाली नुस्ख़ा
मुख़्तसरन्	संक्षेप में
मयस्सर होना	प्राप्त होना
मुल्तवी होना	postponed
मन्शा	इच्छा
मयाना रवी	to follow middle path, एत्दाल पसंदी
मुनव्वर करना	प्रकाशमय करना
मसरूफ़	व्यस्त
मुक़ीम	निवासी
मज़हब	धर्म
मुन्तख़िब करना	to select, वरण।
मशग़ूल	संलग्न (किसी काम में खोया हुवा) busy
मदारिज	श्रेणियाँ (stages)
मिस्कीनी सिफ़्त	ग़रीबी (दरिद्रता) का गुण, सरल स्वभाव
मुरीद	शिष्य
मुरीदैन	(बहुवचन) शिष्य
मुतरादिफ़	पर्यायवाची, समानार्थक
मुमानियत	प्रतिबन्ध, निषेध, वर्जन

मकामे क़ुद्स	पवित्रता का स्थान, अव्यक्त गति का स्थान, region of piety
मुराद को पहुँचना	उद्देश्य/ इच्छा/ अभिप्राय/ अभिलाषा की प्राप्ति
मुस्तफ़ीज़ होना	लाभान्वित होना
महज़	केवल
मरहबा	धन्य, Bravo!, शुभागमन, शाबाश
महरूम होना	वंचित होना
मामूर होना	नियुक्त होना, जिसे आदेश दिया गया हो
मस्कन	निवास स्थान
मख़सूस	विशिष्ट, मुख्य, प्रधान
मुख़्तसिर	संक्षिप्त, संक्षेपतः
माहसल	उपलब्धि
मुन्दरजा ज़ैल	नीचे लिखा हुवा, as given below
मुन्दरजे बाला	ऊपरिलिखित, ऊपर बताया हुवा, above mentioned
मजुमलन्	संक्षेप्तः सार रूप में
मोतरिज़ होना	आपत्ति करना
मक़्सद	लक्ष्य, उद्देश्य
मश्क़/ मश्क़ें	अभ्यास
मौज़ूँ	appropriate, proper, उपयुक्त
मुसलसल	सतत, निरंतर, श्रृंखलित, क्रमागत
मुत्वातिर	लगातार
मुज़्दाबाद	मुबारक हो, ख़ुशख़बरी हो, शुभ सूचना
मन्ज़र	दृष्य
मुहैया करना	उपलब्ध कराना
मल्हूज़	दृष्टिगत, लिहाज़ रखा हुआ, अनुध्येय
मुरव्वत	लिहाज़, शील-संकोच
मुरस्साअ	शृंगारित, भूषित, अलंकृत, रत्नजटित

मुर्दा ब दस्ते ग़ुस्साल	नहलाने वाले के हाथ में शव (जब आदमी मर गया तो जीवित पुरुष जो चाहे उसका हाल करे, वो बेइख़्तियार होता है। बेकस और बेबस के बारे में बोलते हैं।)
मुताब्क़त	समानता, सदृशता
मुआलिज	चिकित्सक
मुज़ावलत	अभ्यास, किसी काम को बराबर करना
मसाम	रोमकूप, pores
मुतअद्दिद्	अनेक, अधिक, कतिपय
मबनी	निर्धारित, निर्भर
मांदगी	शिथिलता, थकन, रोग
मन्शाए एज़दी	प्रभु इच्छा, as ordained by God
मौसूम करना	नामित, नाम रखा गया, name (someone, something)
मुबालग़ा	अत्युक्ति, बढ़ा चढ़ा कर कहना
मब्ज़ूल	ख़र्च किया गया, लगाया गया
यक न शुद दो शुद	one misfortune on the heals of other, एक मुसीबत तो थी ही, दूसरी और पीछे पड़ी
याद्दाश्त	स्मरण शक्ति, अनुस्मारक
यौम	दिन, दिवस
यकजहत	इकट्ठे, united
यकजहती	unanimity, एकता
रम्ज़	रहस्य, secrets
रूहानी	आध्यात्मिक
रसाई	पहुँच
रोज़ बरोज़	दिन प्रतिदिन
राग़िब	आकर्शित, उन्मुख, इच्छुक

रफ़्ता-रफ़्ता	शनैः शनैः, आहिस्ता, आहिस्ता
रायगाँ	व्यर्थ, बेकार, नष्ट
रियाज़त	तपस्या, अभ्यास
रूह	आत्मा
रुझान	रुख़, प्रवृत्ति, रुचि, झुकाव
रुजूअ होना	प्रवृत्त होना, झुकना
रोशन करना	प्रकाशमय करना
राही-ए-मुल्के बक़ा होना	मृत्यु होना
रफ़ा करना	दूर करना
लामुतनाही	अपार, असीम
लाज़मी	आवश्यक, अनिवार्य
लतीफ़	मृदुल, स्वच्छ, पवित्र, पुनीत, सूक्ष्म
लाबुदी	अनिवार्य, inevitable, indispensable
लाज़िम	आवश्यक, उचित
लाज़वाल	अनश्वर, अविनाशी, eternal, everlasting
लुत्फ़	कृपा, आनन्द, उत्तमता
लाइन्तिहा	endless, अनंत
लताफ़ात	सूक्ष्मता
लामज़हब	नास्तिक, अर्धमी
लुत्फ़ोसुरूर	हर्षोउल्लास
सादगी	सरलता, सीधापन, निष्कपटता
सोहबत	संगति, मैत्री, गोष्ठी
सल्तनत	राज्य
सब्र	संतोष, धैर्य
सलब करना	वंचित करना, खींच लेना
सर्फ़ होना	व्यय होना, ख़र्च होना
सादर होना	to issue, जारी होना
सालिक	साधक

सरचश्मा	स्रोत, उद्गम
सिलसिला	क्रम, श्रृंखला
सरज़मीन	क्षेत्र, देश
सज्जादानशीन	उत्तराधिकारी, spiritual representative
सबब	कारण
साकिन	निवासी, स्थिर
सानी	दूसरा (second peer), equal match, द्वितीय, समान, सदृश
सरसब्ज़ व शादाब	ख़ुश व ख़ुर्रम रहना, हरा भरा और सम्पन्न रहना
सज़ा और जज़ा	दण्ड और पुरस्कार
सोज़ोगुदाज़	depth of feeling, ardour, जलना और पिघल कर नर्म होना
सरूरे लाइन्तिहा	limitless bliss, अनन्त आनन्द
शैदाई	प्रेमी
शराफ़ते इन्सानी	मानवीय कुलीनता / सुशीलता / श्रेष्ठता
शरीक होना	शामिल होना
शुरुआत	आरम्भ
शोहदे	debauchee, loafer, scoundrel,tramp, लुच्चा, बदमाश, गुण्डा
शाया करना	छापना, प्रकाशित करना, to publish
शाज़ोनादिर	कभी-कभी, कदाचित ही कहीं
शिद्दत	प्रचंडता, तीव्रता, उग्रता
वाअज़ करना	भाषण देना
वारदात	दुर्घटना
वसीह इल्म	vast knowledge, गूढ़ विद्या
विलायत	मण्डल, राज्य, ऋषि या मुनि का दर्जा
वक़्तन् फ़वक़्तन्	यदा कदा, गाहे गाहे, कभी कभी
वाजिब	उपयुक्त, उचित,यथोचित

हदूद	सीमायें, boundaries
हस्बे ज़ैल	निम्नलिखित, निम्नांकित
हिकमत	बुद्धि, ज्ञान, उपाय
हुकमरानी	शासन
हिद्दत	उष्णता, गरमी, तीव्रता
हिमाक़त	मूर्खता
हुक्मन्	आदेशानुसार
हिजाब	परदा, आवरण, अवगुन्ठन
हारिज होना/ हायल होना	बाधक होना
हज़रत	महाशय, श्रीमान
हज़रत क़िब्ला	गुरु महाराज
हवाला देना	अतापता देना, उदाहरण देना, to give reference
हज़्ज़े नफ़्स	ऐयाशी, कामानन्द,इन्द्रियों का सुख
हालत ग़ैर होना	दशा / अवस्था ख़राब होना
हैरत	आश्चर्य
हमातन	पूर्णतया, पूरे तौर से, entirely, wholly
हिदायत	instruction, निदेश, अनुदेश, दीक्षा
हल्क़ा	परिधि, चक्र, region
हलूल	विलय, विलयन

....